यह किताब खेल बंगाला हिस्से अव्वल कुदातुल्ला खां फरुखा वादी ने बनाया

खेल बंगाला

कपड़े की आड़ से निशाना लगाने की विधि

बंदूक में गोली की जगह पारा भरे और बंदूक के आगे कपड़ा तानो और जिसके चाहो निशाना लगाओ जानवर मर जायगा। कपड़ा पर दाग न आवेगा॥१॥ आक के दूध से हाथ से जो चाहे सो लिखो जब साफ खुश्क होवे तो राख मलो लिखो कुछ मालूम न होगा॥

बगैर रंग व स्याही के रंग बरंग का लिखना

पियाज का अर्क निकाल के सफेद कागज़ पर उस अर्क से लिखे और साये में सुखाले तो लिखा बे मालूम हो जायगा और जब उस कागज को आंच पर गरम करे तो सारे हर्फ जर्द रंग के जाहर हों देखने वालों को बड़ी हैरत होगी कि सादे कागज पर हर्फ कैसे लिख गये॥२॥ नारंगी या नीबू के अर्क से लिखे और सादे में सुखाले जब तेज़ धूप से सामने कागज को गरम करे गर्मी पाकर सब लिखा हुवा बसंती रंग का हो जावेगा॥३॥ गाय के दूध में थोड़ा नौसादर मिलाओ और कागज सफेद पर लिख कर सुखालो जब आग से सकोगे तब सब हर्फ हरे होंगे॥४॥ कलई याने चूने से सफेद कागज पर लिखो या फूल बनाओ और

सालो तो कागज सादा वे लिखा मालूम होगा और पानी ज
व डालो लिखा पढ़ा जायगा ।।५।। गुड़ का शरबत करके सफेद का
गज पर चाहे सो लिखो और ऊपर से काजल या तवे की
कलोंच सूखी सारे कागज पर हर्फों समेत खूब मलो कि सब
कागज खूब काला होजावे फिर एक लकड़ी की तख्ती पर काले
कागज पर रक्खो और ऊपर से कागज पानी के छींटे मारे तो सारा
लिखा स्याही से धुलके सफेद होजायगे और जमीन काली रही
तो हर्फ बहुत खूब सूरत मालूम होंगे ।।५।।

मुतफ़र्कात खेल

जलते चिराग को बुझादो लेकिन उसका फूल बाकी रहे गंधक
कपूर हरताल तीनो चीजों को एक २ मासा लेकर बहुत बारीक
पीस कर पुड़िया में रक्खो और बुझे चिराग के ऊपर चुटकी से ज
रा डालो बुझा चिराग उसी दम रोशन होजायगा ।।२।। नौसादर
को पानी में कपूर घिसकर अपने हाथों में मले और खुश्क कर
ले फिर आग का अंगारा हाथ पर धरले तोभी नहीं जलेगा ।।३।।
शीशे को जलती आग में डालदो जब खूब आग की तरह लाल हो
जावे तब आग से निकाल कर अधरक के अर्क में डालो तो शीशा ऐसा
नर्म होजायगा कि उसको दांतो से चबाय डालो और मुंह में न लगेगा
किसी के सामने चाबो तो बड़ी हैरत होगी कि शीशा मुंह में नहीं ल
गेगा ४ मुर्ग के अंडे में बारीक छेद करके भीतर मे सब मसाला
निकाल डालो और ३ माशे पारा उसके भीतर भरो और छेद

को मोम या आटे से खूब वंद को फिर थोड़ी सुका का यानी रेता गरम जमीन पर डाले ऊपर सेत के अंडा रखदे तो गरमी पाकर वैजा यानी अंडा खूब कूद फांद करैगा फिर लोगों को बड़ा अचरज मालूम होगा ।। देसी नील को वारीक पीस ले फिर रुई के भीतर लपेट के वत्ती वनावे फिर अंजीर की लकड़ी चिराग में डाले और वही वती रोशन करै तो सब घर काला स्याह मालूम होगा ।। ६ ।। सफेद घुंघची को वारीक पीस ले और खड़ाऊं पर लेप करे और खूंटी को उखार के खड़ाऊं को साये में सुखा ले फिर जव तमाशा किया चाहे दोनों पांव धरके खड़ा होकर चले फिर खड़ाऊ वे खूंटी चिपकी रहेगी देखने वालों को ताज्जुब मालूम होगा ७ तीन मासे पारा लेकर गोश्त की पकती देग में डालो तो गोश्त हरगिज न गलैगा चाहे सो मन लकड़ी जलादो तो भी कुछ असर न होगा ।। ८ ।। अंजीर की लकड़ी मेंढक की चरवी लेकर चूल्हे में गाड़ दो फिर उस चूल्हे में कुछ न पक सकेगा चाहे जितनी आंच करो चीज नहीं गलेगी ।। ९ ।। औरत के सिर के वाल मर्द का पुराना कपड़ा दोनो को मंगल की आधी रात को मरघट पर जाकर जलाकर राख करो और पा[illegible] में खिलादो तो दोनों में यानी मर्द औरत में अदावत होजावैगी ।। मगर वाल कपड़ा उन्ही का हो जिनमें वैर कराना हो अजमाया हुवा है वह्रत सही है ।। १० ।। कायफल घिस के उसके अर्क में गेहूं भिगोदे फिर सुखाले अगर कौवे को वही दाने खिलादो तो वे होशी में आवे ।। हीरा हींग पानी में घोल

ल थोड़ा सहद मिलाय लो फिर गेहूं या कोई नाज भीज ने दे फि र छाह मे सुखाले फिर जिस जानवर को चाहे खिलावो वे होश में आजावे ॥ १२ ॥ अगर किसी को विच्छू ने काटा होतो माशे भर चूना लगाकर सुखादे उसीदम अच्छा होजावैगा ॥ १३ ॥ अगर किसी को काले सांपने काटा होतो जल्दी से थोड़ा नी ला थोथा खूब बारीक पीस के आदमी की नाक में पोंगी लगाके फूंक दे तो आराम होजावैगा लेकिन काटे हुवे आध घंटे से जियादा न हो फिर दवा असर न करेगी ॥ १४ ॥ पियाज को कत रके चिराग में डालो तो पतंगे नहीं पास आयेगी ॥ १५ ॥ फि टकरी और काफूर को पीस कर कागज पर लेप करे और क ढाई बना कर हलुवा पकाले कागज नहीं जलेगा कढ़ाई आंच से उंगल भर ऊंचे रहे आंच कायलो का करना चाहिये आग की लौ से कागज जल जायगा ॥ १६ ॥ नौसादर सुहागा संखि या दोनों चीजे महीन पीस कर हाथ के लिखे हर्फों पर मले और धूप में रखे सारे हर्फ उड़कर कोरा कागज रह जायगा ॥ १७ ॥ एक शीशे में नीबू का अर्क भरो और एक कौड़ी जर्द रंग की जलाक र उसकी राख शीशे में भरके मुंह शीशे का खूब मजबूती के साथ हा थ के अंगूठे से बंद करो अर्क उड़जायगा ॥ १८ ॥ शीशे के भीतर कबूतर के परों को खूब ठूंस २ के भरो कि बिल्कुल खाली न रहे फि र मुंह को मोम से बंद करो फिर शीशे को कोठे पर से फेंक दो तो कभी न टूटेगा ॥ १९ ॥ चार मासे हींग को कोरे मुलस में रखके ऊपर से पानी

नी में डाल दो तो साल भर तक नहीं डूबेगा देखने वाले जादू जानेंगे ॥ २१ ॥ मारकीन कपड़े का एक टुकड़ा घीकुवार के दूध में तरकरे फिर साये में सुखालो इसी तरकीब से सात बार भिगाये और सुखालो फिर चाहे आग में डाल दो हरगिज न जलेगा ॥ २२ ॥ इतवार के दिन कौवे की चोंच लावे और धूप वा गूगल की धूनी देकर फिर उसी चोंच से सात लकीरें खींचे जो औरत उसे लांघ जाय उसी वक्त खून हैज जारी हो जायगा जब तक उस खोच को धोकर पानी न पिलाओ बंद नहीं होगा चाहे लुकमान हकीम हो ॥ २३ ॥ चलनी को तीन वार घीगुवार के अर्क में तर करो और तीनो दफ़ा छाह में सुखालो फिर उसमें पानी भरे पानी नीचे न गिरेगा ॥ २४ ॥ नौसादर और अकरकरह मुंह में खूब चवा के थूक दो फिर आग मुंह में रक्खो तो भी मुंह न जलेगा लेकिन आग कपास की लकड़ी की करेलना औ दूसरी लकड़ी की आग से मुह जल जायगा तो छः महीने तो करो रोटी खाने को तरसोगे और किताव बनाने वाले को गालियां दो कर झूठा कहोगे ॥ २५ ॥ धतूरे के सात पते सात काली मिरचे इतवार के रोज पीस कर पिलावे जिसको दिन तीन का वीच देकर चौथे रोज बुखार आता हो जाता रहेगा ॥ ३६ ॥ तालमखाने वारीक पीस कर दूध में डालो तो वे जामन दही जम जायगा ॥ २७ ॥ मेंडे की चरवी सेर की चरवी वीच में दोनों चिराग में वती जलाओ दोनों चिरागों के वीच दो उंगल का फासिला रखे तो दोनों याने

तो आपस में लड़ने लगेगी ॥ २८ ॥ मूली एक और फिटकरी एक मासा शराबी को देने से शराब का नशा बिलकुल उतर जाय गा ॥ २९ ॥ एक मक्खी आधी काली मिर्च दो रत्ती हींग पानी में पीसकर पिलावे सेया तीनो चीजों सूखी पास कर आंख में अंजन लगाने जाने से जाड़े का बुखार जाता रहेगा ३० जो शीशा काटा चाहो तो ऐसे का टो कच्चे सूत की वत्ती ऐसी बनाओ जैसा बंदूक का तोड़ा होता है ॥ फिर शीशे पर तेज चाकू से जैसा काटा चाहो लकीर करो वही बती जलाकर शीशे के नीचे आंच दिखाओ निशान पर से सीसा टूट जायगा ३१ ॥ तूतिया में घिसकर लोहा व सोने व चांदी पर मलो तांबा मालूम होगा खारी नोन से धोने से असली सूरत हो जायगी ३२ अकरकरहा तीन माशे गंधक दो माशे नरगिस की जड़ ४ माशे यह तीनो चीज पानी को जिस जगह छिड़क दोगे चाहे बंगला या दुकान या मकान हो वहां पर मक्खियां न आवेगी दीवार जमीन में सब जगह छिड़कना चाहिये ॥ बड़े मकान में दवा जायद हो ॥ ३३ ॥ जिस जगह मच्छड़ हों वहा पर किसी बड़े मकान के वर्तन में ऐसा थाली वा परात में पानी मुंह लो खूब भरो ऊपर से एक बूंद कड़वा सरसों का तेल बीच पानी डाल के रख दो सवेरे बहुत मरे मच्छड़ पानी में मिलेगे ऐसे ही पाव या साल दिन करो सब मर जायगे ॥ ३४ ॥ काले बिलाव के आंखों के आसुओं से लिखो दिन को कुछ मालूम होगा रात में पढ़ा जायगा ॥ ३५ ॥ एक साफ शीशे में सराब दु आनि भर दो माशे जर्द गंधक उसमें डाल दो और अंधेरे में

मकान में रखदो तो यह मालूम होगा कि शीशा आग से भरा है ॥ ३६ चीनीका टूटा वर्तन जोड़ना ॥ चूना कलई का बहुत बारीक पीस कर मुर्ग के अंडे की सफेदी मिलालो और टूटी चीनी के जोड़ों में भरो और धूप में रखदो बहुत मजबूत जोड़ लगेगा मगर पानी एक बूंद भी न मिलाना ३७ मोम को मीठे तेल में पकाओ फिर पत्थर पर चाहे फूल बनाओ या नाम लिखो तीन रोज तक रहने दो बाद तीन रोज के एस के उम्दा सिरके से धो डालो फिर लिखा हुवा नहीं मिलेगा ॥ ३८ ॥ लोहे के किसी हतियार पर या वर्तन पर जो चाहो सो मोम से गरम कर के लिखो फिर तूतिया को पीस कर डालो फिर उस पानी से औजार को धो डालो लिखा कायम रहेगा ॥ ३६। मेंढक पुराने की चरबी हाथों में मलो फिर हाथ पर आगी का अंगारा रखलो हाथ में आंच न लगेगी ४० जुआर को तीन दिन पानी में भिगोदे फिर एक रात दिन आक के दूध में तर रहने दो फिर एक रात दिन थूहड के दूध में तर रख के साये में यानी छाह में सुखालो जब किसी को खेल दिखाना मंजूर हो तब बीस दाने लेकर मुठी में मजबूत पकरो थोड़ी देर में खीले होजा वेगी ॥ हिदायत ॥ पहले इस छोटी सी किताब के खेलों को आप करके खूब आजमालेना जब खूब महावरा होजावे तब किसी के सामने करना नही तो तरकीब भूलोंगे और झूठ कहोगे यह सब खेल मेरे आजमाये हैं और सही हैं तरकीब में फर्क होने से रु कभी सही न होना फिर हमें लाग देना ॥ शोबदा ॥ गंधक को खरिया मिट्टी के साथ पीस कर यानी पानी में घोल कर किसी दीवार

पर फूल वा लकीरें बनाओ रात को एक लकड़ी के सिरे पर आग लगादो सब लिखा रोशन होजायगा ४२ जिस जानवर को जी चाहे मिट्टी का बनाओ पेट भीतर खाली रखो मुंह में छेद करो जो पेट के सूराख से मिलजाय फिर मेढक खिलौना के पेट में छेद बड़ा सूराख खुला रहने दो फिर उसको खूब बंद करके बस एक मुंह का सूराख खुला रहने दो फिर उस जानवर के आगे गंधक जलादो और उस जानवर के धुआं पहुंचाओ तो जानवर धुआं लगने से उसके पेट में बोलेगा लोग जानेंगे कि मिट्टी का खिलौना जादू के जोर से बोलता है लुत्फ़ यह है कि मेढक की आवाज किसी को समझाऊ न देगी लेकिन तुम मेढक को किसी के सामने न बंद करो खिलौना कुम्हार से बनवालो ।। ४३ ।। एक मोम का तोता बनाओ पेट में ओस भरदो और धूप में रख दो थोड़ी देर बाद ही तोता हवा में उड़ने लगेगा देखने वालों को ताज्जुब मालूम होगा ।। ४४ ।। शेर का पित्ता काले कुत्ते का पित्ता तीनो पित्तो को मिला के सफेद कागज पर लिखो दिन में हरूफ नही मालूम होगे अंधेरी रात में साफ पढ़े जायगे ४५ ।। मकोह के पत्ते सूखे कूट के सिर खर्गोश के खून में गोलियां बनालो फिर एक गोली सूत के डोरे में बांध के पानी में डाले तो हजारों मछलियां उसे खाने को आयेगी फिर जाल डाल के पकड़ लो यह खेल मछली पकड़ने वालों के बड़े मतलब का है ।। ४६ ।। इतवार को थोड़ी मिट्टी उस जगह की लावे जहां गदहा लोटा हो और दस्तर खाने के नीचे रखदो सब खाना खाने वाले ठट्ठा मार मार के

हंसेगे कि खाना खायगा॥ ४७॥ नौसादर नीला तोता दो २ मा
से कागजी नीवू के अर्क में घिसो फिर मोम को ओटा के तलवार
या किसी हतियार पर नाम लिखो ऊपर से वह घिसी हुई चीजें
मोम के लिखे पर लगाओ थोड़ी देर धूप दे दो फिर धो डालो लि
खा हुवा उभर आवेगा अगर हथियार चोरी जावे तो तुम चोर गिरफ्ता
र करा सके हो ४८ चिरचिरा के पेड़ की जड़ हाथ में थाम के जीता
बिच्छू पकड़ हो जहर असर नहीं करेगा॥ ४९॥ कसौटी-
का पत्थर खूब बारीक पीस के चिराग के बत्ती पर बुर्क दो चाहे
जितनी हवा चले चिराग न बुझेगा मगर तेल सरसों का जलाना
५० मर्द की मनी कपड़े में बांध कर जहां पानी के घड़े रखे जाते हैं
एक घड़े के नीचे गाड़ दो तो वह नामर्द हो जावेगा जब निकाल लो फि
र मर्द हो जावेगा मगर मंगल के रोज पुष्य नक्षत्र में गाड़ना॥ ५१॥
मंगल के दिन सूर्य के निकलने से पहले सायल हिरन की खोपरी
लावे और उसमें करेले का बीज रख के जमीन में गाड़ दे और पानी
दिया करे लेकिन परछाईं बचाये रहें जब पेड़ उगेंगे और करेले ल
गे तो उनको तोड़ के छांह में से सुखा ले जब एक करेला डोरे में
पोहि के जिस आदमी के गले में बांधे फौरन हिरन के भेष में आ
जायगा करेला खोल लेने से वही असली सूरत हो जायगी ले
किन करेले के पेड़ पर किसी की साया न पड़ जाय तो सब तासीर
जाती रहेगी फिर करेला सिवाय तरकारी के और किसी के काम
में न आवेगा साये की पूरी रहिफाजत करने से खेल होगा अक्सर

लोगों से नहीं हो सकती है॥

यहांसे दवाइया लिखीजाती

जहांपर सांपने काटाहो उसी काटी जगह पर पेशाव करदो तो जह
र जल जायगा अगर ऐसी जगह काटे कि आप पेशाव न कर सके
तो दूसरे आदमी से कराले॥२॥ दूध थूहर का या आक का जहां
बिच्छू ने काटा हो डंक की जगह पर मले जहर उतर जायगा॥
३॥ करेले के बीज पीसकर मले तो बिच्छू का जहर जाय॥४॥
रसौत १ मासा औरत के दूध में पीस के गर्म करके कान में डालो पीब
बंद होगा और कान में दर्द न होगा॥५॥ लोधको महीन पीस के
भीतर कान में डालो तो पीब बंद होगा और दर्द न होगा॥६॥ जंग
ली कबूतर का ताजा खून भरलो आखो में तो रतौंध जाता रहै
दो बूंद सरसो का तेल डालना कानों में तो दुखती आंखे बंद
होजायगी॥८॥ लिंग बड़ा और मोटा होने की दवाये॥ अकर
करहा एक मासा पियाज का अर्क दस दिरम पांच मांशे दोनों
को खूब घिस के सात दिन लेप करे तो लिंग बड़ा मोटा होजा
जाय॥ मुवाशिरत में लज्जत पाने के नुकशे॥ सुअर की चरवी
सहत खालिस के साथ मिलाके लिंग पर लेप करो दो घड़ी
वाद औरत से सोहवत करो॥ एक काली मिर्च चंदन की लकड़ी
से पत्थर पर घिस्कर लेपकरो फिर सुहब्बत करो लुत्फ आयेगा
और सिर के वाल जो कंघी करने से टूटे हो उनको जलाकर उनकी
राख कर सहत मिलाकर लेपकरो फिर उसी औरत से जि-

ना करोती वह औरत पिछान छोड़ेगी वादजिना के गायके औटे दूध में दारचीनी पीसकर मिलाकर दूध पीलिया करे उमर भर तक ताकत कम न होगी। या सहद रवालिस में दारचीनी मिलाके पीना भी ताकत को कायम रखता है वादजिना के वगला पानकी गिलौरी में लौग दो जावित्री दो रत्ती डाल के रवालो ताकत रहेगी॥ मूसली स्याह कलौंजी स्याह इन तीनों चीजों को पांच पांच तोले लेकर वारीक पीसकर कच्ची शक्कर पन्द्रह तोले मिलाके एक तोला रोज सुवह को खाके ऊपर से गाय का दूध आध सेर पियाकरे खटाई तेल लाल मिर्च वादी चीजों से वचते रहना॥ २१॥

सुजाक की दवा॥ सिरस के वीज एक तोला विनोले की मिंगी १ तोला वकायन के वीज १ तोला इन तीनों चीजों को पीस वगैरह के दूध में मिलाकर वेर की वरावर गोलियां वनालो एक गोली रोज सुवह को खाय ऊपर से पाव भर दूध गाय का पिया करो खट्टी चीजों और ऊपर लिखी चीजों से परहेज करो॥

आधासीसी की दवा॥ कागजी नीवू का अर्क दो वूंद कान में डालो जिधर दर्द होता है उस तर्फ नाक में डाले आराम होगा॥

सिर के वड़े वाल होने के दवा॥ आमला नीवू के अर्क में घिस के रात को वालों में लगाले सवेरे धो डाले सुखाके तेल डाले वाल स्याह वड़े और नर्म होंगे॥ जिस औरत के औलाद न होती हो उसकी दवा॥ असगंध को कूट कर रखे और जिस दिन से हैज सुरु हो उसी दिन से चार मासे हैज वंद ++++++

द् होने तक खाय और खाना भात के सिवा कुछ न खाय फिर नहाय के मर्द के पास जाय तो हमल है॥ खरगोश नर का पिता शराब में मिलाकर और पी लेवे तौभी हमल रह जायगा हमल गर्भ को कहते हैं॥ हमल गिरने की दवा॥ गाजर के बीज कूट आग पर डालकर फुर्ज में धूनी देने से गर्भ उलझ रहा हो सो बाहर आवे मर्द के सिरके सो बाहर आवे॥ गाय का गोबर आटाय के थोड़ा गर्म २ पीले फौरन हमल गिर पड़े॥ मर्द के सिर के बाल या घोड़े के सिर के बाल की धूनी देने से मुर्दा बच्चा बाहर आवेगा साप की केचली का फुर्ज में धुंआ देने से फायदा होता है पहलौटी का किसी का लड़का हो जब उसके दांत गिरें तो दांत लेकर तावीज में रख कर पास रक्खे तो हमल कायम नहीं होगा॥ लेकिन लड़के मुंह से दांत जमीन में गिरने न पावें ऊपर से ऊपर ही ले लेवे॥२०॥ चूहे की मिगनी छः मासे सहद में मिलाकर सात रोज खाय तौ भी हमल करार नहीं पकड़े गा॥

गानेवालों की आवाज़ साफ़ रहने और बड़ी आवाज खुल जाने की दवाइयां॥ हींग २ माशे पानी में घोल के पानी गर्म २ पीलेवे आवाज साफ होजावे गी॥ कुलीजन को मुहमें दाबे रहे तो खुले॥

सड़का यानी हतलस

यह मर्ज उसी का नाम है जिसने लाखों जवानों को जवानी से खो दिया यह मर्ज वही है जो इस किश्ती पर स[illegible] पड़ वा बीच में डूबा दिया इसी मर्ज की बदौलत लाखों आदमी तबाह होगये इस

मर्ज के वायस से लाखों वंदे खुदा जवानी से खोगये आ
ज कल इस आरज़े में दूर हो जाती है वहिस्त नजदीक आज
आती है मनी की जगह से खून आता है इसी तरह से मरीज
घुल २ कर एक दिन मरजाता है इसी मर्ज से भूख प्यास जा
ती रहती है रात को नींद नहीं आती है धात पतली होजाती
है उसी वक्त मरीज अपनी जवानी को याद करके रोती है
किसी ने सचकहा है ॥ शेर ॥ जलक वमूजिव है॥ हरसख्
स की वस ख्वारी की॥ यह हतलस नहीं है इक कहर है
वरीका॥ इस आरजे से हर सखस को आगाह है॥ इसमर्ज
सव मर्जों का किल्वेगाह है॥ लुकमान हकीम इस मर्ज से इ
लाज करने से कानों पर हाथ धरते हैं धन्वतरवैद्य इसीमर्ज को
देखकर इन्कार करते थे॥ यह वहुत इस्वार है इससे वुराकौ
न आजार है इस मर्ज में अक्सर मुजर्रद वशरमदार आदमी गि
रफ़्तार होते हैं॥ लिंग तमाम नाताकत होजाता है तव अफ
सोस कर जान खोते हैं इस आरज़े में सव रगें वेकार हो जाती
हैं और फिर मर्द औरत के काम का नहीं रहता है और तवियत वेजरू
रत मनी को वाहर फेंकने की आदत होजाती है इसी सवव से जो
फ और तपे दिक नौवत होजाती है और मजा कम आने से की
वजह से तवियत मनी का वनाना छोड़ देती है इसी सवव से
कमजोरी होजाती है और खड़ा भी नहीं होता है॥ सवाल॥
यह मर्ज कैसे होजाता है॥ यह मर्ज जवानी में हाथ से ९

ज़कर को हिलाकर या किसी नर्म कपड़े मिस्ल मलमल की थैली से सूराख दार तकिये से या चारपाई के सोरवे के जरिये से किसी औरत का ख्याल करने से मनी को निकालना इसका नाम हतलस है॥ सवाल॥ अगर किसी को यह मर्ज भूल से यानी जब वह इसकी बुराई से आगाह नहीं था होगया तो क्या करे॥ जवाब॥ उसकी तदबीर है कि मरीज को लाज़िम है कि उसी रोज से इस काम को छोड़ दे और अपने लिंग पर सुबह को पानी बासी डाले अगर सिमिट जाय तो इलाज करे और न सिमिटे तो न इलाज करना चाहिये यानी फिर इलाज करना फजूल है॥ इलाज॥ पहले पांच या सात जोंके सिर छोड़ कर लिङ्ग के इर्द गिर्द में लगावे जब उनका आधा पेट भर जाय तो छोड़ाय के लिङ्ग के गिर्द को खूब कपड़े से रगड़ के सहद ख़ालिस और जवान मुर्ग की वीट मिलाकर एक बार सुबह को लेप कर दे टेन्स बचाये रहे और हिले नहीं सात रोज़ यह दवा करे अगर फायदा होय तो यही किये जाय अगर आराम न होय तो ना करे॥ दूसरी तरकीब॥ नाइजे की शरह सफा छोड़ कर चौतरफ़ी लगाकर मरा खून निकलवाके पारा एक माशे काली बकरी की पिंदरी का गूदा मिलाकर मरहम की तरह लगाए॥ तीसरी तरकीब॥ जोकों से खून फिसादी निकलवाके दारचीनी आंवा हल्दी दो दो माशे महीन पीस के ४ माशे सहद मिलाकर लेप करे तीन रोज तक ऊपर से बंगला पान बांधे और खाना हल्वा मुर्ग के अंडा काथा दूध छुहारा और बादी चीजों से परहेज करते रहे॥ इति श्री स्वेल बंगाल

मुल्क रूम में यह बड़ा सौदा गर था डाढ़ी इसकी इतनी बड़ी थी कि नौकर लेकर चलते थे सूरत उसकी यह है॥

शालहोत्र

जिसमें

अश्वों का गुणागुण
आदि जानना अर्था
त ब्राह्मण क्षत्री शूद्र
ज़ाति तथा रंग आदि का
पहिचाना

आगरा धूलियागंज में अहमद
अली के प्रबन्ध से अहम्दी प्रेस में छपा

श्रीगणेशायनमः

अथ शालहोत्र प्रारंभः

अथ घोड़ों का इलाज

दो॰ नमो निरंजन देव गुरु मारतण्ड ब्रह्मण्ड॥ १॥
रोग हरन आनंद करन सुख दायक जगपिंड

श्री महाराजाधिराज गुरु सेंगर बंश नरेश
गुण ग्राहक गुण जनन के जगत विदित कुशलेश॥२

जाको नाम प्रताप को चाहत जगत उदोत
नर नारी सुख मुख है कुशल कुशल गोशगोत ३

चित चातुर चख चातुरी सुख चातर सुख देन।
कवि कोविद बरनत रहत सुख मुख पावत चैन ४

बाजी सो राजी रहै ताजी सुभट समर्थ।
रन सूरे पूरे पुरुष लहहिं कामना अर्थ॥५॥

बालापन ते सरन रहि मैं सुख पायो वृन्द
शालहोत्र मति देखि के बरनत चैतनचंद ६

श्री कुशलेश नरेश हित नित चित चाहलह्यो
अश्व बिनोदी ग्रन्थ यह सार विचार कह्यो।७।

मूल मान शाखा सुमधु पत्र सुमग कर साज
सुवन फूल फलियो सदा कुशलसिंह महाराज ८

अथ शालहोत्र जथा प्रति बर्णनं

दो॰ विजय करन अरु जय करन गावत चारों वेद।

नकुल कहै सहदेव सौं रवि बाहन को भेद ९

बाहन भूसुर को सुरथ क्षत्रिय को हयजान
वैश्य वृषभ बाहन कहे महिषा सूद्र निदान १०

रवि शशि कुल के वंश जो क्षत्री वीर प्रचंड
एक तुरी एक बारि बस विजय करन ब्रह्मण्ड ॥ ११

मारतंड मंडल सकल उपजो जासु प्रकाश
बाहन तें जो तुरंग तें जुगजुग जुगत विलास १२

तेहि बाहन को भेद सब सुनहु सकल सहदेव
प्रभु देही मन जान यह हय देवन को देव । १३

जाको प्रबल प्रचंड बल अमित अनल आकाश
ताको गुण कहं लो कहों जो रवि रथ आकाश १४

भुवि दृढ़ क्रिया और धर्म युत जो क्षत्री जग होय
ताहि भगवती दाहिनी मारन मंडे गोय १५

महा पुनीत पवित्र तन होय तुरी असवार ॥
विजय करै संशय नहीं डारे शत्रु संहारि १६।

जैसे भानु उदोत तें तिमिर लोप ह्वै जाय ॥ ४ ॥
तैसी गाजी मर्द तें शत्रु न रण ठहराय । १७।

गाजी केवल शब्द है मरद सो क्षत्री नाम ॥
जाके प्रबल प्रताप तें जग पावत आराम १८

चारि बरण चाहौ चरण चाहो पुन जस जास ॥
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु सूद्र चरण को दास १९

सहदेवउवाच। अहै अनुज हय प्रवलहै जानत सकलजहान
इन में चारौं बर्ण हैं तिनको करौ बखान।२०
तिनके लक्षण सब कहैं जा विधि जाने जात।।
अरु सबै सामर्थ है होत एक सौ गात।।२१।।
बर्ण २ के भेद सब भिन्न भिन्न कहि देउं।।
केते रण समरत्थ हैं केते पालहिं देउ।२२।
नकुलउवाच जथामति लक्षण बर्णानम्।।२।
दो० ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र बर्ण हय होत।।
लक्षण तें पहिचानियो तिन में अंग उदोत२३

अथ ब्राह्मण बर्ण के लक्षण

सूक्ष्म रूप अनूप छवि महा तेज अधिकार
जाके दर्शन देखते नविन करहि संसार२४
रुचिदाने सौ अति रहे भोजन करै अघाय
तेज न माने तोय को पैठे जल में धाय।२५।
अग्नि पुंज ज्वाला ज्वलित रण के देखे होय
महा सुगंध प्रस्वेद तन जल अचैवे मुखसोय२६
अड पकड़े छाड़ै नहीं डरै न त्रासहि वास।।
ब्राह्मण सो पहिचानिये सरसैं आवे रास।२७।

अथ क्षत्री बर्ण के लक्षण।।

दो० क्षत्री बर्ण विरोध अति मानहि नेक न हारि।।
क्रोध करै संग्राम लखि डारै शत्रु संहारि२८

वारवार धुनि शब्द मुख ललकारे जनु वीर॥
एका एकी और को आवन देत न तीर।२९।
टापै हीं सेबल करै डारै बन्धन तोरि॥ ॥
असवारी प्यारी लगै वाहि न दीजै खोरि ३०
रण देखै प्रचंड हय मन के साथ उड़ै ॥ ॥
अस्त्र चोट मानै नहीं सन्मुख गोद गुडै ३१।
अति सुगंध प्रस्वेद तन आवै लहरि सुवास
चौंके चितवहि सहज ही निनउनमानयखास ३२
मरदानो क्रोधी वड़ो वर्ण ज़ोक्षत्री होय॥ ॥
जाके वल और पौरुषहिं अप्वन लागै कोय ३३

अथ वैश्य वर्ण के लक्षण

सुस्त चुस्तवन तंग कसे रहे सदा आधीन॥
जल्द करै तो जलद है तन वल तें नहिं हीन ३४
इड़ के देखत भीत भय मानै उर अधिकाय॥ ॥
रण कांचौ नाचौ फिरै उतरन तें चलि जाय ३५
अंग मस्वेद प्रस्वेद ज्यौं आवै नाहिं सुवास॥
शुद्ध राह चाहै सदा रुचि सौं दानो घास ३६

अथ शूद्र वर्ण के लक्षण

मलिन बसन सौं सारहै लोटहि थान विशेष
मंद मंद भोजन करै डरपहि पानी देखि ३७
बासें तो सूधो रहै औगुन देय भुलाय॥ ॥

महा सुगंध प्रस्वेद तन रन तें चले पराय ३९

यह लक्षण बहु वर्ण के सब में सब नहिं होत
मिश्रित अंग पहिचानिये तैसे करहिं उदोत ३९

जो एकहि अंग देखिये लीजे नाहि बिचारि ॥
चेतन चंद सचेत करि शाल होत उपचारि ४०

अथ रंग बरण उपचार जथा प्रति

नुकरा हंस स्वरूप अति रजित सेल एक अंग
कुमेत मुस्की सुरंग रंग सुरखा सकल प्रसंग ४१
जपा सोरठा अति हि दृढ़ महा बली बल साषि
पंचा द्रिया की सकल सात होत बल भाषि ४२

तो० छं० एक स्याह अबलख लाल एक समंद सहित विशाल
एक संदली पंजाव इक रिंग है इक सुरखाव
एक समंद सिरंगा रंग एक चालि चौधर अंग ॥
एक सूव पचकल्यान एक सबज नीला जान
दीनार पायक जरद नीलादि नारी सरद ॥
एक रंग गात्रा लाल एक स्याह अबलख खाल
एक तेलिया कुम्मेत एक सेरतप्पल तेज ॥
एक तपल नाजी मंज ॥ पुल वारियां करकंज
एक चंचल चीनी अंग। चतुरंग अंग उतंग ॥ ४३

दो० स्याम करन उच्चैश्रवा वास तुरंग बखानि
अवर रंग मिश्रित बहुत चेतन चंद प्रमान ४४

अथ जन्म घोड़े के विचार फलाफल वर्णनं

दो० प्रथम पहर जो राति के जन्मै घोडी पुत्र ॥ ४५

महा सुफल फल कहत हैं देखत नासै शत्रु ४५

द्वितीय पहर को फल यही निधनी के धन होय

पुत्र नाम वा साल में साल होत्र कहि सोय ४६॥

तृतीय पहर चिंता करैं कछुक दिनन को नाहि ॥

बहुरि स्वरुपी ह्वै के पुरुष सहैरे वेगि उमाहिं। ४७

पहर चतुर्थक फल यही जन्म सुता श्रुति गेह ॥

धन आमहै तासु को सुत फल होय सनेह ४८।

अथ दिन बिचार जामा जाम को

वासर जन्मै पुत्र को सुत फल होय सनेह ॥ ४९॥

प्रथम पहर मध्यम कहत ह्वै रे चित वित नेह ४९

द्वितीय पहर फल अति निधि जाकी घोड़ी होय॥

संकट ताको परिय अति बिरलै जानै कोय। ५०।

तृतीय पहर मध्यम अधम चौथा महा मलीन ॥

दीजै काहू शत्रु को फेरि न बांधै जीन। ५१।

अयन बिचार॥ उत्तरायन शुभ फल कहै दक्षिण मध्यम मान्

ताही में श्रावण विषै महा निषिद्ध बखान। ५२।

अथ घोड़ा के रदन बिचार लक्षण

प्रथम दंत अस फटिक सम वेद होत गुन छीर ॥

बहुरि पीत निडर के भये टूटहिं हैं गंभीर। ५३।

द्वैक भये तासों कहैं ऐसे चार बिचार ॥ ४॥
नेसरि कारे पुंज गति आगे लेहु निहारि।५३।
तरुन रदन स्याही रहै सप्त बर्ष उनमान॥
द्वादश ते स्याही तजे लेहु वृद्धि पहिचान५४
जे असील हैं ठौर के खुरासान मुलतान ॥ ४।
औराकी अरवी कछी दीरघ आयु बखान ५५।
तिन की तेसी आयु है दीर्घ वर्ष प्रमाण॥३६।
बदन २ त्यौं जानियें रदन २ पहिचान। ५६।
सो० अधिक दंत है जासु के बिरलै बिरलै अश्व ॥
करि बित्ता है नास को धनी धाम रहि नाम के ५७

अथ भौंरी बर्णन शुभाशुभ लक्षणम्।

चौ० अथ लक्षण घोड़ा कहौं। जो कछु शालहोत्रमति चहौं
समझै पंडित अरु बुद्धिवंत। यातें धारत चौपई छन्द
रंग वैश्य घोड़ा के अंग ॥ बरनि कहत सब चेतन चन्द
कलह सुठार नयन बड़भारे। थुथरी छोटी अधर हिं कारे
कंठ मिली ग्रीवा अस्थूल। छाती चौड़ी होय समूल
सूधो सूक्ष्म मास न होय। करपद म्रग कैसे शुभ होय
ग्रीवा पूंछ उचास बतावै ॥ कटि लखि चौड़ी पुटी लखावै
छोटे करन स्याम शुभकारे। लम्बोदर कोवा फुलवारे
चासौं चौका आठहु रवंद॥ जो पावै दानै के सो चंद
भूरि भाव नर को तेहि भावै॥ जो घोड़ा याविधि को पावै

खालदार घोड़े का स्वरूप
जिस घोडे पर स्याह खूत पड जांय
उसको बुरा जान लेहैं

वदांतवाले घोड़े इनको पोपल
भी कहते हैं

स्याहतालू घोड़े का स्वरूप
यह अच्छा नहीं होता है

गजदंता घोड़े का स्वरूप
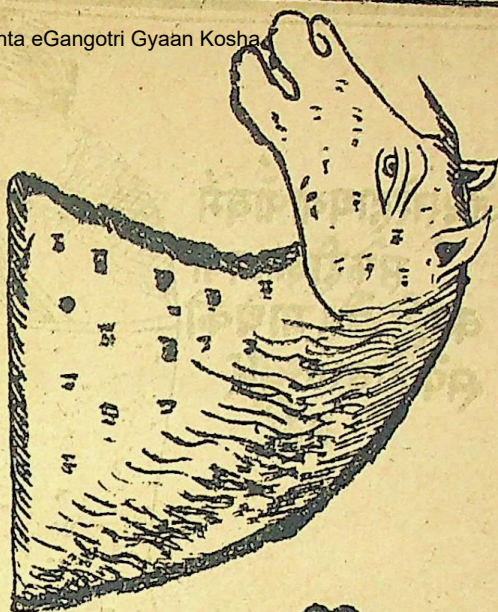
फूलदार घोड़े का
स्वरूप

सिकालघोड़ेकास्वरूप
औरसिकालदुराहै

गामची के पट में
कबरी का निशान
कील का
स्वरूप

कुत्तेकी जीभवालेका निशान

यह सारी जीभ निकाले चलता है

ओदूसरेहाथयापांवमें
सफेदीकाजवा
बनहीं और माथेकी
सफेदीवरातवार
नहीं
अर्जुनघोड़ाबुराहै

रकाब की सांपन का मुंह सवार
की तरफ़ है

जब तक में

पूरा अंदाज़ में

मास्के मुंहपर सफ़ेद घावका निशान
मली की अलामत
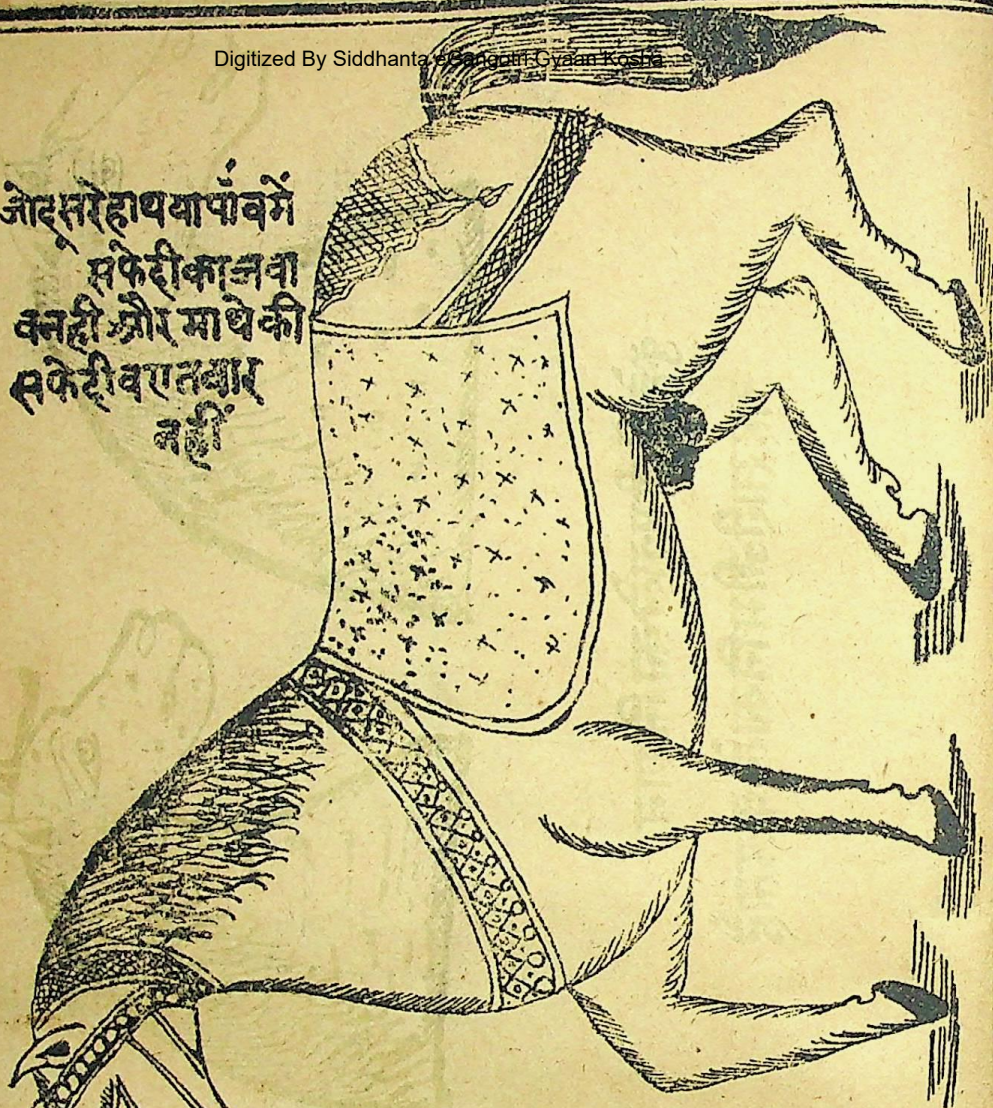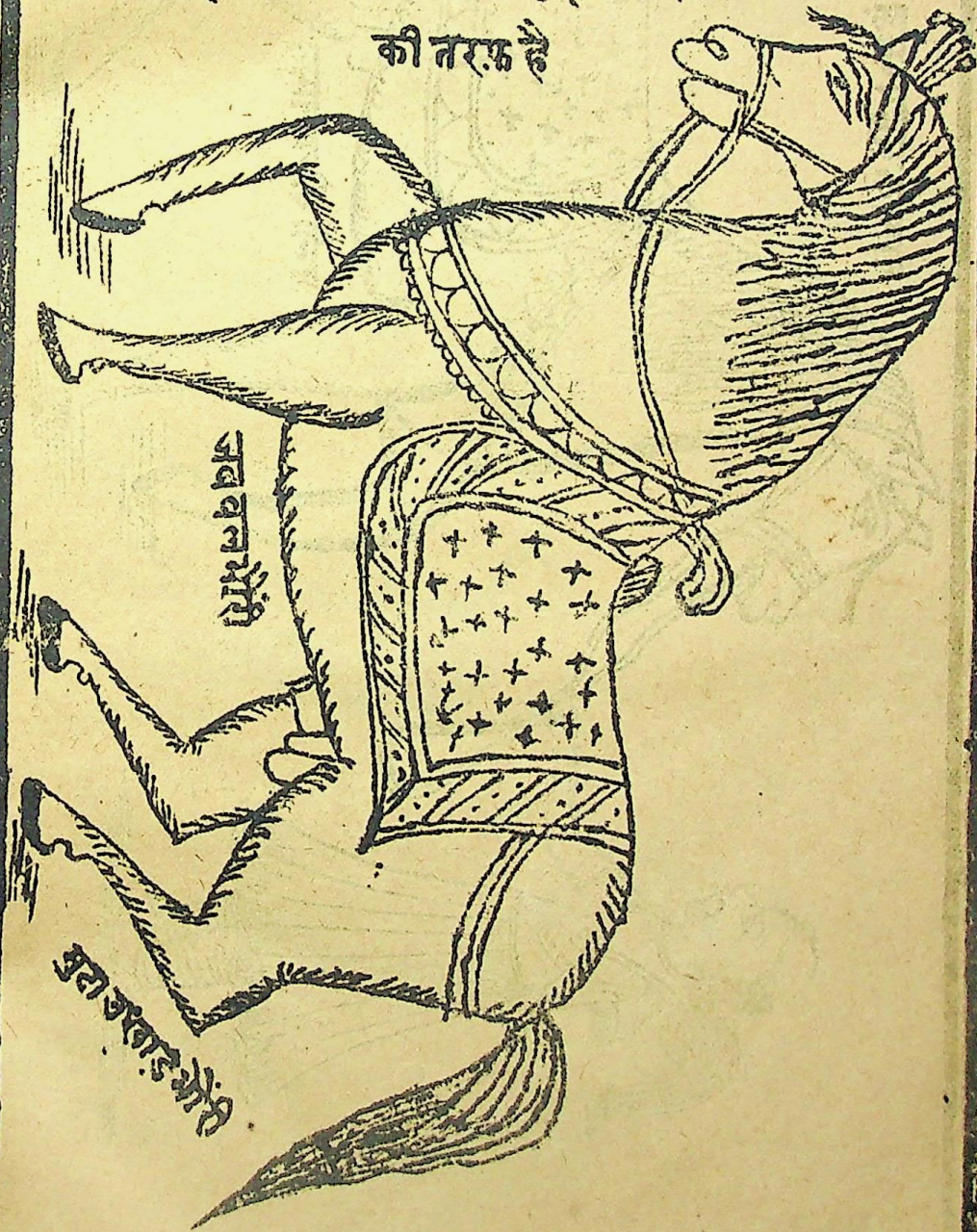
गर्दनफरसींगकाकला
सरवदारसूरत
दूसरी मुरव सरव
का निशान
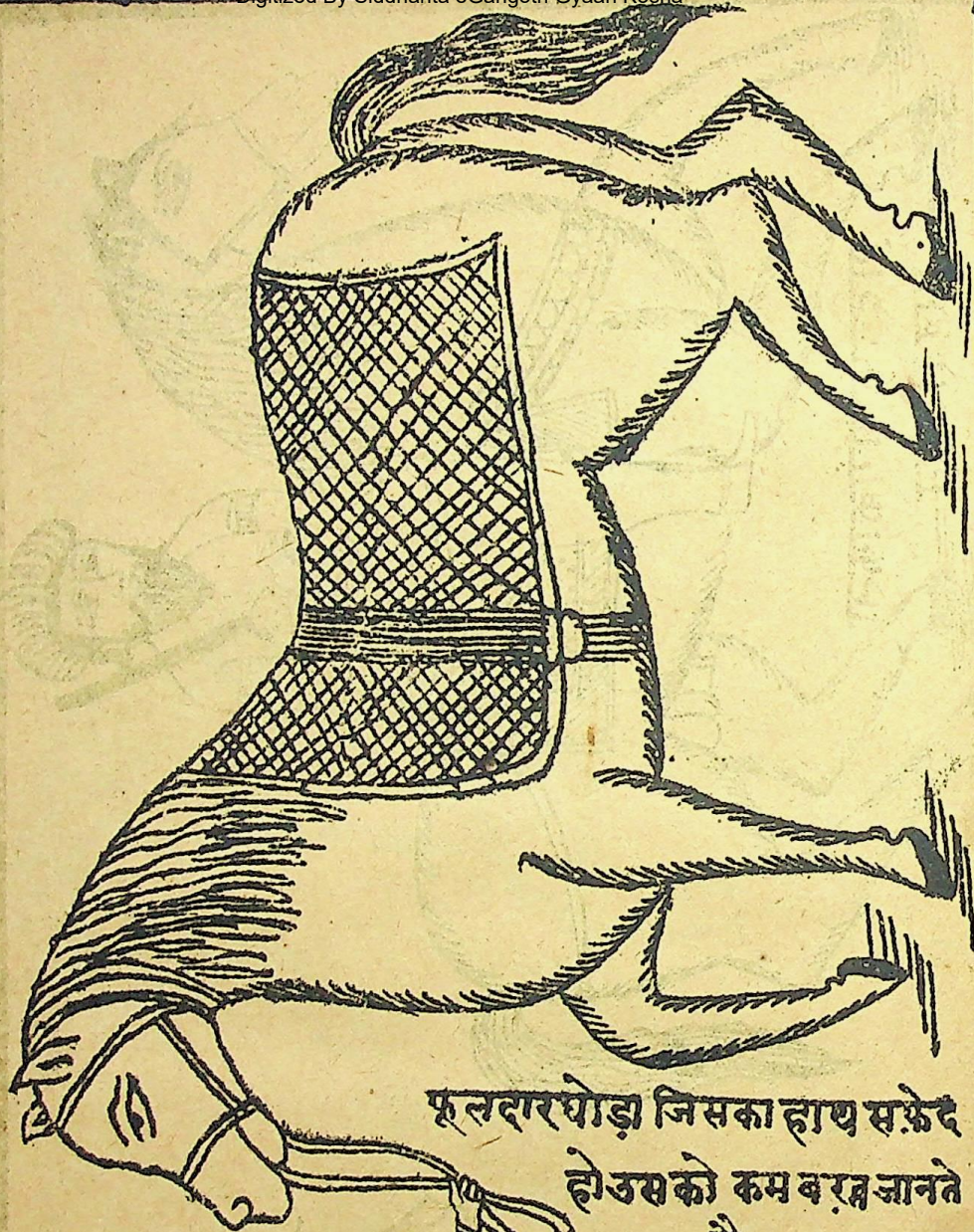
फूलदार घोड़ा जिसका हाथ सफ़ेद हो उसको कम बख़्त जानते हैं

चंपदस्त घोड़े की सवारी
चंपदस्त घोड़े को उस्ताद
बुरा कहते हैं

चंद्रसूर्यकी भौंरियों का निशान

नाका निशान
छत्रभंग का निशान
गले के नीचे की भौंरी
देवमनि और कंठमनिका
निशान
का निशान
फेटकी भौंरीका
निशान
सांखू ढाल

अगला पैर घोड़े का सफ़ेद हो उस को अर्जल कहते हैं
जिसके दोनों पांव सफ़ेद धगन गरू का बंद से ज़दा
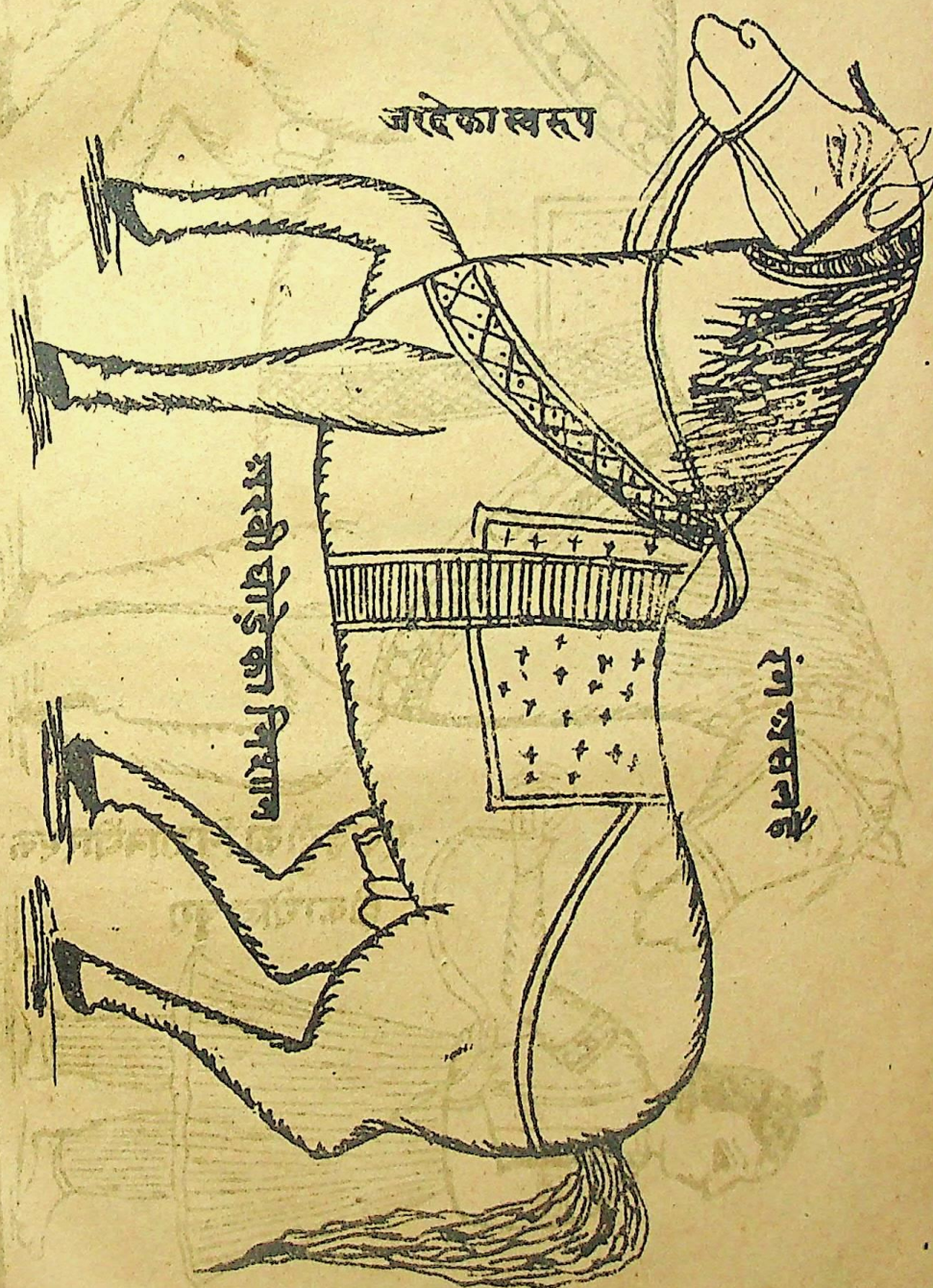
रंग असल है
जरदेका स्वरूप
अरबी घोड़े का निशान

एक हड्डी का निशान और एक
ही का घोडा हुआ

कान कानियाल और कान्ना एक नं:
रखीं को कहते हैं ऊपर होता है-
चकावलि का
निशान
पुस्त का निशान

सापन भौरी का निशान

घोंघ की भौरी का निशान

तंग के नीचे भौरी का निशान

शाख़दार की तारीफ़ का निशा न कि पहिचान यह कि दोनों आंखि एक तरह की नहीं ॥

यह भी सुतलयकुम है

पदम घोडे की सवी का स्वरूप उसको
ईरानी मुग़ल्ल बुरा कहते हैं

तीन कानवालेघो
डे का निशान

मुश्की मूरत
यह सुशील है
अर्वी का निशान

इस तस्वीर में सिवाय एक भौंरी रवि मणि के बाकी सब
माक़िस हैं और बुरा है -
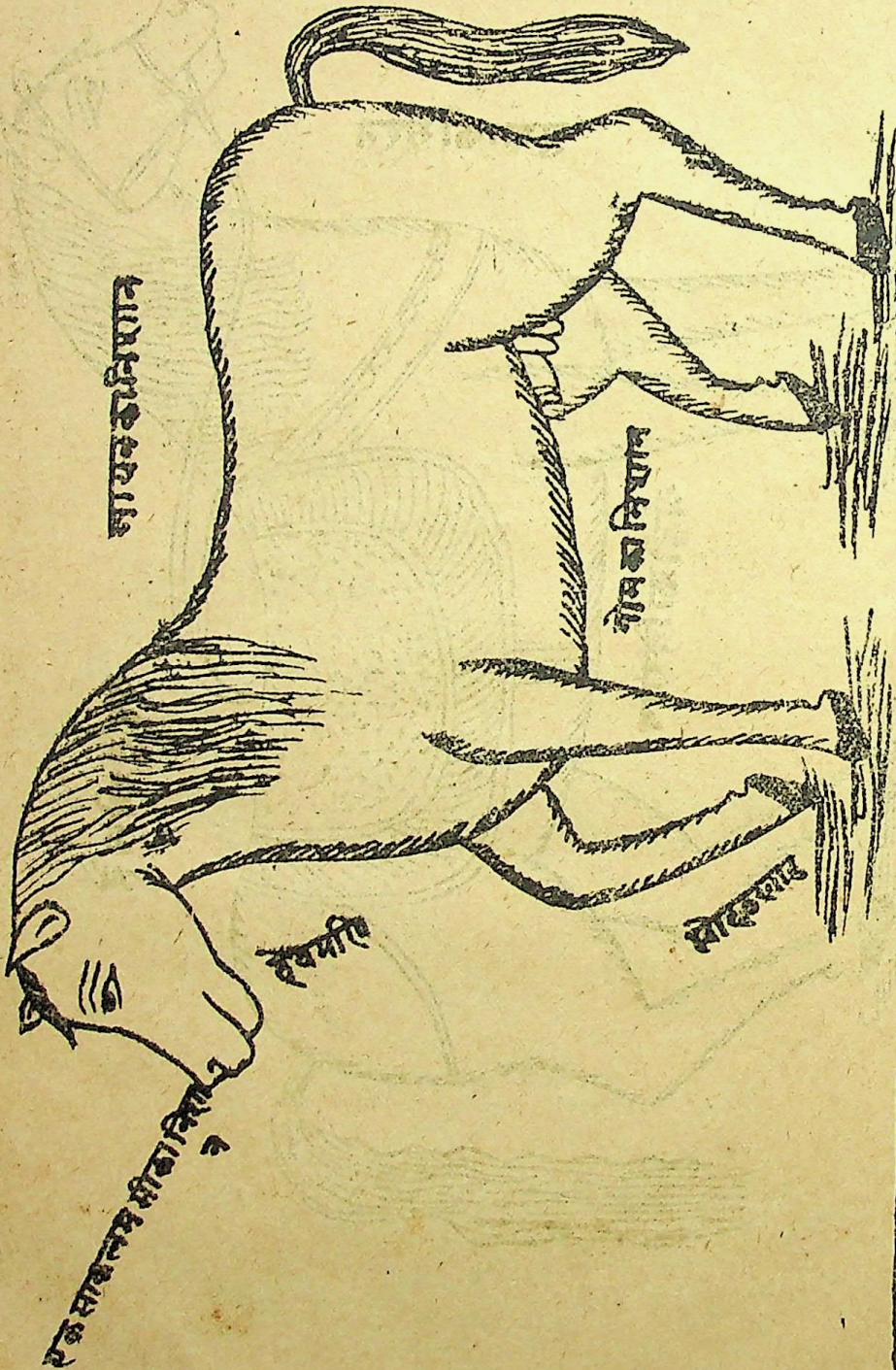
गाव दुम घोड़े की सूरत

जिस घोड़े का सीना निकल जाता है
वह चलने में खराब है यह घोड़े का ऐब है

जिस घोडे के चारों हाथ पैर सफेद हों उसको
मुनल्ले कुलयसार कहते हैं बुरा है-

ग़ालत के खोल के मुंह मे हो चूका लटकनयनों का,
मिशान

जिसकी घोड़े की आलत अपीनलिंगके सुंडन

उसको असरक्षा कहतेहैं
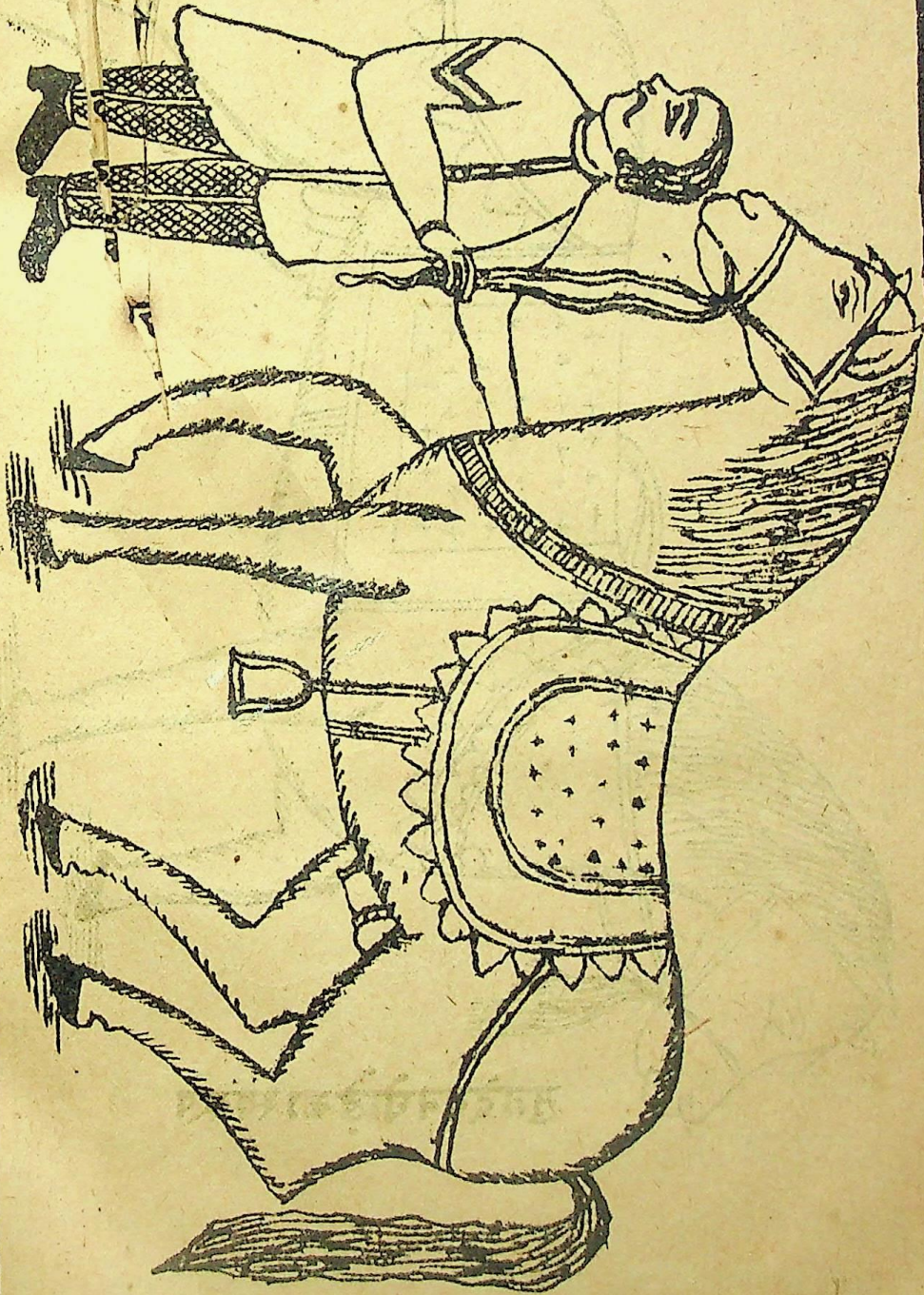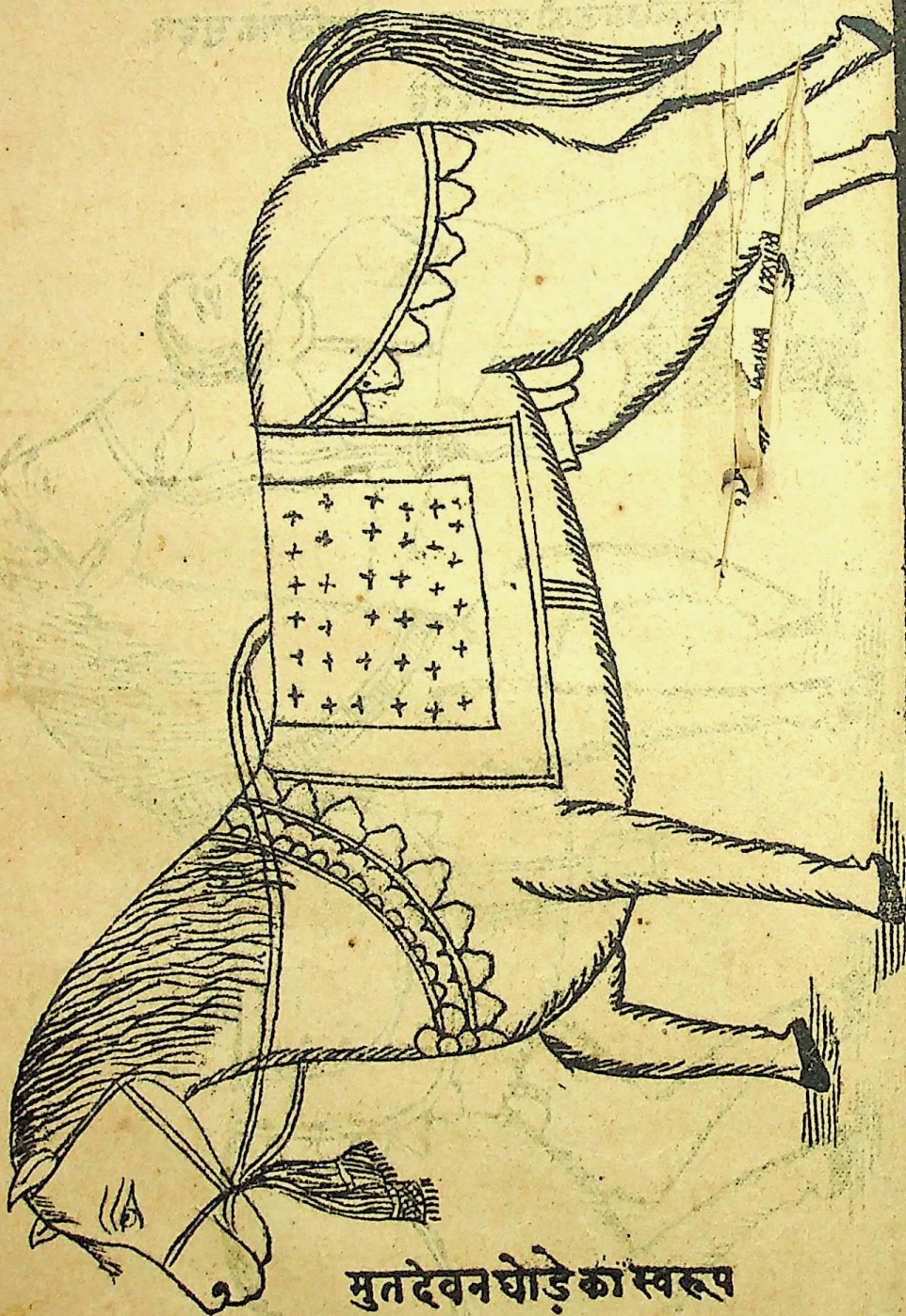
मुतदेवन घोड़े का स्वरूप

अथ भौंरी शुभ लक्षण

अथ भौंरी बरणौं शुभ अंग॥ जो शुभ राखी अंग तुरंग
जो माथे पर भौंरी लहिये॥ गुणीलोग श्रौगुण मत कहिये
कंध तरे भौंरी जो होय॥ उत्तम कहत स्याने लोय॥
अघर स भौंरी जो लहौं॥ शुभ सुखदायक वाहू कहौं
कौंसन सौं भौंरी जो होय॥ शुभ लक्षण भौंरी जो सोय
पिछले पांवन जंघा ऊपर॥ ज्यौं भौंरी लहिये पद ऊपर
तासमान शुभ बरणि न कोय॥ जो भौंरी पावन में होय
विजय करन ताही सौं कहैं॥॥ शालहोत्र जेहि लक्षण लहैं
भौंरी चार ग्रीव जो होती॥ तिन को नाम सुनहु उद्योती
दो० चिंतामनि श्रौर जोगमनि होत कंठ मनि नाम।
द्रौ मनि भौंरी आदि दै शुभ राखी श्री राम॥६३

भौंरी अशुभ लक्षण

दो० भौंरि अशुभ कहौं मति सोई॥ अंग अश्व के यह विधि होई
आंखिन नीचे ऊपर पूंछ॥ होत मध्य यह भौंरी पूंछ
आंसू डार नाम है ताको॥ खोवे तेहि घोड़ा है जाको
अंग तरे भौंरी जो होय॥ तंग करे स्वामी को सोय॥
मूल करन को भौंरी लहौं॥ एकहु यातें अशुभहि कहौं।
जो भौंरीं होय सर्पाकार॥ जी दीजे वाहू को डार॥
विधि भौंरी जो नथी समान॥ ताहू डाल देय सो त्तान
पद्ठे तर भौंरी जो परे॥ स्वामी कौं दरिद्री करै॥

हृदय वलि फ़ हृदय में होय॥ सो डाले स्वामी को खोय
मैं जापर भौंरी जो लोय॥ मेदि देय स्वामी को कोय

दो० नखत भाल सब काल हौ खंड खंड सब दाम॥
और सपेदी अंग नहिं अकर व ता को नाम ६६
एक लक्ष के जाल हौं दूजी नहौं सुपेद ॥ ४॥
अकर व ता को कहत को लीजे उपजे खेद ६७

अथ लक्षण घोड़ा के जथामति शालहोत्र वर्णनं

दो० अब औषधि औ रोग सब बरणौं मति अनुसार
चेतन चन्द समेत नर लहौ सु अंग बिचार।६८
दोनो वेर सुवेर सो विना ताकजो देय ॥ ५॥
जाय वन्द ते होय है रोग द्वैष सब कोय ६६॥

अथ औषधि सब रोग हरण व्याधि नसावन

चौ० कव की कद औ रकाराजीरा। काले अरु हलदी अरु पीरा
वाय विडंग सुहागो लेय। भूनि फिटकरी तामहिं देय
मिरच कंज अरु पीपरि मूल। त्रिफल अमलतास के मूल
असगंध ता भौंरी तहं देउ॥ अजवायन मेथी अरु राऊ
लेहु पुराने गुड़हि मिलाई। सम करि औषधि एक नलाई
औषधि में दूना गुड़ दीजे॥ आध सेर का पिंडा कीजे
पीड़ा दीजे एक नहार॥ वलगम जहर वाद को चार
वाको होय रूप प्रकारो

दो० सोंठ मिरच अरु पान में अदरक पीपला मूल॥

नित प्रति घोड़हि दीजिये रोग हरै तेहि दूर

बत्तीसा मसाला घोड़े का

पीपल लहसन पीपलामूल ॥ कुटकी वायबिडंग कचूर
मिरच सुहागा काला जीरी ॥ अजवायन हलदी अरु पीरी
वच गूगल और दही मंगावै। सज्जी जवाखार को ल्यावै
मैथी सोंठि मैनफल लेऊ ॥ बीज क सौंधी तामधि देऊ
चीतो बीज पमार विधारो ॥ कालेम्बर जीरो विचन्यारो
सेर एक विजिया को लीजै ॥ हींग टका भरि तामहि दीजै
लेउ सुहागा और फिटकरी ॥ भूंजि खील सौं जो वह करी
दो० मानस की खुपड़ी सुफल द्वै पल महिषी सींग
लेय जराय सो राख कर ताहि कर्म ले हींग ॥
टका एक भरि दीजिये भूंजि आटा मध्य ॥
रोग नसै अब अश्व के बल पौरुष की रद्ध

अथ सिंगरफ गुटिका प्रारम्भः

सिंगटका एक भरि लेउ ॥ सुम्भल खार तेहि सम कर देउ
त्रिकुटा गूगल और बिनागा ॥ टंक एक भरि तीनो भागा
लौंग अदरक पान सुहागा ॥ करिकें खील सोधविषनग
झरवेरी सम गोली करौ ॥ सबही रोग घोड़ा के हरौ
दो० भूजे आरा मध्य जो गुटिका देय खवाय ॥
नासै रोग सुचन्द करि औरन कौ उपाय ॥

अथ सुधाकरन

मन द्वै गाय दही मंगवावै ॥ छाल सहज नेकी करि ल्यावै
सैंधो साम्हर सज्जी लीजे ॥ सोंचर खारी तामहि दीजे
राई लहसन कारा जीरी ॥ अजवायन हल्दी अरु पीरी
वाय विडंग मूसली संग ॥ खील सुहागा करि एक संग
दो० सब को तनक सुकूटि करि राखै धूप धराय ॥
टका भरि एक दीजिये जब औषधि उफनाय
ग्रीष्म ऋतु हि बचाय करि जो घोड़े को देय ॥
होत सुपुष्ट शरीर तेहि क्षुद्र क्षमित कर लेय ॥

औषधि क्षुधाकरन

सज्जी अजवायन अरु राई । सांभरि वाय बिडंग कटाई
सोंचर सेंधो सांभरि लीजे ॥ बजन बराबर यह सब कीजे
काला जीरी और चोराई ॥ लहसन पीपलामूल सुहाई
मानस की पेशाब मंगावै । कूट पीस तामहिं धरवावै
दो० एक टका भरि दीजिये मोठ महेला माहिं ॥
क्षुधाकरन अति अश्व को औषधि वा सम नाहिं

औषधि क्षुधाकरन

नीव वकायन और कसौंदी । तामहि देउ कंजा की पैंदी
ता पीछे बिषखपरा लीजे ॥ सेर सेर या सब की दीजे
अदरक पात मिरच को देउ ॥ करि गुटिका घोडा को देउ
सात दिवस अश्व जो पावै ॥ क्षुधा होय अरु मांस बढावै
सो० भूंजे आटा मध्य प्रात समय जो दीजिये ॥

होय सुबल की दृष्टि चेतन चन्द विचार कह

अथ अश्वके मोटे होने की विधि

सेर एक मडुवा मंगवावै॥ असली सहत भांग भुंजवावै
मेथी अजवायन तहं भांग॥ टका एक भरि खील सुहाग
गुड़ में सान लेय सेर चार॥ प्रात सांझ दीजै पल चारि॥
दो॰ जायवन्द नहिं दीजिये मोटो देखत होय॥
साल होत्रय ह भाषही बढ़ै पराक्रम सोय॥

दूसरी बिधि

हलदी सेर आठ लै आवै॥ सुरभी छीर ताहि भिजवावै
सात दिना तक भीज्यो करै॥ छांह सुखाय कूटि करि धरै
ता तो घीउ नारि करि मलै॥ वेर एक सोंठा फिरि कलै॥
सेर पांच मेदा जो लावहि॥ सब की मेदा एक करावै
स्वेत खांड को हलुवा करै॥ दूध डाल कर छुली सींचलै
दो॰ पाव सेर नित दीजिये घोड़े को उठि प्रात॥
चेतन चन्द विचार कहि मोटो द्वै है गात॥

अथ औषधि सरदी गरमी की

सुम्मल खार संखिया लावै॥ खील सुहागा की करवावै
बछुरि अफीम एलुआ धरै॥ तासों चार चार सब करै
लै दश मासे साजी लोट॥ तासों अश्व होय बहुमोट
दो॰ काले तिल के साथ सब गुटिका दीजे टंक
दीजे एक सुप्रात ही रीझै राउ अरु रंक॥

औषधि ज़हरबाद की

मिरच कसौंदी अदरक पान। चारों कस्यो एक सम मान
ज़हरबाद बिष वेलहि हरै॥ कहै सो शालहोत्र मनि चरै

दूसरी विधि

राई मिरच पीपलैं लेउ॥ टंक टंक भरि सम करि देउ॥
हींग सुहागा और अफीम। उन औषधि तें कीजो नीम
ताही भाग लौंग को करै॥ अकड़ कड़ा ताही सम धरै॥
सोंठ पीपलामूल मंगाई। उड़क छाल जड़ भेजन नाई
दो० तामहिं गोली कीजिये औरा के परमान॥
सांझ भोर को दीजिये रोग न रहै निदान॥

चांदनी मारे को इलाज

राई मिरच पीपले लेउ॥ सम कर लहसन तामें देउ॥
पीपरि मिरच सोंठ अरु पान। छाल सहजने की सम आन
कंजा मैनफल एकतर करौ॥ पैसा भरि गोला अनुसरै
प्रात समै घोड़ा को दीजे। रोग घटै घोड़ा को दीजे
सिंह चर्म अजया को लावै॥ घोड़ा को मुख ढ़ाप बंधावै
दो० औषधि कीजे जो कहै लागन आवे कोइ
दधि सुत रवि सुत को हनै बज्झरि ननी को होइ

दूसरी विधि

लहसन हींग सुहागा आनि॥ कारी जीरी अरु अजवानि
पीपल मिरच सोंठ भारंगी॥ सैंधो सोंचर धाजी संगी।

सींग जलाय राख करिलेउ ॥ तब औषधिके माहीं देउ
मूल जवासा और अतीसा ॥ पान खदाई और अतीसा
विष खपरा और अदरक पान। गोली करौ और प्रमान
भूंजे आदा तामहिं देउ ॥ दोय पहर बन्द करि देउ।
पानी तापत अधिक कराई ॥ शीतलकरि देउ पिवाई

अधूरा चौपाई

आक धतूरो सेंहुड़ जारि ॥ अजवायन हल्दी लै डारि
और राखमें लीजो छानि ॥ अंग अश्वके मले निदान
जागहि बन्द बांधि तेहि राखे। फारहि मंत्र खेद जो मांखे

अथ मंत्र विधि

चंडी चंडी तूपर चडी ॥ आवत चोट करै नवखंडी
हय राखही या राख। थूनी वडेरा राख। दुहाई हनुमंत
बीर अगस्त मुनी की फट फट स्वाहा ॥ चौपाई ॥
पाव अनार तीन लै दीजे ॥ होय आखल तो नहि दीजे

इलाज सुम्मल गुटिका का सर्व रोग हरण

हींगुल सुम्मल खार मंगाई। टका टका भरि वजन कराई
गूगल आदो लोंग सुहागा ॥ आनि पैसाभरि एक प्रमाणा
पीपल मिर्च मिलावस करै ॥ अदरक पान के अर्कमें धरै
खरल करै दिन तीनि बनाई। गुटिका चना प्रमान कराई
दो० गोली दीजे अश्व को भूंजे आदा माहिं ॥
रोग हरै बढ़ बल करै मिटे जहर की छांह

अथ औषधि वल घोड़े की जोजकरि गयो है।

प्रथम छुहारे खाली करै॥ फिर अफ़ीम ताही में धरै
करि कपरौटी भूंजे ताहि॥ आधो रोज खवावे वाहि
अम्ब अंग खुलि जायतुरंत॥ दाना घति दीजो बुधिवंत
पानी प्यावे तव सो रोज॥ मेटे रोग रहहि नहि खोज

दूसरी बिधि

सज्जी साम्हरि वो डो पोस्त॥ सालिम गुड़ खावनदैदोस्त
टकाटकाभरि औषधि लेउ। पाव सेर गुड़ तामहि देउ।
आटा भूंजि के देउ मिलाय॥ सांझ प्रात अम्बजो खाय
अंग २ खुलि नीको होय॥ दाना देउ न सातै दोय॥

इलाज तीसरी विधि

सांभरि लहसन टंक पच्चीसा गोली करि दीजे दिनवीस
दाना मेदि मसाला देउ। पानी तप्त नित्य करि लेउ।
आधी प्यास पिवावे पानी॥ देहि मसाला यह सुन ज्ञानी
हल्दी सालिम गुड़ सब लेय। प्रात समय घोड़ा को देय
सांझ समय वह गोली देय॥ घड़ी चार काइजा करिदेय
नीको होय न लागे वार॥ औषधि शाल होत अनुसार

अथ छातीबंधकी विधि लिख्यते

गूगल टका एक भरि लेय॥ हींग सुहागा खील करेय
अजवायन सोंचर मिलवाय। घोड़ा को दे प्रात खवाय
हींग सुहागा मासे दीस। औषधि वजन वरावर पीस

दानामेदि मसाला देउ ॥ सात दिवस महं नीको लेउ

इलाज नाखुना की विधि। चौ०॥

मिरच दक्खिनी बदलेउ ॥ भांग सुहागा तामहिं देउ ॥
सेंधोनोन फिटकड़ी खील ॥ गूगल वजन बराबर लेउ ॥
कटुक तेल महं खील कराई ॥ नाखूने पर देउ लगाई
रोग मिटहि करि नीको होय ॥ चेतन चन्द सब व्याधि यहै

औषधि मासवृद्धि। चौ०॥

अजय पाल अरु हरिया थोथा ॥ सम्मल खार सज्जी सो मोथा
नीम पात की टिकिया करै ॥ कडुवे तेल मध्य सो धरै ॥
टिकिया काढ़ औषधि ताय ॥ नीको खरल सों खरल कराय
लेपन करै खोलि रंग देय ॥ हरै रोग नीको करि लेय

अथ वादी खाये का इलाज। चौ०।

काला जीरा गेरू लेय ॥ सोंठि कचूर हि तामहि देउ
गोवर के रस खरल कराय ॥ क्षीर में मथि के अग्नि लगाय
हरै रोग नीको ह्वै जाय ॥ यामें कछु संशय नहि लाय
गरम होय जब लेपन करै ॥ वेजा रोग अम्ब को हरै ॥

दूसरी विधि

दो० ढाक सुमन जो औटि कें निज प्रति बांधे कोय
थाल होय इमि उच्चरै वेजा रोग न होय ॥११

अथ औषधि खारिश की

वरुचि गंधक मैनसिल आनि। वायविडंग चोख लेजानि

कूटि पीसि के इकतर कीजे ॥ पानी में सब निशि भरि लीजै
प्रात मथे ले कड़वे तेल ॥ घोड़े के अंग मर्दन मेल।
घटिका तीनि घाम में राखै ॥ माटी मलि धोवे हरि साखे
रोगन में जो धोय खवावे ॥ फेरि खारिश होन नहिं पावे

अथ इलाज अग्नि वायु का

लोनी घृत सेर इक लेय ॥ ता पाछे औषधि करि लेय
अरु मिर्च पैसा भरि लेउ ॥ मधु माखी ले माटी देउ ॥
पे माटी लीजे मुल्तान ॥ तेल डालि कड़वे सानि ॥
अंग अंग घोडा के मले ॥ पूंछ अंग बकरि यह कले
उड़द उसेय नीर मधि धरे ॥ सो लेपन के राखे अंग ॥
अहि काले की कांचली लावे ॥ मासे चार कनक मिलवावे
रोटी करके घृत में सानि ॥ घोड़हि देउ प्रातही आनि
याविधि से जो नित प्रति करै ॥ अग्नि वाय घोडा को हरै

दूसरी विधि चौपाई

फूलाहार सेर दश लेइ ॥ खंड खंड करि दूध में देइ ॥
सात दिवस घूरे में राखे ॥ दिवस आठवें बाहर राखे
सेर सेर घोडा को दीजे ॥ ता पीछे औषधि यह कीजै ॥
महिषी सुत को सींग जरावे ॥ छाछ मेंड की और मथवावे
तीन टंक मैनसिल को लेउ ॥ करि मैदा ता हिय में देउ ॥
घाम तेल में मथै बनाई ॥ घड़ी एक यामें मथवाई ॥
पीत म्रतिका में अनुवाई ॥ अग्नि वायु को सेत मिटाई॥

दो० छाई लेकर तालकी जब को आटा देय
सात दिवस के देतही घोड़ा नीको होय।

इलाज ब्राह्मणीरोग को॥ चोपाई

पटसन जारि संख सौं करै॥ सान्दहरि तीन टक तहं धरै॥
दोऊ सीरामथि लगवावै॥ चार घड़ी पीछे अन्हवावै
सनमुष मुदा संख मिलवावै॥ सहित संग में देह लगावै
सात तीन दिन करै जो कोइ॥ केश बढ़े ब्रह्मनी को खोय

औषधि बरसायत की चोपाई

बरसाती मोम सो मलै॥ मलत मलत लोहू जब चलै
कटुकतेल ले आगे धरै॥ तामहिं औरमोम को करै
रंजक की दारू को वावै॥ सेंदुर सहितवाहि मिलवावै
मल्हम करै हरै बरसायत॥ सात दिवस लागहि दिरपात
दिवस सातमें नीको होय॥ बरसाती डौराह खोय॥

इलाज विषवेलिका दुष्टहरण। चौ०।

प्रथम मिलाये की विधि लेउ॥ एक एक बढ़ि सो तक देउ
सोतें उतरि एक जब पावै॥ जब यह मल्हम कोवंधवावै
पातबबूल नीव को लीजे॥ मेंढा सिंगी सहित भुजीजे
मुरदा संख सुहागा लावै॥ छेरी छीर खरल कर वावै
वेरपा परी सेंदुर सानहि॥ कडुवे तेल मोम को आनहि

दो० पहिले लोहा लीजिये चार वन्द को खोल
पीछे औषधि की वा विधि सौं सब तोल।

मव को खरल करै धरध्यान ॥ मल्हम कीजै या विधजान
ग्रम्बसंग की होजो धरै ॥ निश्चयजान वेल को हरै ॥

इलाज हड़ा जानवा की विधि

दो० चारों बंद दे दाग जो जानै यह रोग है ॥ ३ ॥
चेतन चन्द सो लाग औषधि कीजै मासहै

औषधि चौपाई

मानस की खुपडी को लावे ॥ तप्त अग्नि सों ताहि जरावे
महिषी मेंढा सींग हि जारहि ॥ जो औषधि समता मेंडारहि
त्रिफला त्रिकुटा साजी राई ॥ जारि सुहागा सील कराई ।
कालेप्यर औरकारीजीरी ॥ अजवायन हल्दी और पीरी
गुड़ सैं गोली या विधि करै ॥ टंकटंक सब के प्रान धरै ॥
उलहत रोग मोरी रितु करै ॥ सकल रोग घोड़ा के हरै

अथ घोडा के पेशाब बंद का इलाज

प्रथम सेरपानी को करै ॥ जाकी अमिली को अनुसरै
घोड़ा को दीजे भरि नारि ॥ तुरत देहिं पेशाव हि डारि

दूसरी विधि

खीरा काकरि वीज मंगाई ॥ पीसि नीर में देहि पिवाई
घर गडरिया के लैजाय ॥ सूंघत वायु तुरत खुलि जाय

तीसरी विधि

दोऊ करन सों मिरचैं पीसि ॥ डाले नौन संग दुइ बीस
ता पीछे यह बाती कीजे ॥ नारि मध्य घोड़ा को दीजे

मिर्च दकिखनी सांभरिनोंन॥ गरघोडा की विष्ठा तीन
बाती करिके देय चलाय॥ छूटहि मूत्र रोग घटिजाय

इलाज लीदबन्दपेशाबबातहरन

कारीजीरी मिर्च मंगावै॥ खील सुहागा की करवावै
सज्जी कुटकी राई लेय॥ हींग टकाभरि तामहिं देय।
अजवायन सम भाग कराई॥ अदरकरस सौं गोलावंधाई
एक छटांक अश्व को दीजे॥ वाईरोग गुलम हरि लीजे
दो० सोंठि घीउ संग सानिकें गुदामध्ये दे फार॥
लीद करै घडी एक में नाहि नलागे वार॥

इलाज घोड़ा को उदर सोधन जुलाव विधि

दो० कड़ुवा नोन औरसोंठ ले असंगध सहित मिलाय
काढ़ा दीजे भाग सम उदर व्याधि वहि जाय॥

अथ जुलाव

दो० राई खारी दही सम सेर अर्ध जो लेय॥
व्याधि उदर की गिरपड़े सकल दोष हरि लेय

अथ इलाज प्रमेह को

दो० अश्व प्रमेह महा कठिन जो नित वीतै मेर॥
ताकी औषधि कहत हैं नीको विष्णु करेय॥

अथ औषधि चौपाई

नागवेलि की जड़ को लावै॥ कदली जरसम भाग करावै
तवासीर सुरमा अरु चीनी॥ मींगी बिनौरा सम करि लीनी

गायदूध द्वै सेर मंगावे ॥ सातदिनादीजे नेहि खावे
नासै रोग दुष्ट बड़ होई ॥ औषधि करै जो या विधिकोई
बैठहिउठहि लेटलैजाई ॥ मुख बोलैगरुग्रास न खाई
मूलकुघा अतीताको नाम ॥ औषधिकरो होयघ्राराम
छाली मकरा औरपलास ॥ बीज करंजन हींगजवास
सेंधो समकरि देय मिलाय ॥ गौघृत संग देय पिलवाय
मूलमिटे दीजे दिनदोय ॥ नासे रोग भूष बढ़ होय ॥

अथ वायमूलको लक्षण

दो० गिरै धरनि परदम करै आंख मूंदि रहि जाय
वायमूल वासौं कहैं ताको यही उपाय ॥

खुरासान बच कूट मंगावे ॥ दंती छालिसम सेंधोलावे
हींग सुहागा सम करि लेउ ॥ पाषाणभेद लै तामें देऊ ॥
सकल कूटि करि मैदा कीजे ॥ माखन सानि अश्वकोदीजे
देतहि नीको होय बनाय ॥ सकल व्याधि वाकीवहिजाय

अथ प्रवृत्ति मूल लक्षण

दो० हींसे भाकहिं फूंकहिं अति बोले वारम्बार
मूल प्रवृत्ति बखानिये ताको यहउपचार

इलाज चौपाई

वायविड़ंग हींग समलेउ ॥ मधदाराखजरायकेदेउ
बच और सोंठि सुहागा लीजै ॥ नीरदेह केशन सौं कीजै
नीको होय व्याधि वहिजाय ॥ यों या विधिसों करौउपाय

अथ शिलह वृत मूल लक्षण

दो० सूंघै छाती अम्बजो गिरहि धरनि बहुवार
मूल तासु पहिचानिये कीजे यह उपचार

हींग सोंठि सेंधो सम लेउ ॥ सिरका छानि दही में देउ
ताते नीर मूल लखि दीजे ॥ यह विचार पूरण सुनि लीजे
लंघन करहि हानि नहि होय ॥ दाना दिये व्याधि करे सोइ

अथ भ्रम मूल लक्षण

दो० भूंख घटै और लहै अति अरु चितवे चहुं ओर
भ्रम मूल ना सैं कहैं वाहि न दीजे खोर ॥

अथ औषधि चौपाई

हलदी हींगुल देवे साखी ॥ सोंठि सुहागा खील सुभाखी
बजन समान पीसिके देउ ॥ हींग सुहागा थोड़ा लेउ।
भूंख बढ़े भ्रम भूले ना सै ॥ बलबीर जबहू ताहि मकासे

अथ ऊर्द्ध मूल लक्षण

मुख घोड़ा के पानी भरे ॥ अधिक पसीना बहु विधि करे
लोटे नहि बैठे नहि भूम ॥ नयन मूंदि रहै भूमे भूम
ताकी जो यह औषधि करे ॥ अष्टादश भूलन को हरे

अथ औषधि

सो० पीपल पीपला मुल बीजक सोंठी मिर्च लै
सोंठ बैतरा मूल गो छीर सो दीजिये। १४४।

रोग नसहि जो दीजहि प्रात ॥ भूंख बढ़े मोटो होय गात

दाना की तेहि नाम न लेइ॥ तप्त नीर सीरो करि देइ

अथ इलाज घोड़ा के सुंम वा ऐड़ी फटे की

राल मोम गुड़ गूगल लेय॥ लोध खास सेंधो सम देइ
पीपल गौ का घी मंगवावै॥ सब की मैदा पीसि करावै

दो॰ काले तिल को तेल लै सब को इक तर आनि
आंच अनल सों तप्त करि सुंम में भरैं निदान
कपड़े सौं पग बांधिये ऊपर देइ के पात॥१॥
नीको होय जो सुंम महं मानहुं सांची बात

अथ घोड़े की तत्य की विधि

वाय पित्त कफ़ की अधिकाई॥ जो घोड़े को उठै विकाई
ताही दिन तुम औषधि करौ॥ जो कछु साल होत्र मत्ति चरौ

दो॰ अरुन नैत्र धौंकी बजे टापे पानी होय॥१॥
बित बिकार सो जानिये औषधि महं कहं दोय

मोथा पीपल और गिलोय॥ मिर्च लौंग जायफल होय
अदरक पान सोंठि सम लेइ॥ सात दिवस यह औषध देय
नीको होय व्याधि को हरै॥ शाल होत्र यह बिधि उच्चरै
जो सत कार वो दाना दीजे॥ सात दिवस महं नीको लीजे

अथ औषधि कफ़ज्वर की

दो॰ भारी भयो होय अति नैन चुवै बहु नीर
पीरो कफ़ या कर बदन होय वाहि के पीर

खेर सार अरु गौ का घीउ॥ अग्नि पांच सो तप्त कराउ

हाथ पांव घोड़ा के मले। ता पाछे यह औषधिकरे
औषधि सोंठि कटाई रंग॥ पीपला मूल कटाई संग।
सोंचर सैंधो हींग मिलाय॥ औषधि वजन बराबर लाय
हींग सुहागा मासे चार॥ भूंजि अग्नि महं दीजै डार॥
टंक तीनि भरि दीजै हिरोज़॥ मेटहि अंग रोग को खेज

अथ काढ़े की दूसरी बिधि

दंती जरभारंगी आन॥ नागर मोथा कुटकी सान
नीव छाल अस गंध देवदार। चीता मिर्च लेउ पुनि ग्वार
अष्ट विशेषी काढ़ा करो॥ सहत टंक भरि तामें भरो
सान एक देवे नित वाहि॥ रोग हरै काढ़ो देय प्याय॥

अथ अश्लेष्मा ज्वर लक्षण

तप्त शरीर अश्व को होय॥ आमा सो जासुन दृग होय
कफ डारै मुख तें अधिकाय। कांखे बदन घास नहि खाय
पीपल सैंधो घीउ मिलाय॥ नास देय घोड़ा को आय
ता पाछे यह काढ़ा करै॥ अश्व अंग की पीड़ा हरै।
वाय बिड़ंग अंड जड़ लावे॥ सोंठि कचूर गुरुमिलावे
अष्ट विशेषी काढ़ा करै॥ सात दिवस महं देव निहरै

अथ सन्निपात ज्वर लक्षण

तप्त शरीर अश्व को होय॥ हींसे टापे घोड़े सोय॥
स्याम मचाउड चले नहि अंग॥ सन्निदोष ज्वर ताके संग

औषधि चौपाई

वाय विड़ंग ज्वर ग्रौर पोस्त ॥ जड़ ग्ररंड कारे की दोस्त
ग्रष्ट विशेष दे हि तेहि काढ़ो ॥ सन्निपात ज्वर नासे काढ़ो
गुल्म ग्रग्नि वाके जो परे ॥ तापाछे एक ग्रौषधि करे
सोंठि पीपरा मूल मंगावे ॥ मद्दल खाय गुड़ संग खवावे
वजन वरावर घोड़हि देऊ ॥ गुल्म व्याधि वाकी हरि लेउ
वही बातज्वर की ग्रनुसरे ॥ यासमज्वर की ग्रौषधि करे

ग्रथ दूसरी विधि

सेर पालका ग्रौर ग्रंजीर ॥ खाड सहित मिश्री ग्रौर क्षीर
वजन वरावर सबकुछ लेउ ॥ गाय दूध मह घोड़हि देउ ।
नासे रोग ग्राधि सब हरे ॥ शाल होत्र याविधि ग्रनुसरे

ग्रौषधि मस्तका शूल लक्षण

सो० लक्षण त्रिविधि विकार वात पित्त कफ जानिये
शाल होत्र ग्रनुसार । ग्रौषधि कीजे देखि इमि
जो शीतल घोड़ा को पिवाई ॥ रुधिर चले नकुवन में ग्राई
पित्त दोष पहिचानो ताहि ॥ ग्रौषधि कीजे याविधि ग्राहि
ग्रास ग्रौर ऊसीर मंगाई ॥ लेपन माथे पे जो कराई
नास देय त्रिफला के नीर ॥ मेटि लेउ याविधि जो पीर ।

ग्रथ मस्तक शूल लक्षण

भौहन पर जो होय ग्रभास ॥ देउ कटाई को तेहि नास
पीरो कफ़ पानी सो झरे ॥ जो याविधि सों ग्रौषधि करे
सोंठि सुहागा सोंचर नोन ॥ मिर्च पीपल तामहिं देउ ॥

वजन बराबरि दीजहि वाहि ॥ नासे रोग मूल वहि जाय

अथ मस्तका मूल वात लक्षण

भारी सिर अरु होय अमास ॥ त्रिकुटा कायफल को देनास
तापाछे यह औषधि करै ॥ तो घोड़ा को वेदन हरै ॥
कुटकी वायविडंग कचूर ॥ सोंठि सुहागा पीपलमूल
वजन बराबर भेदा लेय ॥ मूंजहि आटा सब करि लेय
प्रात सांझ घोड़ा को देय ॥ सकल व्याधि वाकी हरि लेइ

अथ मुख रोग की विधि चौपाई

लेपन करै पकै मुख जासु ॥ मुख ते पारन आवै घास
कफ़ गिरै बाढ़ जासु होय ॥ स्यामा रंग मुख माही सोय

औषधि सुनि मोहि पाहिं

कुकरौंधा ताही को रंग ॥ साम्हरि सेंधो मिरचें संग
छाल फेरि मलै दोउ जोड़ ॥ नीको होय तुरतहिं घोड़
तालू मध्य दंत जो होय ॥ कामलाम भाषै सब कोय
वाहि निमित यह औषधि कीजे ॥ घोड़ा घास खात नहिं बीजे
कै हल्दी मिरचैं अरु नोन ॥ कै घृत गाय सहित समदोन
तुरी दंत मिल दीजे ताहि ॥ ततछिन नीको लीजे वाहि
जो सब मुंह सूजे घोड़ा को ॥ होत विकार वात जोरा को

इलाज चौपाई

जवाखार अजवायन राई ॥ सरसों सौंफ हरद मिलवाई
लहसन मिलै वजन सम करो ॥ जल सों पीसि अग्नि में धरो

गरम सीस मुख देउ चढ़ाई॥ सेंको नित्त रोगवहि जाई

अथ कर्ण रोग चौपाई

श्रोणित चुवै श्रवण जो जाके॥ के आमाम होय ज्वर ताके
भारहिं से रुरु के कंपे अंग॥ ताहि जानिये वायप्रसंग
ताकी औषधि देय निधान॥ तिल हल दी सोंठके कान
लहसन हल दी हींग मिलाय॥ आक पत्र मांरु धरवाय
कपरौटी करि दीजे आग॥ काचो रहै जरहि नहि लाग
ताहि कूटि करि अर्क निकारि॥ घीउ सहित दीजे मधि डारि
सानि सानि कानन में भरै॥ निश्चय पीर अर्क की हरै॥

दूसरी विधि चौपाई

जो आमास होय अधिकारी॥ तो दालमल्लर सो निकारी
सेंधो कांजी सोंचर आनि॥ सोलीजहि पानी में सानि॥
ताको पानी कान में भरै॥ सेंक करै पीड़ा सब हरै॥

नेत्र रोग हरण विधि

औषधि नाखूना की होय॥ नीको होय करहि जो कोय
हल्दी सोंठि सहित घृत सानि॥ वांधे ऊपर तें ते हिआनि
सीत वात ते हि देहि उतार॥ मुंह जो कूटि वहै नहि वारि
हल्दी सोंठि सहित घृत सानि॥ वांधे ऊपर तें ते हिआनि
सीत वात ते देहि उतार॥ नीको नेत्र होय अधिकार

अथ नेत्र ढरका की विधि चौपाई

सरसों पीली मूल अरंड॥ गोली बांधि करो जिमि पिंड

ताको अर्क खेंचि सब लेय ॥ तामें दिरा औषधि समदेय
हार पेर और ग्वार मिलाय ॥ कनेर फूल सहित पिसवाय
सब को एक करि अर्क निकारै ॥ सांझ भोर दृग छींटा पारै
नीकै होय वायदे वन्द ॥ हाल होअ कहै चेतन चन्द

दूसरी रोग हरण

चन्दन सों फ तगर को लावै ॥ वकरा की पेशाव मिलावै
रस इनको जब लेइ निकार ॥ तामें घीउ वसन मइडारि
भरे नेत्र में रोग नसाय ॥ घोड़ा नीको होय वनाय ॥

अथ फुल्ली हरण

सोनामकवी वन्दन कीजे ॥ लेय फिटकडी तासमदीजे
सिरस बीज और चीन्ही लाय ॥ मिर्च कचूर देय मिलवाय
मैदा करि अंजन दृग भरै ॥ नीको होय फुल्ली को हरै

दूसरी फुल्ली हरण विधि

रस अंजन रत अंजन लाय ॥ विष खपरा को रस मिलाय
मधु सों पीसि नयन में भरै ॥ सात दिवस फुल्ली को कैरै

इलाज दृग सफेदी का

पीपल सेंधो सहित मिलाय ॥ विष खपरा को रंग मिलाय
दै करि मूंदि नयन दै ताहि ॥ नीको लीज हितु रतहिं वाय

अथ दूसरी विधि

दो॰ सावन मिर्चे मिलाय कर लीद रंग सों सानि
घोड़ा के अंजन करो मिटे रतौंधी खानि ॥

Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan Kosha

सबघोड़ामें कहौं जितने रोग बिचार ॥
तिनकी औषधि हौं कहौं शालहोत्रनिर्धार
सो० भाषत चेतन चंद शालहोत्र कीगति निरषि
सुषपावहिं मम वृन्द कुशलसिंह महराज प्रभु
घोड़ा की छाती होय भारी ॥ लहि नहिं दीजे जो असवारी
हाफत दाम खील पै तास ॥ करै सकल रोगन को नास
जो छाती तें लोहू लीजे ॥ सो विचारया विधिसोंकीजे
प्रथमघड़ी यह राह चलावै ॥ तापाछें रंग छीरखुलावै
गरम मसाला दीजहि ताहि ॥ क्रम सों दाना दीजै वाहि
उष्णनीरअचवन कोंदीजे ॥ छाती खुले जो मनयेलीजे
अथ मसाला चौ० ।
हालम हलदी सोंठिसुहागा ॥ सोंचर सावन साजी पागा
राइसों मिले वजन समलेय ॥ छाती खुले मान यह लेय ॥
टंक सुहागा तामहिं दीजे ॥ वलि गिरी की औषधि कीजे
बन्दवन्दजो करहु सही । यामें निश्चै है सबही ॥
प्रथम मसाला बिधि
दो० गूगल पैसा दोयभरि गोमूत्र सों देय ॥ ४ ॥
जकड़ो अम्ब खुलिजात है यह सांची सुनिलेय
साभरि लह सन भागकरि दीजे नित्त खवाय ॥
जकडो नीको होत है पै लंघन करवाहि ॥
तप्तनीर नित दीजिये दाना दहिवताहि ॥

वह औषधिको नेम नीको लीजै चाहि

अथ इलाजवातशूलका

भूमि गिरै यह दम करै फिर उठहि मरोर॥
ताको वह औषधिकरो भगै रोगकी खोर॥
त्रिकुटा हींग अरु कायफल खंड बराबर लेउ
गंधी मासे चार सो मँदिरा के संग देउ।१८४।
सो० करवावै परहेज दाना पानी घास सों॥
औषधि है यह तेज गात देखि के दीजिये

अथ दूसरी विधि

दो० पीपरि सोंठि जोरेणुका लावी कूरे आन॥
औषधि है यह तेज अरु महंदी में सानि॥

अथ दूसरी विधि

दो० जो घोड़ा कंपै अह होंय जो नथने लाल
ताको दीजै नास यह रोग वहै तत्काल
गौ घृत ताको करै न दोष॥ तेल सिवाय नास देख
नीको होय पीर नहि करै॥ शालहोत्र याविधि उच्चरै

औषधिराक्षसशूलकी

उदर पीर घोड़ा के होय॥ उठै गिरहि वह पल २ सोय
हींसे टापे दृग होंय लाल॥ औषधि ताहि करो तत्काल

औषधि

पक्की अमली को रस लेय॥ सेंधो तेल तिलन को देय

सिरसा को रस तासम करै॥ इकतर करै नारि मैं भरै॥
तीनि दिवस घोड़े को देउ॥ हृष्ट पुष्ट तेहि नीको लेउ

औषधि और मूल मूल का लक्षण ॥

चौरंग हलदी को करै॥ मुख में लार अधिक ते गिरै॥
सीतल बदन हलावै सीस॥ वारि सलल नाविष्णवीस

अथ इलाज

संधो पीसि नयन में डारै॥ मिर्च लसहित नास अनुसारै
टहलावै और कोपा भले॥ या औषधि सों घोड़ा खुले
जड़ स्वाती औस सम लीजै॥ पीसि दूध महं घोड़ा दीजै
नीको होय ताक जो करै॥ शालहोत्र याविधि अनुसरै

इलाज शिरवादर्त्त शूलका

कापुरा जो जर्द कराई॥ निर्णय देवै पीवै जो पिवाई
हल्दी राई गुड सम लेई॥ सिरका संग घोडहि देई।
देतहि नीको होय बनाय॥ तुरत व्याधि वाकी मिटजाय

इलाज म्रत्यु शूलका लक्षण

दाना खाय न जल सों नेह॥ नित प्रति सूखे वाकी देह
हांफे झूमै गिर गिर पड़ै॥ ताकी औषधि याविधि करै।

अथ इलाज

भसम बादाम एकतें लेइ॥ दय तें आगे कमि करि देइ
बहुरि मलाई याविधि करै॥ जामें रोग अश्व को हरै
हल्दी राई गुड़ सम लेय॥ कूटि पीसि रका सम देय॥

तप्त नीर पीवन कूं दीजे ॥ सप्त दिवस महं नीको लीजै
शीतल होय न एकौ गाडो ॥ ताको रोग निन्नही वाढ़ो
मलवतो ने रंग के होय ॥ तेहि असाध्य लक्षण हैं सोय
वाको औषधि नहिं उपचार ॥ शालहोत्र भाषे निर्धार

अथ औषधि और सन्निपात शूल लक्षण

कां पै उछलै गिर गिर पड़े ॥ ताकी औषधि या विधि करै
अजवायन बच राई लेय ॥ भूंजि फिटकरी तामहिं देय
सोंफ सुहागा हींग मंगाय ॥ सिरका के संग देहु पिवाय ॥
ता सिरका को डाले पीउ ॥ तातें सुस्त होय नहिं जीउ
सप्त एक जो औषधि करै ॥ सत्त मैं शूल अश्व को हरै

अथ दूसरी विधि

दोहा सोवत ज्वर के शूल यह ताकी औषधि एक
उपचारै लहै एक जो कष्ट न राखै एक ॥

घोड़ा के अंग होय अमास ॥ पूरण लक्षण होइ न घास
उचकै चौंक धरनि पर गिरै ॥ औषधि वाकी या विधि करै
प्रथम सहजना हींग मिलाय ॥ अजवायन कंचन रिपु लाइ
वायबिडंग सोंठि और सरसों ॥ आधूरा करि बद्ध धाकरसौं

अथ औषधि खवा की विधि । चौ० ॥

सोंठि अजवायन वायबिड़ंग ॥ वज्जन बराबर एक संग
काढ़ो अए विशेषी देउ ॥ सात दिवस महं नीको लेउ ।

दो० बरस २ प्रति दीजिये गेहूं के रस वाय

रोगी अश्वन हेत है काहे को करे उपाय
विना चराई लोहू लेइ ॥ जा विधि देव जतन कर लेइ
तो घोड़ा की ह्वइ है हानि ॥ शाल होत्र कहि दीजै मानि
अथ लोहू हरण ॥

दोहा लोहू लीजे अश्व को जाको है विष वेल
जाय बिन्दु को पुष्ट है ताहि न दीजै भेल

जा घोड़ा को लोहू कढ़ै ॥ ताते बीस गुनो नित बढ़ै
लाल मोटे को माति करो ॥ सेर सवैया लोहू हरो
रोग न होय रहहि चालाक ॥ ज्यों लोहू लीजे नापाक

दो॰ नर घोड़ा एक गति शाल होत्र कहि भाष
ताके लक्षण भेद सब अंग २ सब भाष ॥

नर नारी तेहि भोग संयोगा ॥ ताके गुन लोहू जो रोगा
घोड़ा बन्द रहै और चरै ॥ ताके बाके बढ़ैन करै
जो कसी धा माहि पहिचाने ॥ लोहू ले इन राखै जाने
विन जाने नस छेदै कोय ॥ कल्म करे कर ताके होय
खस रंग शाहरय वढ रंग होय ॥ हफ्ते दामा जानिये सोय
ऐसी नेरहि धाम निजानि ॥ जो जाही ताही सो मानि
मारग कीजे ते गुन कहो ॥ कसी लोहू तैसे कह्यो
नसना रहै हने नने जोय ॥ जाड़ा रे रोगन को होय

दो॰ नर को जो परहेज़ है है को सोई जान
लोहू लीजे तासु को होय न जी की हान

अथ इलाज आमासोथजकरेको

जो घोड़ाको शोथ पकड़े॥ ग्रीवाकजहै औ स्तनजकेड़

ताको प्रथम करोउपचार॥ सेंको म्वारि सों सेंधो डारि

तापीछे यह सेंकन करै॥ सकल व्याधि घोडा की हरै

दो॰ अजवायन अजमोद ले हींग सोंठ सम लेउ॥

काली जीरी मिलाय कर लेप वहीं कर देउ॥

सो॰ जब सोथा मिट जाय सूधी गर्दन होय जब

कीजे यही उपाय रगछाती की खोलिये

अथ औषधि लोहू बंद की चौ॰

घोडा की नकसीर जो फूटे॥ चहूं ओर से धारा छूटे

कै लोहू के पानी गिरै॥ ताकी औषधि पा विधि करै

सोफ़ धना जीरा मंगवाई॥ सोंठ सहित दीजे पिसवाई

भाल अग्र को लेपन कीजे॥ नास ताहि या विधि सों दीजे

संग ऊंट के लेडा लीजे॥ वाको अर्क छानि कर कीजे

तिन को गोघीव मंगवाई॥ दमड़ी भरि सेंधो मिलवाई

नास देइ घोड़ा को जभी॥ श्रोणित बंद होइ है तभी॥

दो॰ ऊंटकटे के वार वारि अग्नि सों धूप दे॥

औषधि यही बिचार रोग हरण संशय नहीं

इलाज वार बंद चौपाई

प्रथम सेंक माथे पर करहि॥ हलदी पानी सों अनुसरै

तापीछे यह लेप कराय॥ सोंठ सुहागा पीपल लाय।

पीसि कूटि करि लेपन कीजै॥ सकल रोग घोड़ा का छीजै

अथ औषधि पेशाब बन्द चौपाई

मूत्र रोग घोड़ा के होय॥ जाको जतन करहि सब कोय
पीपल सोंठ देहु पिसवाय॥ नाज़ा मधवन्ती चलवाय
रंचक नोन मिरच पिसवाय॥ देउ करण घोड़ा के नाय
छूटहि मूत्र धार अधिकार॥ मेटहि वा के सकल विकार

दो० रैवे को यह तीनि है मूली अमलीपान
कै कारे के बीज है याते होय न हान

अथ इलाज लीद बन्द का चौ०।

राई मठा देहु पिसवाय॥ कै कारी अर्थ मठा को लाय
दधि खारी सो देहु खवाय॥ छूटे अब्द रोग वहि जाय

दूसरी विधि

दो० । हींग टका भरि लाय कै सेर दोय ले घीउ
दीवा करि के दीजिये कहि घोड़ा सों पीउ

अथ इलाज कृमि रोग हरण॥

दो० जा घोड़ा के पेट में कृमि बहुत व्है जाय
गिरें पटेरे पेट सों दाना घास न षाय॥

राई हल्दी कायफल आनि॥ प्रात होत दीजे नित खान
नीको होय व्याध सब हरै॥ शालहोत्र या विधि उच्चरै

अथ इलाज प्रमेह का

दो० त्रिफला दीजहि खांड सों सात रोज परभात

मूत्र रोगनाशन करै मिटै रोग उत्पात

अथ दूसरी विधि

दो० राल खांड द्वै सेर भरि घोडहि देउ खवाय
वीर्य बन्द ह्वै जाइगो जो यह करो उपाय

अथ षट ऋतु का उपचार

दो० ऋतु बसंत ओर मास दो चैत्र ओर वैसाख
दाना दीजो चना को मनो मिश्री अरु दाख
ग्रीष्म जेठ अषाढ़ है महा अग्नि को मूल ॥
सतुआ दीजै जवन को बनो रहै जो फूल ॥
श्रावण भादों वेद नहि यह वर्षा ऋतु जान
गेहूं को बजरा भलो घीउ खांड में सान ॥
अश्विन कार्तिक शरद ऋतु मोठ मूंग अधिकात
काची दाना दीजिये हल्दी अरु गुड़ प्रात १२३
मार्ग पूस हेमंत है घीउ महेला जान ॥
शिशिर माघ फागुन कहै दाना दीजै मोठ
गुड के साथ खवाइये मिर्च पीपलें सोंठ।
त्रिफला दीजे खाय जो ग्रीष्म अवर वसंत
त्रिकुटा दीजे गुड़ सहित शरद ओर हेमंत
हल्दी वर्षा शिशिर में घोडहि दीजे नित्त
नित्त विचाला दीजिये रोगन करै निरत
मिर्च साथ सो दीजिये होइ महा बलवान

मुरग परहि वाती करहिजो घोड़ाको देय
बात बचावै अंग को सकल रोग हरि लेय

अथ वेजा मोत्तरा नासन विधि

दो॰ तारा माखी लाय करि सोनामाखी साथ
नीबूका रस खरल करि मल्हम कीजै तात
पछ्ना देलेपन कैरे बांध बनाते दि देहि॥
अजामूत्र सोंभिजे करि त तच्छिन नीको लेय
सप्त दिवस पीछे खुले भीजत रहे हमेश
तापीछे जब खोलिये औषधि कीजे वेश

अथ इलाज

दो॰ डरपी सेंधा गौघृत मल्हम सो करि लेय॥
माखी चाय चवाय करि चुपरि तेहि को देय

अथ शिंगरफ गुटिका

दो॰ करष एक सुम्मल सो लेउ खरल करवाय॥
द्वै टंक भरि सबै ले औषधि दीजे डारि॥
सिंगरफ मिर्च सुहागा लीजे॥ गूगल मिर्चै ताहिमें दीजे
अदरक रस में खरल कराय॥ गोली चनाप्रमाण धराय॥
सर्व रोग को दीजे कह्यो॥ शालहोत्रमति में लह्यो

अथ दूसरी विधि

दो॰ इमली और कचनार कोनीम पत्र सम ताय
सिरका में सब औटि के पापर देउ चढ़ाय।

उलहत बांधे सातदिन बकरिन वेजा होय
नित्त निपाला दीजिये जो पहिचाने कोय
टेसू सुवन उसेय करि नित्त चढ़ावे कोय
उलहतही या विधिवादृषनहि होय॥
घोड़ा को रंग पलटो चाहे। कै चाहे कै पेवन लाहे ॥
बाल सफेद करे इहि रीति॥ पावहि मनमंह परतीति
प्रथम बाल वे दूर करावहि॥ तापर सावन घिस २ लावे॥
कूष्मांडरस धोवे ताहि॥ बकरी फिटकरी तापर्हि देइ॥
रतरल करे सावन रस माहि॥ मल्हम करि राखे तेहि छांह
लेपन कीजे फिर २ ताहि॥ या बिधि सो भौवे मंहं वाहि
एक मास में होय सफेद॥ विरले जाने वाको भेद॥

अथ सर्प काटे की विधि

दाना घास दुहू परिहरे॥ लीद करे खुलि के वह चरे॥
वाको जाने सुभग बिचार॥ २४०॥

दो० गरुड़ मंत्र पढ़ बांयके निरविष कीजे ताहि
औषधि वाको सात दिन दीजे ताय मंगाय

अथ इलाज

दो० काना देरी अफ़ी जड़ मिर्चें सम लेय॥
संग नीर में पीसि के प्रात सांझ नित देय.
हय नर को जो दीजिये लीजे तुरत जिवाय
पुनि कीजे जो जथा गति विषविपथ रहि जाय

अथ सपोला को जो खाय॥ घास मध्य घोड़ा पड़ि जाय
ताके लक्षण कहौं बखान॥ जो नर को आवे पहिचान।
बारि बद्दल मुख तें अति छूट॥ ग्रीवा सूजि अंग ते फूट॥

दो० किंजुश्रा टंक सो पांच ले दीजे मिरचैं घीउ
घेर घीउ में बांटि के घोड़हि देय पिवाय॥

ता पीछे यह औषधि करै॥ तुरत व्याध घोड़ा की हरै॥
चौराई जड़ अंड मिलाय॥ आक फूल तासम ले जाय
मिर्च कसौंदी अदरक पान॥ सब को करहु एक प्रमान।
संग घीउ के देउ खवाय॥ विषधर को विष निश्चै जाय

औषधि अञ्जन की सुजुम्म फुल्ली के दे अरिल
अर्क दूध फिटकरी समया विधि जानिये॥
बहुरि मिलवाय कनक में सानिये॥ ॰॥
आनि अग्नि में धरद्दि जला वहि तासु को॥
सुरमा करि दृग देय रोग नास को॥

अथ दूसरी विधि

दोहा मानुष की खुपड़ी तनक अग्नि मध्य ले वारि
खील फिटकरी मिले करि सुरमा करै विचार
दूध घालि के डालिये सात दिवस लौं नित्त
फुल्ली मुजम्मा काटि है सांची मानहु मित्र

अथ औषधि उदरबंद फूल की

उदर होय घोड़ा को बंद॥ औषधि कीजे चेतनचंद

राई मठा में सोफ़ मिलाय ॥ तुरत दीजिये वामिलाय
सोंठि मिर्च यह गोली बांध ॥ मूल द्वार तहं देउ खवाय
टहलावे फेरे बहु बार ॥ लीद करै याही उपचार ॥

अथ औषधि पेशाबन्द की

चौपाई

मिर्च कचूर हि सावन आनि ॥ खरल करहि पानी में सान
बाती देइ नरा में कोइ ॥ बहु पेशाब करहि है सोय

अथ इलाज कलाबंद जीव सूखे का

चौपाई

सेंधो मिर्च दोऊ को लाय ॥ करो दारसम खरल कराय
गोली करि मुख मेले तास ॥ ता पाछे यह देउ प्रकाश

अथ लेप सोरठा

पीपल पीपला मूल सोंठि कुलींजन वैचलै
सब को कीजहि चूर कटुक तेल खरल करि ॥

चौपाई

मल्हम सो करि वाको लीजे ॥ लेपन करि कपड़ा में दीजै
बांधे गले अश्व के कोइ ॥ जो सेंकहि सो नीको होय

अथ औषधि बायबंद की

दो० उदर अश्व के बाय जो बन्द होय अधिकार
शाल होन या विधि कहै वाहू को उपचार
प्रथम सोंठि अजवाय लावै ॥ मैदा घृत में औरावै

मलै उदर को रवा बहु बार॥ तापीछे यह करहु विचार
सोंठि सुहागा सों चरवांध॥ सहजने के रस में गोल बांध
सकल व्याधि चौरासी वाय॥ शालहोत्र कहि सब जाय
एक गोली खादा में देउ॥ सर्व रोग मारुत हरि लेउ॥

अथ हड़वाजान अनासन विधि

दो० उलहत हड़वा जव जब जो यह जतन करै
शाल होत्र या विधि कहै दीरघ रोग हरै।

चौपाई

चूना कली भटा में भरहि॥ कपरोटी करि भुनै धरहि
जब परपक्क होय जरि जाय॥ तब यह मठा लेप तिन वाय
निवउहि के पायन में भरहि॥ सो रस रोग छिन कमें हरै

अथ रसचो को उपचार

हल्दी सोंठि सुहागा लीजे॥ अध्व सुभ पर लेपन कीजे
कड़वा तेल मिलाय भरि बहु रस रोग या विधि कीजे।

प्रथम प्रकृति घोड़ा की गरमी शीतल स्वभाव विधि विचार दोहा

शीतल गर्म स्वभाव यह अश्व सुनि हु दृज होय
शाल होत्र या विधि कहै जो पहिचाने कोय

चौपाई

कुमेत मुंशकी श्रोर समंद॥ गरम प्रकृत होय सुनि चंद
सुरखा सुरंग को हरो बोज॥ पर्खा दुज कहिये लख सोज

नीला गौर चीनी सबजाव ॥ सरद प्रकृति होय देताव
खाकी रंग घोड़ा कहि जेते ॥ अरुन पीत व्है उदय है तेते
है प्रधान सबके अंग पित्त ॥ वात पित्त मिल होय विचित्त
पहिचाने अंग ७ की रीति ॥ करि औषधि आवे परतीत
नाड़ी नैन बतावहि देखि ॥ प्रकृत स्वभाव सबहि करे रेख
औषधि करहि रोग पहिचान ॥ ताके हाथन आवहि हान
सुरहापाहे गोपीनाथ ॥ कान कुब्जि में होय सनाथ
तिनके सुत चारो दधिकाई ॥ इन्द्रजीत लक्ष्मणयदुराई
चौथे ताराचंद कहायो ॥ जेहि यह अश्वविनोद बनायो
हरिपद चित्त नाम कौआसा ॥ पालहोत्र बंदे प्रकाश
कुशलसिंह महराज अनूप ॥ चिरंजीव भूपन के भूप।

सो० यह ग्रन्थ सुखसार चेतन चन्द कहो नय।
लेउ सुधार विचार भूल चूक को क्षमा करि।

दो० संवत सोलह सौ अधिक वार चौगुने आन
ग्रन्थ कह्यौ कुशले शहित रक्षक श्रीभगवान
मास फाल्गुण शुक्ल पक्ष दुतिया शुभ तिथ नाम
चेतन चंद स्वभाषियत गुरु को कियो प्रनाम।
तेदस और आठ सौ इक्यावन पै सार ॥
फागुन शुक्ल त्रयोदशी लिखी वार बुधवार
अश्वविनोदी ग्रन्थ यह शालहोत्र खरताल
प्रति देखी सो कही मैं खोर नहीं नंदलाल ॥

अथ घोड़ा के भेव

बकावरी मुंभकी मूटा जान आगे कुम्मेत वे हड्डी नर में आदि परै तो कफ़ गीरी जानिये पिछले पांव की मुंह पर होय है तुम पुस्तक तो जानिये घोटू की नसजवर परै तो मौं हाड़ा जानियौ पिछले पांव पै हाड़ा जवर परै तो पाटरी जानिये। बरसाती कमरी वामनी पूंछ में तो सह बारगिर परै नाभी अकरव में लालटी का होय के सो ऊरंग होय सफेदी माथे पर होय अंगूठा सों दवे ता को सितरा पेशानी कहै। तिनतल टूटे ताको तिलक तोर माथे पर एक भौंरी तासों सिंहिनि कहवे हैं द्वै भौंरी मढासिंगिनि स्याह तालू दन्मसरी आल में एक भौंरी सों सांपिन द्वै भौंरी दोऊ लगसों बांधे मटूपे भौंरी सों छत्रभंग चूतर पर भौंरी सों खूंटा उपार। रकाव के बराबर पै टतर भौंरी होय सो गूमा। अगले पांव में भौंरी होय सो खूंटा उपार। छाती में भौंरी होय सो हृदयावलि मनीजा के थनी टेढी पूंछ राखै सो कजदुमा। हिज सेहत में जिसके मस्तक में रोग़न गाव या रोग़न कुंजद सफ़ेद न लगाया जाया करै तो अंधा ग्राम मज़बूत या मुखब्ज होता है ऐसी खुश की गालवरहती है कि अगर मस्तक पर इलाऐसा आकिल हो चिया रहै कि मावीनाई में भी मिस्ल वीला के चलता है मगर वमुस्ती धारन की हमेशा खिलाना इसका

इसतरह मुफीदहै वह दूसरे अमराज़ से महफूज़ रहता है सुहागा की खील गूगल हीरा हींग अजवायन कूट शीरी नरकचूर काला विछुआ निरविसी पीपलामूल सांचर नमक आद पाव असगंध अजवायनखुरासानी असगंध गोरी सरराई सज्जी अजमोद कमीला आदि आदआद पाव भरि सब को कूट छान कर सवा सेर चून उड़द का मिलायकर साने पैसे २ भरि की गोली बनाकर मुखारके उस के बाद एक गोली रातव के वक्त खिलाया करे यह घोड़े को निहायत मुफीद है॥

दूसरी बिधि

वास्ते मिजाज बीमारियों के कभी तीन चार रोज़ बरा बर खिलाया चाहिये मिलावा और कुचला सवा २ पाव रोगन कुंजद स्याह डेढ पाव ख़ूब भून कर निकाललेवे वा आमा हल्दी पाव भरि और कुटकी पीपलामूल हींग गूगल भुना सुहागा आध २ पाव को मिलाय पीस लेवे और अढ़ाई सेर आक के पत्ते वारीक करके सेर भर कुंजद स्याह में इन तीनों को ख़ूब भूने जिस्से कि पानी जल जावे उस सफ़ूफ़ को मिला रक्खे दो पैसा भरि दवा आद पाव गुड़ में मिला कर खिलाया करे घा रन कर सफरे में हर रोज़ खिलाना व मूजिब रुक्के मु जनर आमवाह व दफ़ा अकस आदमी कालब है

दो दगल खन गूगल आदसेर बारूद एक छटांक गुड़ तीन पावदून सब को पीस मिलाय मंजिल पर खिलाया करै कि हाथी कम उमर को हर महीने में पंद्रह रोज़ बराबर खिलाये उस का इसलाह मिजाज के के रखता है हरतरह की खूबियां नमूदार करता है ॥

इतिशालहोत्र संपूरणम्

शुभम्

आगे जगह खाली रहने के कारण यह
चूरण मनुष्यों के
लिये लिखे
जाते हैं

अथ मंदाग्नि अजीर्णादि विशूचिका
उपचार

हड़की छाल टंक दो या को महीन पीस टंक दश जल के साथ रोजीना लेय तो आमाजीर्ण जाय भूख बहुत बढ़े अथवा हड़की छाल सेंधो नून इन को सेवन रोजीना करे तो अजीरणज्वर जाय ॥ अथवा चित्रक अजमोद सेंधो नोन सोंठि काली मिर्च यह सब बराबर ले महीन पीस टंक दो गौकी छाछ के साथ २५ दिन लेय तो भूख बहुत बढ़ै मंदाग्नि और पांडुरोग बवासीर जाय॥ ३॥

असली

शालहोत्र

राजा नकुल कृत

इस ग्रन्थमें घोडों के वर्ण जाति और शुभ अशुभ के लक्षण तथा सर्वरोगों के निदान और चिकित्सा ग्रंथ कार ने ऐसी सुगमतासे वर्णन करी है कि जिसके देखने से थोडा पढा भी मनुष्य घोडों के समस्त हालों को जान सक्ता है

इस्को

बाबू प्यारेलाल साहब जिमीदार मौजे बरौठा थाना हरदुआगंज जिले अलीगढ़ ने रईस लोगों के या जो घोड़े रखते हैं उन के उपकार के निमित्त छपवाया

मतबअ मगज़न तुल उलूम मौजे बरौठा मैं छपा सन् १८[illegible]

प्रथम वार ५०० प्रति छपी

क़ीमत ७ आना

श्रीगणेशायनमः॥

अथशालोत्र लिख्यते॥

नकुलोवाच

आदिलग्ना जो कहत हों प्रथम संसकृत सोइ
अब याकी भाषा करूं समझ लेइ सब कोइ॥
विनय करों कर जोरि कैं गणपति बुधि मोहि देउ
भाषत हों इहि नाम कौं खोर मोर नाहिं होउ॥२॥

चौपाई

अहिपति एक रूषी सुर रहई॥ नितप्रति होम यज्ञ सो करई॥
यज्ञ धूम नैनन में लागी॥ अश्रुपात नाले अति जागी॥

दोहा

रोइ अश्रु सो पौछऊ धरनि परे अभिराम॥
वाम अंस घोडी भई दक्षिण अश्वहि नाम॥
ताही की संतान बखानों॥ चार देश की सोई जानों॥

अथ उत्पति देश देश की॥

चार देश की उपज है चातुर लेउ विचार॥
पश्चिम दक्षिण उतर हू पूरव कौ निरधार॥ ६

चौपई

दक्षिण को बल यत्न कहावै॥ पश्चिम कौ कवि शुभ ठहिरावै

उत्तर गौड कहो बल चन्त ॥ पूरब पानी हीन जु जन्त ॥
गोरि नछत्र अठारह जानि ॥ अब मैं तिन के करौं वखानि
ओहानभग्रानपरवरान वताई ॥ अंपत्रतमअंधक देवाजी गाई ॥
तिलंगभुर्जआधीसुरमान ॥ अरवी अरु ईशानी जान ॥
तुरकीजंगल काबिल ऐसो ॥ कशमीरी कच्छी है तैसो ॥
ताजी अरबी कहौं बखानि ॥ इन सौं कहे अठारह खानि

अथ अश्व की आर वल वर्णनम् ॥

दक्षिण अश्व की आरबल कहो बरस चालीस
पुरबी की पच्चीस कहि छीन होइ बल बीस ॥ १०
ऐराबी की आरबल एक सौ अरु पैंतीस ॥
ताजी की बरनन करी चलै बरष चालीस ॥ ११
कच्छी की चालीस कहि कवली बरस पचास ॥
कसमीरी की तीस पुनि तुरकी साठि जु भाष ॥ १२
और अश्व की आरबल तीस बरस चालीस ॥
चातुरलेउ विचारि कैं गिन इनही के बीच ॥

अथ अश्व वर्ण वर्णन ॥

विप्र जु छत्री वैश्य पुनि और शूद्र कौं जानि ॥
जल पीवत हय कौं लखै वरणभेद पहिंचानि

अरल

विप्र वरण हय जानि पिये — इ फोरिकें ॥ वैश्य वरण हय जानि अर्घ मुख वोरिकैं ॥ छत्रान कूपा वोरि पानी पीसे हला

डूबैं॥ ओठन मूं जल पियै सूद्र न जाय छै पाय कै॥

दोहा

जा घोड़ा के अंग में होइ दूध की वास॥
विप्र वर्ण ताहि जानियें नी को ना सुप्रकास॥
अजा गंध छत्री कहो घृत को वैश्य बखानि॥
मीन गंध शूद्राहि कहो कबहुं न नीको जानि॥
विप्र वर्ण सु विशेषता छत्री वरण सुतेज॥
वैश्य वरण कपटी कहो शूद्र न कूदे नेज॥

चौपाई

मंगल वार जाही दिन होइ॥ विप्र वरण हय चढिये सोइ
जादिन पुष्प सीम करि पावें॥ छत्रि वर्ण हय तब चढि-
धावे॥ जादिन कहुं ज्यो हारे चढे॥ वैस तुरी ताही दिन च
है॥ राज मिलाप करण को जाइ॥ शूद्र वर्ण घोडा चढ धाइ

अथ अश्व दंत लक्षण॥

चौपाई

जाके दांत देखियत कारे॥ तीन वरष ते नाहिं अधिकारे
हरे दांत पुनि जाके जानो॥ पांच वरष हय ताहि बखानो
जाके दांत सेन पुनि देखो॥ पंद्रह वर्ष हय ताहि विसेषो
जाके दांत निलाई आवे॥ वीस वरस हय ताहि बतावे॥
जाके दांत संख से सेत॥ वरस तीस की बुध कहि देत।
दांतन छेद मखौची डारै॥ ताहि वरष चालीस विचारै॥

अथ कानलक्षण

दोहा

जासु श्रवण लोह्र कटै जाकूं जानों सोय ।।
सो घोड़ा शुभ जानिये कहत सुलक्षण जोय २३
आंव फन चर पान से जाके कान दिखाय ।।
सो घोड़ा खोटा अधम छिपै छिपाये नाय ।। २४

चौपाई

घोड़ा दौड़ लगाम न लेई ।। छुवन खेंच चढ़न नहिं देई।
अड़ै टुरै और करै पिछारी ।। इतने ऐब कांपिये भारी ।।
पनरे पहुंचे सुंव न भार ।। चरि कें लगें छूछ के बार ।।
मोरा की सी आवे ग्रीव ।। ता चढ़ि चलो पराई सींव ।।
कोने कटि और टंक पछार ।। उर पर छूटै जाकी लार ।।
सीम सुपारी ताकौं रहै ।। मन मोलो सालोत्तर कहै ।।

छप्पय

ऊंचो मुख करि रहै ढुहै पुनि अश्व बनावै ।। प्रथम दा
हिनौ पाउं लाइ ऊंचौ जु उठावै ।। करि हा तोरैं रहै और
निज पिछलौ धर पुनि ।। आंख मूंद पुनि रहै कहै पुनि
लेउ चतुर सुनि ।। ऐसे ऐब घोड़ा निरखि छोड़ ताहि क
रना दरस ।। सुख संपति नासै सवै हय आवे अति ही नि
रस ।। अथ ऐबलक्षण ।।

चौपाई

जो घोड़ा इक स्रो होइ ॥ ताकौं नाहिं लीजियो कोइ
दिन मैं घोड़ा आंसू डारै॥ निसा वारता कौं अनुसारै॥
शोख वंन है ताको नाम॥ सदा धनी कौ बिगरे काम॥
छत्र भंग मद्दू बिच होइ ॥ राज बिगारै छिन में सोइ।
गोम वार ज़ाल धर लयौ ॥ पिंदा सो गत्तता छिन दयौ॥

दोहा

नंग तरेकी भा मरी तासु नाम काहे गोम ॥
पहिले तो स्वामी मरै पीछैं सबौ स्वोम ॥

चौपाई

डंग उज्यारि सूर्ज के कहिये॥ सो सुख एक छिन कनहिं लहिये
दल भंजन जो सविता लिया॥ ताको अपजस कविता किया।
थन अखरव घोडाकैं होय॥रनमें मरे पराजै होय ॥
माथेमें अखरव बह बौरै ॥ ऐसे को देखही छोरै ॥

दोहा

आखिन के तारे निरखि सो ग्गोंजारी होय॥
भौं समीप की भामरी राज बिगारै सोय॥

चौपाई

दोऊ कानन भौंरी कारी ॥अलक भंज नीनामन्हिारी
ऐसो हय जो नल को भयौ ॥राज गयो अविही दुख सह्यो

दोहा

मेंदासिंगिन भामरी जा माथे में होय ॥

अष्ट वर्ष में धन हरै स्वामी मारै सोय ॥

चौपाई

जासु राग मैं भौंरी होई ॥ आप मरैं कै नासे जोई ॥
दोऊ कानन भौंरी देखो ॥ अहित सली ता नाम विशेखो ॥
दांत एक पुनि होइजु स्याही ॥ करै कष्ट नहिं लीजे ताही ॥

दोहा

तीन सुम्म होंय एक रंग एक सुम्म होइ सेत ॥
पतनी मरै कि धन हरै प्रान धनी के लेत ॥

चौपाई

छाती जाकी भौंरी कारी ॥ अलक भंजनी नाम निहारी ॥
बाम कोख कन्या को मारै ॥ दाहिनी कोख पुत्र पै भारै ॥

दोहा

कांधे परी कि भामरी ताको नाम कधार ॥
भली बुरी वह ना करै तोल यहै इक सार ॥
मृग को सी जाको उदर सो हरि नाग कहाइ ॥
वह घोड़ा जा फौज में सोई फौजं भजाइ ॥
अगले पग पहुंचो बड़ो ताको अैब बखान ॥
सो घोड़ा खोटो महा कमी न मारै काम ॥ ३९

चौपाई

जाके भौंरी कांख के पास ॥ लेत धनी को खोवे नाम ॥
तिलक तोरजस रथनें लियो ॥ पुनवि छोह प्रानविन कियो

मार फी अश्व पारीक्षितलीयो ॥ तक्षक डस्यो प्रान विनभयो
हिय को दोष असुर पति लयो ॥ कुटम सहित रामन छै गयो ॥

दोहा

तालू में स्याही भई लयो राव हरि चंद ॥
ताके औगुन ते भरयो नीर नीच घर मंद ॥

चौपाई

जाकी आंख न नारवी दीख ॥ ताको भूल सुनो मति हींस ।
डेरी गल जुलह्र सन होइ ॥ मध्यम जानों ताकों सोइ ॥
कारी आंख एक आछो होय ॥ इक मंडलि कहावै सोय
इक मंडल जुरजो धन लयो ॥ ताको राज विगर सब गयो ।

दोहा

कुंडी भीतर अश्व के पडी सफे दी सोय ॥
अन्न दोषजा सों कहैं कष्ट अन्न को होय ४२

अथ अश्व शुभ लक्षण

दोहा

लिंग मूल भौंरी जो होइ ॥ जातें शुभ करता नहिं कोइ
लेला भौरी उत्तम राज ॥ जाके पास वंधे गज राज ॥ + ॥
जा घोडा के माथे टीका ॥ सो तो सब अश्वन ते नीका ॥
नकुआ वीच चौरी जो परे ॥ द्रर धनी की चिंता करै ॥

दोहा

घोंटू पर भौंरी परै नीचे कूं सुख होइ ॥

भुज वल ताहि वखानियें उनमलच्छिन सोइ

चौपाई

वीच पीठ पर भौंरी आवे ॥ सो वह राजस नाम कहावे ॥
वगल दाहिनी लहु सन होई ॥ वंधे पड्ग वगल जो सोई ॥
मुह पर सेत गले पर सेत ॥ नाम अष्ट मंगल कहि देत ॥

दोहा

भौंरी होय जो कंठ मैं नाम कंठमनि सोइ ॥
ऐसा शुभ घोडा मिलै रुद्ध सिद्ध धन होइ

चौपाई

रा तो पाउं दाहिनो होइ ॥ शुभ मंगल जासों कहे सोइ
कोष दाहिनी भौंरी जाके ॥ श्री धर नाम लच्छिमी ताके
सुम्मन वार जासु कें होई ॥ चिंतामनि शुभ जानों सोई

दोहा

हिरदे मैं भौंरी परी सो महिमान कहाइ ॥
अन्न अगम ताके रहे स्वामी सुक्ख कराइ

अथ घोडा व्याने के लछिन

दोहा

राति व्याइ सो नित्स कहावे ॥ दिवस व्याहि सो शुभ है
वतावे ॥

अथ घोडोंके इलाज

लिख्यते॥

अथ व्याधिलक्षण

चौपाई

साठि प्रकार कहत मुनि शूल॥ और अठा रह जानौं भूल॥
वात सात रस कहिये चारि॥ सात दोष क्रम कहत विचारि
विन चेलिय चरम निदान॥ हडा डाडो गाछे जानि॥
फुकाजये षिस्त कहो होइ॥ क्रमते इनके व्याधि वताय॥

अथ शूललक्षण

सकोरे जो महा दुख लहै॥ वार वार पुनि लोटत रहै॥
कोष करे चितवन अत अंत॥ तासौं कहत शूलसतवत
टंक चारि अज अजमाइनि आनि॥ टंक नौ य घम
राजु वताइनि॥ और जो घीव मेलिकै खाय॥ देत शू
ल मल वंत नसाय॥

अथ मूत्रवंतशूलल०॥

दोहा

डांडो टोरै शूठकी कररको षि पाहै जानि॥
मूत्रवंत यह शूल है भूमि संघे जो निदान

औषधिचौपाई

गजपीपारपीपारमगवाय ॥ ॥ डेढसेरदारूमगवाय ॥
घीगुडसोंदिनसातकदीजै ॥मूत्रवंतभूलहिहरिलीजै ॥४७॥

अथक्षुधावंतभूललक्षण

कोषचोरछातीहनेफिरफिरकेंषिजिदेख ॥
क्षुधावंतयहभूलकोलक्षणकहेंविसेख ॥
छालसहजनेकीमगाओरजोसेंधोनोन ॥
ताकौंतुरतमगायकेंनवपावेहयचैन ॥
घमराओरदूमरीकरई ॥ बीजघांटिताकौंमिलवाई ॥
लेओषधिसमभागवताई ॥ तेलमेलसनचायखवावहु
क्षुधावंतयहभूलनसावहु ॥

अथवातभूललक्षण

टूटेवाधेआपुपुनिनषकेकहतवखानि ॥
वातभूललक्षणकहेलीजिसोपहिचानि ॥

अथओषधि

दोनोंवचओरकूठमगाइ ॥ दीजैभेदपषानमिलाइ ॥
सवओषधिसमघीवजोलीजै ॥ टंकतोकभरिवामेंदीजे
राईमिसरीमिलवेजोई ॥ वातभूलफिरहयनाहिंहोई ॥

अथरक्तप्रमेहलक्षण

नकुवतेहैलोहूवहै लच्छननाहिविचार
रक्तप्रमेहयहजानिकेनवकीजेउपचार ॥
जुनरीकूटवदाइकेंगायदूधमेंसान ॥

नासदेय नवही मिटे रक्त प्रमेह की हानि ॥

अथ क्रम भूललक्षण

नाभि औंचे सूंघन लगै चरै नहीं पुनि घास ॥

मूलनास हय क्रमयहै काटत कीडा मास ॥

औषधि अरल

त्रिकुटा कूट मिलाय कु ताहि मगाइये ॥ वच और दारू लेउ मवै मिलवाइये ॥ छल और गुड मैं सानि टका नौ कभर दीजिये ॥ क्रम को नासे भूल जानि सो लीजिये ॥

अथ भरम भूललक्षण

आंखि मूंद जो घोडा रहै ॥ चारो चरै न आवुधि करै

ऐसो लक्षिण हय को जानैं ॥ भर्म भूल पुनि ताहि पछानै

अथ औषधि

सोंठि हींग वच सेंधा नोन ॥ गज पीपर पीपर है नोन ॥

टका नौक भरि सम करि दीजे ॥ घीव मैं प्याइ नहिं सो दीजे

दोहा

घीव तेल सों मर दिये सो पुनि देत बताय ॥

भिरम भूल नासै सव है हय आछो है जाय ॥

अथ मुख भूललक्षण

दोहा

दांतन सों अुविटेक कैं जो घोडा रहिजाय ॥

ये लक्षिण भव भूल के मनमैं निरखे ताय ॥

औषधि

सों , मिरच पीपरि लहसन मग वाइये ॥ वाय विडंग समा
न सनी मग वाइये ॥ टका नौक भर घीव में ताहि मिलाइये
मुख को चचल भूल कों हाल नसा इये ॥

अथ रक्त वात भूल लक्षण

टूट बंधि लोहू पुनि रहै ॥ दूखे पेट धांस अति सहै ॥
ऐसो लक्षण लेउ विचारि ॥ रक्तवात भूलन सिर दार ॥

औषधि

अजमाइन पुनि हई वखानी ॥ वाय विडंग लेउ बुह आनी
बीज तुरैयां लावे और ॥ नीबू पान कहै ता ठौर ॥ + ॥
सम करि भाग औषधी लीजे । टका पांच भर घी में दीजे
रक्तवात को भूल नसावै ॥ फेरि विथा हय पास न आवै ॥

अथ अजीरन भूल ल०

अंग छलीलो ट्तु रहै कारे आखि भीतर मित
भूल अजीरन जानिये लक्षिण घर कें चित्त

औषधि

सोंधा सोंचर हींग वच पहलीजिये ॥ अजमाइनि पु
नि लेय कि चूरन कीजिये ॥ देय दही में सानि अयव औ
षधि कही ॥ परहाजी भूल अजीरन जाइ फेर उपजे नहीं

अथ अदक भूल ल० ॥

चौपाई

लोटतु रहै पुनि पांय पसारै ॥ खांसी करै न आंरा रिखवारे
ऐसो लच्छिन देखे कोई ॥ साधि भूल क्रम जानैं सोई ॥

तोटक छंद ॥

अजमान छुहीर कहावै ॥ इनमधि कूट कें आदौ नावै ॥
सब कों मेल दही में देवे ॥ रोग जाय निश्चै करिलेवे ॥

अथ असाधि भूल क्रम

कोष दोष फिर फिर लखै षांसी करै अपार ॥
रोग असाधि फिर जानियैं कहिये क्रम निरधार
गेरू और सहजने की जड लेय मगाय ॥+॥
अजमायनि समतीसरी बाइविडंग मगाय ॥
सब लीजे नौ टका भरि गुड मैं सानि कें देय ॥
भूल क्रम जो अश्व को तुरत दूर करी देय ॥

अथ ज्वर लक्षण ॥

घास चरै घरी देखकें तब पुनि करै विचारि ॥
निश्चै मन मे जानियै जुर को है अधिकार ॥

औषधि

घुंडी वाय विडंग लेय मगवाइये ॥ त्रिफला भगर सोम न आइये ॥ निरगुंडी रस डेढ सेर करि सानियैं ॥ देइ औषधि सब हि कि ज्वर हि नसाइये ॥ महाजुर अंकुस औषधि कीजिये ॥ कहे नकुल यों भाषि अश्व सुख दीजिये

॥+॥

अथ अथ वायजुरलक्षण ॥

दांत बांधि इक कर रहै सन्निपात अति होय ॥
इन बातन सों जानियें वाइकजुर नव सोय ॥

औषधि

दशमूल जर हरडे कहो ॥ कदम कोर गुर डारै मही ॥
दाख मेलि जुत काढो प्यावे ॥ वाइकजुर नव तुरत नसावे ॥

अथ अश्लेषमजुरलक्षण

नोरई जर अरु मूसरी हरद संक करि देइ ॥
हय को जुर असलेषमा तुरत दूरि करि देइ

अथ पित्तज्वर लक्षण ॥

नकुवा डारै ही रहै अंग जु तातो होय ॥
पित्तज्वर लक्षण यहै चातुर जाने सोय ॥

औषधि

डेड सेर गऊ दूध मगावे ॥ पीपरि लाख समान मिलावे
औटि डारि फिर ताहि सेरावे ॥ प्यावत जुर कौं मार भगावे

अथ मूत्र भूललक्षण ॥

मूत करत हय निरखिये पीर करत है ताइ ॥
गुर चूना लै दूध मैं सोई देई पिवाइ ॥ + ॥

अथ रसकंपवाइलक्षण

रसवाई पाइनि धुनि होइ ॥ और गूमरी लागै सोइ ॥
छेद गूमरी मैं पहिचानै ॥ वायजि ही रसकंप बखानै ॥

औषधि चौपाई ॥

जवाखार और साजी लावे ॥ और इमली की गिरी मगावे ॥
इनको पीस लेप जो कीजे ॥ पट्टी बांधि नाहि पै दीजे ॥+॥
अजमा इन पुनि लहसन आने ॥ दारू वेडंग सोंठ वच जाने ॥
गुड मिलाय कैं औषधि दीजें ॥ पूरे घाव यतन यह कीजे ॥

अथ मूत्र त्रिभंगी भूल लक्षण ॥

जाहय कौ सूजै महा दौरो थान वनाय ॥+॥
छेरि देहि नाकौ वहुत सूल त्रिभंगी आय ॥

औषधि अरल

भारे सौ निम्बू रवा निये ॥ लहसन और मिलाय सवै स
म ठानिये ॥ पाव सेर लै घोव में तिन कौं सानियें ॥ परिहां
मूत्र त्रिभंगी जाय सांच करि मानियें ॥ ६७ ॥

अथ विलवन रस ॥

सुम्मन ऊपर लेवहे फैल फाटि रस सोइ ॥
विलंभन रस जा नियें इय के लक्षण जोय

औषधि चौपाई

हरडे खेर सुपारी लावे ॥ टंक नोय भारि सम पिसवावै ॥
नोन तेल सौं लेपन कीजे ॥ पारे सौं पहलें घिस लीजे ॥
लाल फिटकिरी तोरो आनि ॥ वेंगन भारू ताहि वखान
कारीजीरी सम करि जानों ॥ ऐसें सवरी औषधि ठानो ॥

दोहा

अंइ पान करिवांधियै करिये यहउपचार ॥
सूरज उंदे ने सात दिन तव थंभण रसदार ॥

अथ सुन्नवायलक्षण

वायें सुम अगे रहे अरु वाम पग तानि ॥
सुन्नवाय ऐसें कहो लक्षण कहत वखानि

तोटक छन्द ॥

वच पीपरे पीपरा मूल जु लै ॥ अजमाइन वाय विडंग जु दै ॥ सेंधा सौंफ ले चूरन करै ॥ नीबूरस पाउसेर लै करै ॥

दोहा

यह औषधि गुड घीव सौं सानि देइ दिन तीन
सुन्यवाय यासौं घटै तुरत हि डारे हीन ॥

अथ उचानवाइजन ॥ दो०

अंगरिवन के तारे फिरैं ताते घास न खाय ॥
वाहि कहत उच्चान है इन लच्छिन ते आय

अरल

छालि सहजने की टंकनौक भरि लाइये ॥ वच घसरा चटवायकि वाइमिलाइये ॥

दोहा

टंकनौय भरि लीजिये दीजै तुरत खवाइ ॥
घीव अरु गुड अचमन करै वाय सवै मिटजाइ

अथ कपोटवायल० ॥

अंड सूजि हय के रहैं लक्षण कहत विचार ॥
वाय कपोत वासों कहैं तुरत करो उपचार ॥

औषधि ॥ दोहा ॥

घीव तेल सों मर दिये करै नहिं कछु और ॥
फिर खावे की कीजिये लावे औषधि और ॥

औषधि ॥ दोहा ॥

सोंठि कदाई दोनों लाई ॥ पीपरो बवतामें गिरवाई ॥
ऊमरि की जड़ खोद मगावे ॥ वायकपोत को मार भगावै ॥

अथ मुखवाइ लक्षण ॥

मुख सूजे और आंखि को लच्छिन जानें सोय ॥
मुखवाई यासों कहै करै विधाना जोय ॥ १

औषधि अरल

जवाखार और हर्ड दोऊ लै आनियें ॥ अजमाइनि और सर सों दोनों जानियें ॥ सबको करि एकत्र ये औषधि मानिये
मुखवाई मिटजाय तुरंग मुख आनिये ॥

अथ गुल्मवाय लक्षण

परें आंग सब गूमरी ताको भेद बनाय ॥
देहै पानी सो कटे गुलम वाय काहिजाय ॥
तेल लगाइ मिटाइये करै न और उपाय ॥
गुल्म वाय की औषधी यासों तुरत नसाय

॥५॥

अथ रसकुंडली वाय॥

पौसा सी सब देह में परैं गूमरीजाइ॥ वाय कहत रस कुंडली तबही ताय बताय॥

औषधि अरल॥

त्रिफला त्रिकुटा और जो हर्ड बताइये॥ सज्जी नीबू पात जो घोट मिलाइये॥ छेरि दूध सों घोरि जु मरदन कीजिये परदा औषधि नाहिं यही का हि दीजिये॥

दोहा

अजमाय नि और सौंफ सम लह सन लेय बटाइ घीव डारि रस कुंडली दीजै तुरत खवाइ॥

अथ गलग्रहल०॥

आंखि मूंद सुख चाहन लगे न कुअा खैचे सो इ॥ गलग्रह वाइ सो जानिये इनल छिन ते होइ॥

औषधि चौपाई॥

मरदन ताने घीव सों करे॥ रवैवे की औषधि अनुसरे॥ महि घर से तु जुजीरो लेइ॥ वाय विरंग मिलाइ जु देइ॥

दोहा

घीव सौ सानि खवाइये यह औषधि सिरताज गलग्रह यासौं जायगी यह गज कौं मृगराज॥

अथ अतीसारल०॥

दोहा

अथजु नानो होयपुनि इन लछिन नेजानि॥
अतीसार हयको लषे बुधलक्षण उनमान॥

औषधि

प्रथम वेल को कवलु काहि दूजे दाड़िमजानि॥ तीजे जाइ फल वांटि दही मैं सानि॥ देय खवाइ। डराइ अन मन मैं याकौ गुण कहो अतीसार कौ लेइ सुखाइ कें॥ जोमु ख डारे चेति कें॥२२॥

अथसंकनानरी॥

नकु अन है खांसत रहे सो विचारि निरधार॥
सकल रोग की जर कही इह रस संकनार॥
हींग सौंठ को नास दै लहसन घीव मिलाइ॥
हयखाइ संकनारि को फेरि नास नावाय॥

अथकोलदोषादुतेश्राखरी

सेकि जु वांधे पट हरी वाटि जु पांचो नौन॥
या परवाय रहि जाय वो औषधि कहिये तौन
साजी सेंधा फिटकरी राई मिरच अरुसोंठ।
घीवडारिके यहकरे कालि दोषकी गांठ॥

अथआछेदोपल॥

सूजै अधवर आंग मैं छातीयो पुनिजानि॥
याल छिन नेजानिये आछ दोषपहिचानि॥
योरो सूजे सें किये वहुत होयतो दाग॥+

फिर ओषधि लै कापडा तासौं मूजन बांधि ॥

अरल

मैं घा सौं चर नोन लोन मगवाइये ॥ इमली जड पुनि लेय तीन दिन कीजिये ॥ दोहा

लहसन और अजमोद लै घी संग देइ खवाय
नर निहचै करि जानिये मूजा पट कै सुजाय ॥

अथ असवारी चलत कौल ॥

असवारी मैं मंद चलै मूंद रहै निज आंखि ॥
भीतर खैंचै नाभि को ओषधि कीजे साखि
दारु हरद हरदी कही सरसों राई खाय ॥
घी और गुड सों तुरत ही हय नीको है जाय

अथ घावलगे को लक्षण

पीव करै कलि के जु हय कसमसाय उनमान ॥
घावलगे के घाव कहि कहियो दिल मैं मान ॥

चौपाई

धव धनियां मेथी लै आवै ॥ हर्ड चिरोंजी ताहि मिलावै
पेड खिजूरा को रस डारै ॥ आध सेर घृत मैं लै डारै ॥

दोहा

ओषधि देइ खवाइ कैं करै न कछू विचार ॥
छांडि पीव पुरि आवही विकट है घाव अपार

अथ घोडे का पेसाव न थमैं ॥

वार वार मूतन रहै निसि वासर हय सोय ॥
ताकौं औषधि कहत हौं सुनौं सयाने लोय ॥
मिसरी सेर दो लायकैं बीज कांकरी दाख ॥
मूत न लागे ठीक सो दे खवाय पुनि साने ॥

अथ मंदाग्निल ॥

आन न आवै कैसेउ निसि दिन कहत दखानि
ताकी औषधि कहत अब सब नर लीजो मानि ॥

सवैया

सोंठि चिराय तो पुनि अजमायन सौंघा सुहागा जायव खानि ॥ और पान नौ चूके पौंछि आगि पै सेंके लेय जो आनि ॥ बाय बिडंग कूटा ई होय ॥ कहत सवैये लेइ सम न ॥ गुड घी सौं सानि कैं देइ ॥ मंद अगिन दूर कारे देइ ॥

अथ झोलामारे ॥

झोला जा तन जानियें जो नर करै उपाय ॥
मराजे देषि औषधि करै नासौ झोला जाय

चौपाई

धना सौंठि जीरा चट चाय ॥ वच दोऊ लीजै मगगाय ॥

दोहा

ये औषधि सव कीजिये सौ रव लीजिये सान ॥
और खुद वायमगाइये फल सहज ने जाने ॥

जेवटवायउरायकेकीजैंकुवयअमोल॥
हयकौंदेइपिवायकैंभोलाकोदेयठोलि

अथखरीटकेल०॥

लैंझेतिल्लनपिसायकैंदेयतेलमिलयाय॥
फिरिहंडियामैंडारिकैंलीजेतुरनउदाय॥
फिरघूरेमैंगाटियेहंडियाकोदिनपाँच॥
छटेदिनालगवाइयेतेलवनेंगुनसांच॥
तेललगावैआगसौंयहीप्रकारखवाय॥
फेरलेयअनवायकेंखाजमहावलजाइ॥

चौपाई

पांचौखारीनोनमंगावै॥आदसेरतिलतेलबनावै॥
सोलिवनायपांचौंसुधिवावै॥दूधआकनौटंकमगावै
यहऔषधिवटवायमगाई॥दहीमेंडारियेफेरकदवा
ई॥पहरएकमरदनकरकही॥फिरघोडाअनवावैसही॥
पीरीमाटीसौंमलवांवै॥नवअनवायखाजमिटजावै॥

अथगंठनरोगल०कुंडलिया॥

काटिकाटिपीववकेवचाइलेइलोहूकेनीबूमगायका
गदीपकेजायकैंदेयमिलायजुचूनाछापिकोछानि-
कैंताकोसोलेइवनायलेपनकरायदीजैनीकोहोय
तेरोरोगगंठननिकारिकैं॥

अथचकवामारेकोल ॥

सीसे पत्र बनायकें पायनमें बंध बाय ॥
ताऊपर तेदागिये रोगजु चकवाजाय॥

अथचांदनी सोलकवाकहैं

प्रथम एकजाय फल लावे॥ तामें मिरचैं फारिभरावे चिरवा पेटजाय फरभरे॥ मुरगापेटमैं चिरवा धरे॥ दूधसेरदशफेरमगावै॥ तामैं मुरगा कों चदवावे॥ मुरगा कादिलेइजोतबही॥ नौनी तेहि बि लोइकदवा ही॥ वोनौनी हय आंखिन आजे॥ अंजन अंजन चांदनी भाजे॥

अथघोरीसहरानी

मुरगाके पेटतेजायफल निकास मिर चैंनौनो कोअंज नदीजे॥ दोहा

घोडी सह्हरानी होयतौ कीजे यहै उपाय॥
नीबूखायपसोसबदाजिये सैन सिकाय॥

अथबेलकूं चौपाई॥

कारोजीरो पाहिलें लावै॥ चारपैसा भरजो बतावे॥ भूंजगोरवरू पांचटकाभर॥ लेउबीज पुनि बीनसुक्कर मरकर हींसकीजर लावे॥ माजू फल तहां औरमिलावै इनमैं मिरचैं कहींबखान॥ तीनतीनपैसा परमान॥

अमरे सेर चार सो आने ॥ काहिये औषधि तिनमें मानें ॥
चौदह गोली कर उनमानें ॥ एक जु दीजे गोली पानें ॥

दोहा

गोली एक रवबाय कें ऊपर दूध पियाइ ॥
सेर भरो जो मातही जाय सु बेलि सुखाइ ॥

चौपाई

लावै खोद इंदरानी कीजर ॥ देदै बीजले सौंवे सुन्दर ॥
ये दोनों औषधि बटवावे ॥ पानी बासि संग रवबावै ॥

दोहा

ऐसे घाउ सुखाय कें सुनो सयाने लोय ॥
बेलि सुखिये तुरत ही फेर न कबहू होय ॥

हड़ाको

पत्थर समवकुचो संग वावे ॥ दोऊ कूटमें हड़ई मिलावै ॥
मनसल और सुहागा डारै ॥ जवाखार सरसों निर धारै ॥

दोहा

राई साजी चोख लै सम करि सबै बटाइ ॥
मूसरी के संग एक की बाधे हड़ा जाय ॥

अथ घोड़ कीदारू

ग्गल १ सुहागो फूला १ ॥ साबुन १ ॥ हरद १ ॥ पोस्त के
डोडा १ ॥ सोठ के चूनमें मांहि गोला बांध सांझ सबारे देइ
सरदी जाय रोज तीन देउ ॥

अथ घोडेके छानोंबंदकी दवा

गूगरदका एकभर १। गायके दूधमें घोर नाहिंसो पिवाई छातीखुलै आगुखुलिजाय सान दिना देय ॥६४॥

अथ बाहेकीकारोग

जीरो कुचिला लेइ सोंठ चूरन ताहि पुनि देहि लेपन वा दयहेकोनासै ॥६५॥

अथ खाजकी दवा

बाकुची मनसिल गंधक आनि ॥ वायविडंग चोख जो मानि ॥ पीसकूटकैं इकतककीजे ॥ पानी संग सब को धरि दीजे ॥ प्रात मयैलै करुओ तेल ॥ घोड़ा अंग लगावै मेलि ॥ घडी तीन घाममैं राखै ॥ पानी मैं धोवैहरि भाषै ॥ रोग नसै जो घीवलगावै ॥ खाजखारिहकौं तुरतनसावै ॥

अथ विसवेलकी दवा

पहिलैं लोइलीजे ये चार ॥ वंदखोलपीछैं उपचार ॥

मल्हमविधि ॥

एकएकवट घृनमोंलेइ ॥ सौ बारैं घृतकौं धोलेय ॥ + ॥
पान वमूर नीम केलीजै ॥ गांठसींगियासहितजोकीजै ।
मुरदासंग सुहागालीजै ॥ इनकोपीसमिहीनकरीजै ॥
छेरी छीरमैं घीवमिलावै ॥ खैरसुपारी सिंगरफलावै ॥
करुओतेल मोम लै आवै ॥ याविधिसबकी मल्हमठानैं ॥
आगअंगफोहा तहां धरै ॥ निश्चै सो विसवेलै हरे ॥

अथ मृत्रबंदकी दवा

सीरा प्रथम पानको करै ॥ पकी गमोरी सम अनु मरै ॥
घोडाकौं दीजे भर नार ॥ तुरन देइ पेसा बांहे डारि ॥

अथ खंजीदबाइकीदवा

कीरी जीरी मिरच मगावै ॥ स्यौन सुहागकी कर वावै ॥
सज्जी कुटकी राई लेय ॥ सबकों पास मिला कर देय ॥

अथ मसाले घोडाके पाचनको

सोंठ सेर ऽ॥ मिरच कारी सेर ऽ॥ पीपर सेर ऽ। पीपरा मूल से र ऽ॥ हर्ड काव फल सेर ऽ॥ वहेडे काव फल सेर ऽ॥ कंजा की मींगी सेर ऽ। घुडवच सेर ऽ। काल मर सेर ऽ। आंवा हरदी सेर ऽ। गूगर सेर ऽ। हींग टका भर। बिसखपरे की जड सेर ऽ। नोंन पांचौं सेर ऽ॥ अजमायन सेर ऽ॥ राई सेर ऽ॥ साजी सेर ऽ। सुहागा कूला ऽ१। कारी पंदा ल ऽ॥ फिटकरी सेर ऽ। गूलर की छाल सेर ऽ। इन सबका चूरन कार चून मैं मिलाय देय तो बादी जाय सूलजाय सरदी जाय जहर जाय भूख खुले मोटा होय गांठि स जन परक जाय ॥

अथ वायगुल्मकी दवा

हींग टका भरि तामैं देय ॥ जवाखार और वाय विडंग ॥
सांचर सोंट और असगंध ॥ अजमायनि सम भाग कराइ
इन सबकों लीजे पिसवाय ॥ अदरक रस मैं गोली-

वांधि। रांनें सब औषधि कूं साधि॥ गोली एक जु घोडा दी जे॥ वायगुल्म रोग है हरि लीजे॥

अथ घोडे के मोटे होने को दवा॥

चारसेर महुआ मगवावै॥ औसी लैसो भर सुजावे॥ मेथी अजमायाने सम भाग॥ टका एक भर खील सुहाग गुड तोंसा नि लेय सो धरे॥ मोटो होय जु सुखभरे॥ नकुल कृत प्रथमोद्देस:॥

अथ बत्तीसा मसालो सर्व वायपर॥

हर्ड १ भर। बहेडे १ भर। आमरे १ एक टके भर। बडी हर्डै १ टके भर। सोंठ १ एक टके भर। कालीमिरच १ एक टके भर। पीपर १ टका भर। पापरा मूल १ टके भर। पोहकर मूल १ टके भर। कुटकी १ टके भर। कीरीजीरी १ टके भर जीरा स्याह १ टके० जीरा सफेद १ टके० हलदी १ टके० दारुहलदी १ टके० चीते की छाल १ टके० कुचिला १ टके० वायविडंग १ टके० वायसुरई १ टके० वापचुम्मा १ टके० अजमोद १ टके० कायफल १ हींग १ बच १ देवदारु १ सज्जी १ सुहागा १ सेंधा नोन १ टके भर० कालानोन १ टके० सांभरनोन १ टके० खारीनोन १ टके० घुडबच १ टके० मेथी के बीज १ टके० कचरिया १ टके० तेजबल १ टके० वायतुमरा १ टके० इन सबको पीस चूरन कर एक टका नित्य देय तो सर्व वायु जाय॥

अथमुहांकीदवा ॥

घोडेकेमुहमैंछालेपड़जायतासैंमुहांकहतेहैं ॥ घास नचरीजायतबमालूमपडेतबमुखमैंदेखलेयफलक इलायचीछोटी १। तवाखीर १। खैरपापरी १। मउषसैंमि लायमुखकेभीतरलगावैदिन ८तौफलकमिटै ॥

अथवायभूलकोपीरकौसो दवा

अंडीकोतेल १। सरसोंकातेल १। तिलकातेल १। गाय काघी १। दूध १सेर सबकोमिलायनालिमैंकरिकेंप्या यदेतौभूलजाय ॥

अथकलेजाफटेकीदवा ॥

फेफनेडारेलालसफेदतौकरेजाफटोजानियें ॥ गायकाघी ऽ॥ सेर काली मिरच १। टका भरपीसघीमैं- मिलायनालसौंप्यावैतौरामकरैतौआरामहोय ॥

अथठंडोमसालौ

जेठमासमैंवाचौमासेमैंदेयलीदवासूंकौसोनकौलीदकौसंगीपानीवासूंकरत है सो पानी बंद होयवासंनकौ घास दानोंपचै हरदीतीनपावऽ॥। हाल्यों ऽ॥ कुटकीऽ॥ कारीजीरीऽ॥ राईसकराऽ॥ सज्जीलोदनऽ॥ सोयाकेबीजऽ॥ पमा रकेबीजऽ॥ पीपरामूलऽ-वायविडंगऽ। मिरचेंदषिनीऽ। चूरनसबकोकौरअद्र ककौरससेर १मैंसानिकैंदेयतौमसालौगरमनकौसबरितुमैंषवावैसेवन करैगरमीनकरै॥ इति

جوہر حکمت — تین روپیہ
اسمین ایسی باتین ہین مخزن الادویات تمام ادویات
کے نام فارسی - انگریزی سنسکرت اور اردو مین
مع خواص تشریح جسمانی اعضا و رگ و ریشہ کے حالات
مع تصاویر و نام چار زبانون مین تشخیص تمام
بیماریون کی شناخت اور اُنکے نام چار زبانون مین
قرابادین - ہندوستانی مرکب دوایات کا حال
ایورویدک کے چٹکلے اور حکمی کشتے وغیرہ یونانی دوایات
مشہور انگریزی ادویات مروجہ کا مفصل بیان
زہرون - کشتون ملائون کا بیان علاج الامراض
ہر مرض کے علامات اسباب - اقسام - پرہیز
علاج بطریق ڈاکٹری طب یونانی ویدک مصری
مفید و مفرد ادویات کے نام حفظ صحت -
تندرستی کے اصول - خوراک لباس موسم
وغیرہ کی نسبت ہدایات - اقوال حکماء سلف
اصطلاحات طبی کی تشریح چار زبانون مین
پیمانے اوزان - مصنفان طب کی تواریخ
وعلاج کے مختلف طریقے ...۳۰۰ صفحے
جوہر زراعت - آٹھ آنہ کھیت کی پیداوار و اصول
کاشتکاری کا بیان -
جوہر ریاضی - آٹھ آنہ تمام ریاضی کا مجموعہ علاوہ
نئی چیز - ۲ - دل لگی اور عقلمندی -
کتابوں کے ملنے کا پتہ - بابو پیارے لال زمیندار برہٹا ڈاک خانہ ہردواگنج ضلع علیگڈھ

قدر گوہر شاہ داند یا بداند جوہری

نئی کتابین - آجتک دیکہی نہ سُنی - عجائبات دنیا کا آئینہ - ترقی کا زینہ - اور معلومات کا خزینہ - ہر ایک اپنے مضمون مین کامل معتبر مجرب اور کار آمد - ہر ایک کتاب مین اتنا مضمون کہ اور دس کتابون مین نہ ملے - عبارت مختصر تحریر گنجان - اسیواسطے اسقدر سستی اور چہوٹی - ایک صفحہ مین دس نئی بات معلوم ہون - انکو ہندوستان کے علاوہ برہما بلوچستان تک کے ہر قوم اور ہر پیشہ کے اصحاب برابر شوق سے خرید رہے ہین - ایکساتہ سبکے منگانیمین محصول کی کفایت - آخر منگانی سب پڑینگی - اتنی ہمت نہو تو ایک بطور نمونہ منگا کر دیکہیو -

دیکہیے ہماری صفائی معاملہ - تعداد صفحات بہی بتلادی - اب خوب سوچ کر کتاب منگائیے -

اشتہار کے موافق نہون تو ہم واپس لینے کے ذمہ دار

تمام کتابین پہینک دو اور صرف ہماری کتابین پڑہ کر ہر فن مولا بنجاؤ - مگر سب کتابین منگاؤ کسیکو مت چہوڑو ورنہ اوسیقدر کمی رہیگی - دوستون کو تحفہ اور طلبار کو انعام دو تو ہماری کتابین - الماریون مین سجاؤ بچونکو پڑہاؤ - اور ہمیشہ پاکٹ مین رکہو تو ہماری کتابین -

انکے ذریعہ سے ہزار ہا روپیہ کمالو - یا اپنا صرف بیجا بچالو

ہمکو دہوکے باز سوداگر نہ سمجہیے - ایک دفعہ ضرور آزمائیے -

کچھ تو خوبی ہے جب - ان کتابون کی تہوڑے عرصہ مین ولایت تک دہوم مچگئی بڑے معزز افسرون اور عالمون نے انکی بڑی تعریف کی - اور راجہ نواب وزیر ڈپٹی کلکٹر ڈاکٹر ساہوکار رئیس سے لیکر پٹواری اور چوکیدار سبکے ہاتہون مین پہیل گئین -

یہ کیا بیچنے کے قابل ہین مگر آپکی خاطر - اور زمانہ کی خوبی

ہماری کتابون کی قیمت بیشک زیادہ ہے مگر مال بہی ویسا ہی عمدہ ہے - اگر ہم بہی فضول باتونسے ورق سیاہ کرتے تہوڑا دودہ اور بہت سا پانی ملاتے خراب چہپواتے موٹا لکہاتے تو سستی بیچتے اور آپکے وقت اور روپیہ کا خون کرتے - یہ کتابین تو ہزار ہا روپیہ کہو کر صدہا جلدین پڑہ کر اور اپنی عمر اسمین برباد کر کے تیار کرپائی ہین -

قیمت بہی کچھ زیادہ نہین - غنیمت ہے جو دو ایک روپیہ کے خرچ مین کسی مضمون سے واقفیت کامل ہوجاے

نمونہ نمبر ۱۵ - ماہ نومبر ۱۸۹۶ء - پیارے لال زمیندار بروہا ڈاکخانہ ہردواگنج ضلع علیگڈہ

हमारे पुस्तकखाने में

एक प्राचीन हाथ की लिखी पुस्तक शालहोत्र की धरी थी उसको देखकर जिस घोडे का इलाज किया उसी को तुरंत आराम हुआ इस पुस्तक पर नकुलउवाचः लिखाथा इससे और भी निश्चय हुआ कि यह ग्रंथ प्रमाणीक है परंतु इस पुस्तक के पन्ने खंडित और कीडों के खाये थे इस लिये बडे श्रम और व्यय से देश के उपकारार्थ हमने खोज कर बडे जमीदारों और घोडे के शालोत्रियों से पूछ पूछ कर विध मिलाई तब यह पुस्तक तय्यार कर पाई इसमें ऐसे नुसखे लिखे हैं जिनको बहुत कम लोग जानते हैं

इसकी रजस्टरी हस्ब कानून करा ली है कोई साहब इसके छापने का इरादा न करै -

हमारे कारखाने में और भी अनेक प्रकार की पुस्तकें छपी हैं जो देखने लायक हैं

बाबू प्यारेलाल जिमीदार मौजे बरौठा
थाना हरदुआगंज जिलह
अलीगढ

शालिहोत्रतंत्र

अर्थात्

जिस को बहुत परिश्रम से ठाकुर केदार
सिंह निवासी माधो नगर परगनै तालिग्राम
ज़िले फ़र्रुखाबाद ने
बनाया
कि जिसमैं हर मनुष्य कौ कुल घोड़ा घोड़ी
का हाल मय ऐब हुनर के मालूम होवैं
यानी
जितनी बीमारियां घोड़ा घोड़ी को होती हैं
उन के लक्षण और दवाइयां भी
ठीक ठीक तौरपर
लिखी हैं

मतबै दिलकुशा वाक़ै कम्प फ़तेहगढ़ मैं ब
एह तमाम बाबू विश्नु स्वरूप के छापा गया
पहिली बार ८०० जिल्द | सन् १८९१ ई० | मूल्य प्रति पुस्तक =) आ०

शुद्धाशुद्धपत्रम्

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	११	कहाये	कहायो
४	१५	तच स्वम्ब	तत्र सरव म्ब
८	२२	उत्तम है सोइ	उत्तम है सोउ
९	१०	चौरी	भौरी
१०	२३	षाजी देखि	वाजी देखि
११	१८	अंगल वेद	अंगुल वेद
११	२३	विसरवौ	विसेरवौ
१२	१५	उर भानु	उर मानु
१२	२१	जंचा जगुल	जंघा जुगुल
१४	१७	पष्टी	षष्टी
१५	२१	अय स्वगति	अथ अस्व गति
२३	१८	राजनी	रजनी
२४	२५	सीलवात	सीलवंत
३२	२५	भिजव	भिजवै

श्री गणेशाय नमः

अथ शालिहोत्र प्रारंभः

छप्पै—गवरि नंद सुखकंद फंद दुख द्वंद निवारन ॥ एक रदन गज बदन सरण भव भय के टारन ॥ विघन हरन विघनेश शेष गुण ज्ञान उजागर ॥ ध्यावत देव अदेव शिवासुत सो अति आगर ॥ है लाल लाडिलो शंभु को सुंडा दंड उदंड वर ॥ केदारसिंह गणेश जै गण नायक आनंद कर ॥ १ ॥ **कवित्त** ॥ सदा सुख रासी तड़ित तड़ि दम्बरासी शशि पूरण प्रभासी बुद्धि सागर सुधासी है ॥ कारण कलासी करुण कारण कृपा सी कर कमलासी सिद्धि साहस विलासी है ॥ दीनन दया सी मंद मंद स्मितासी मंडन मया सी नित्य हर्षित उल्लासी है ॥ काम तरु विभासी किधौं चिंता मणिरवसी पट तरिनतासी मातु काशमीर वासी है ॥ २ ॥ मत्त मयंद॥मूरति स्याम सी मो मन मैं बसिये निसि वासर बांके विहारी मोर के पंख धरे सिर भार लसै कच मेचक घुंघुर वारी ॥ कुंडल लोल कपोल अमोल सुमारु अहो मुरली अधरारी ॥ वैस किदार कहे मुख चंद पै डारिये कोटि मनो भव वारी ॥ ३ ॥ **पुनः** ॥ कुंद कपूर से अंग मनोहर गंग तरंग जटा सिर धारी ॥ भाल लसै शुभ चंद कि खौरि कपालन माल विसाल सुधारी ॥ मैन निकन्द हरैं दुख द्वंद सु दीनन पै ममता अधिकारी ॥ वैस किदार के आय बसौ उर पार वती पति श्री त्रपुरारी ॥ ४ ॥ **कुंडलिया**- शालिहोत्र मुनि वर सुनो विनती यह चित लाय ॥ वरणो अश्व चिकित्सिका दीजे युक्ति बनाय ॥ दीजे युक्ति बताय लिखौं भेषज अनुसारी ॥ उपकारी यह ग्रंथ नाथ तुव मतो निहारी ॥ जाते रहैं

वलिष्ट तुरंग अति सौ सुख पावैं ॥ रोग व्याधि नहिं निकट कबहूं सो तिन के आवैं ॥५॥ मत्त मयंद ॥ भेरवज अम्बक हावत हो तुमही तौ भये मघवा हितकारी ॥ पच्छन ते जु करे हैं निपच्छ करी तब अम्बन वीनती भारी ॥ गुण दोष विभाग कहे उनके भलि भांति चिकित्स कि रीति विचारी ॥ देहु वताय दया करि के वह युक्ति जो ग्रंथ बनै सुभकारी ॥६॥ दोहा॥ मघवा सौं जा विधि कही शालि होत्र मुनि भाखि ॥ नकुल कही सहदेव सौं यथा तथ्य अभिलाखि ॥७॥ औरौ बहुतक कविन ने कीन्हो यथा विचार ॥ सो सम्मत अब मैं कहौं निज बुधि के अनुसार ॥८॥ बहुतक को मत देखि के कीन्हों मतो एकंत ॥ अब भाषा वरनन करौं शालि होत्र को तंत ॥९॥ छंद चकोर ॥ एक समय सुर नायक जू गुरु देव सौं आय कही कर जोर ॥ दानव दुष्ट वलिष्ट भये सु लखे उनके सु पराक्रम घोर देहु बताय सो नाथ उपाय हनै रण मांहि तिन्हे वर जोर ॥ या विधि से रिपु जीति लहैं सुख देव सबै यह वीनती मोर ॥१०॥ सोरठा ॥ सुनि सुरपति की बात वाचस पति अस भाषियो ॥ छिन्न पच्छ करि तात वाजिन निज वस कीजिये ॥११॥ सुनि सम्मत गुरुदेव शालिहोत्र मुनि सौं कह्यो ॥ तुम जानत सब भेव करौ काज नि बुद्धि बल ॥१२॥ मत्त मयंद ॥ काटि के पच्छ करे जो निपच्छ मुनीस ने लाय सुरेस कौ दीन्हे ॥ सूरय पुत्र वलिष्ट हुते मघवा वस आप न सो करि लीन्हे ॥ उच्च पराक्रम जाति के उच्च कहे पशु नाहि हैं देवन चीन्हे ॥ वाहन ह्वैरथ नागि तवे सुर नायक के वहु कारज कीन्हे ॥ ॥१३॥ दोहा ॥ संप्र अब्धि ऊपर लखौ नन्द इन्दु परमान ॥ कहिये विक्रम राज को एह शाको सुख दान

माघ शुक्ल पूर्ण तिथी शशि दिन मघा नक्षत्र ॥ कुंभ अर्क लखि मै कहो शालि होत्र के तंत्र ॥१५॥ सोरठा ॥ ग्रंथ हेत उपचार सज्जन मम विनती सुनौ ॥ निसु दिन करौ विचार निज वुधि वल्ल हि भरोस नहिं ॥१६॥ चौपाई ॥ तेहि ते विनय करौं सब पाहीं ॥ साधु कृपा कछु दुलभ नाहीं ॥ अनुचित लखि जनि कीजै कोहू ॥ किंकर जानि धरौ उर छोहू ॥१८॥ भूल चूक जो ग्रंथ निहारै ॥ कृपा दृष्टि करि ताहि सुधारौ ॥१९॥ दोहा ॥ पता सकल अपनो कहौं सुमिरि उमा वृष केतु ॥ माधव नग्र निवासु मम सालिग्राम निकेतु ॥२०॥ ज़िला फ़र्रुखा बाद है अति पुनीत शुभधाम ॥ सुर सरि पावनि जहं वही पूरण जनमन काम ॥२१॥ चौपाई ॥ क्षत्रि वंस कुल वैस कहाये ॥ वधिक करि कर्म कांस तेहि जायो ॥२२॥ नहि कीन्हे कछु मैं शुभ कर्मा ॥ नाम केदार सिंह है वर्मा ॥२३॥ पिता जवाहर सिंह बखाने ॥ जग जाहर द्विज गुरु सनमाने ॥२४॥ तिनको सुत मै अति मति मन्दा सज्जन हसो न करि कछु निन्दा ॥२५॥ हंसिवे योग वात अधिकाई ग्रंथ हेत मै करौं ढिठाई ॥२६॥ कुंडलिया ॥ सज्जन जन विनती सुनौ कहौं उभै कर जोरि ॥ पर उपकारी ग्रंथ लखि दीजै मोहि न खोरि दीजै मोहि न खोरि भूल औ चूक सुधारो ॥ उपकारी लखि ग्रंथ सदा उर कृपा विचारो ॥ कह केदार कवि वैस होउ विद्वज्जन वरदा याते होय प्रचार ग्रंथ जग एह सो सुभदा ॥२७॥ दोहा ॥ ग्रंथ भूमिका मे कही निज बुधि के अनुसार ॥ अब आगे बरनन करौं यथा योग उपचार ॥ अथ औषधि विचार कथनं ॥ मत्तगयंद-जहं चंदन है जु कहो पुनि सो तहं रक्त सो चंदन कों परमानो ॥ मिर्च कही पुनि है जो जहां तहं कारी मरीचिहि को करि मानो ॥ दूधदही घृत मूत्र कहो तह केवल गाइहि को करि जानो ॥ लोनु कहो

जहँ है सु तहाँ वड़ सेंधव लौनऊ कौ सो बखानो ॥ २९ ॥ पुनः काल कहो है नाहि जहाँ तहँ भात समय सोइ काल गनीजै ॥ भाग है नाहो कहो सो जहाँ तहँ तुल्य प्रमान सो ताविधि लीजै ॥ अंग है नाहि कहो जहँ द्रव्य सो मूल मगाय कि ताहि कि दीजै ॥ गीली कही पुनि दूनी सो द्रव्य औ सूखी सो भाग बराबर कीजै ॥ ३० ॥ अथ अश्व जाति वरनन ॥ दोहा ॥ उत्तम मध्यम नीच लघु औ कनीय पहिचानि ॥ चारि जाति के तुरंग हैं मुनि वर कहे बखानि ॥ ३१ ॥ दंडक ॥ ताजी और तुरकी खुरासानी तीनि उत्तम कारि मुनि वर बखाने अश्व एते लखि आइये ॥ गोरि कांण कोकण गौड़ हार देसन के मध्यम तुरंग सबै सो तौ बताइये ॥ और एक जाति रज सूली पुनि कहा वशिष्ठ याही तरह मानि फेरि तेउ पुनि गनाइये ॥ ऐसे सो विचारि परखि बाजी खेत खेतन के मुनि मत अनकूल यथा तथ्य करि जताइये ॥ ३२ ॥ अथ नीच ॥ दोहा ॥ माड़वार कश्मीर के उत्तर दिशि के अश्व ॥ नीच कहावत नकुल मत तुरंग तउ स्वश्व ॥ ३३ ॥ अथ लघु ॥ दोहा ॥ परवत कंदर सावरौ सिंधु देस के पार ॥ और देश के जानिये सोक नीय निरधार ॥ ३४ ॥ अथ वरण वरननं ॥ दोहा ॥ चारि तरह के होत हैं चारि वरण के अश्व ॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य पुनि सूद्र कहत हैं दश्व ॥ ३५ ॥ चौपाई ॥ अश्वजाति दरियाई जानो ॥ ब्राह्मण वरण पुनीत सो मानो ॥ ३६ ॥ वाहि जाति के अर्व्बि कहावैं ॥ क्षत्री जाति सदा मन भावैं ॥ ३७ ॥ सूर समीर जे तुरंग एराकी ॥ करस वरन पुनि करै चलांकी ॥ ३८ ॥ मुगल उलूक के परवत चारी ॥ अलपज वरण कहे निरधारी ॥ ३९ ॥ सुमन सुगंध जासु तनही के विप्र वरण जानों तेहि नीके ॥ ४० ॥ दोहा ॥ रण मे तेज उदेत ऊड़ जल पैरै समुहाय ॥ सूक्ष्म रूप अनूप छवि विप्र वरणके भाय

॥ ४१॥ चौपाई ॥ अगर वासु युत क्षत्री जानो ॥ धीर चपल चातुर पहिचानो ॥ ४२॥ रण लखि क्रोध धरै अति आतुर ॥ बल पौरुष जनु तेज़ दिवाकर ॥ ४३॥ दोहा ॥ क्षत्री रण अति बांकुरो रवि कुल तेज प्रचंड ॥ चिबुक नोय ताड़ित करै पीवै तोय अखंड ॥ ४४॥ चौपाई ॥ घृत सुगंध ते वैश्य बखानो ॥ शालिहोत्र मुनि मत अनुमानो ॥ ४५॥ सुस्त चुस्त गति उभय सदाई ॥ वैस्य जाति लक्षण अधिकाई ॥ ४६॥ दोहा ॥ सुद्ध सुगम मारग रहैं रहै सदा आधीन ॥ डरपै देषत भीति भय वैस्य जाति परवीन ४७ चौपाई ॥ मीन वासु जेहि के तन होई ॥ जानो अश्व सूद्र यह तोई ॥ ४८॥ दोहा ॥ मंद मंद भोजन करै पानी देखि डराय मारे पै सूधो चले जानो सूद्र सुभाय ॥ ४९॥ सोरठा ॥ विप्रहि सरल सुभाय क्षत्रि सूर क्रोधी अमित ॥ वैस्यस दोष बताय सूद्र जाति निरबल सदा ॥ ५०॥ चौपाई ॥ विप्र बरण चारो अधिकारी क्षत्री जाति सो लेहु निहारी ॥ ५१॥ वैस्य बरण दुइ कर आरूढ़ा ॥ सूद्र सहाई जानिय गूढ़ा ॥ ५२॥ दोहा ॥ नृप के सुभ चारो बरण वाजी वाहन योग ॥ शालि होत्र मुनियों किये भूतल प्रघट प्रयोग ॥ ५३॥ आकल काज कहै द्विज सुभग रणहित क्षत्री जाति ॥ बणिज काज हित वैस्य पुनि सूद्र अपर बहु भांति ॥ ५४॥ चौपाई ॥ सोवै सदा जगै रण माहीं ॥ कै दाना मैं कंकर जाहीं ॥ ५५॥ दोहा ॥ ऊरध मुख देखत करै अग्र पाय लिखि भूमि ॥ हींसत जस दै स्वामि कौ रहै सदा सुख चूमि ॥ ५६॥ साजत अश्व जे लीदि करि लक सका करि देइ अनरथ स्वामिहि हेत सो तुरत जताये देइ ॥ ५७॥ फिरकावै जो पुच्छ को वार वार निदान ॥ सो भूपति भूलोक से तुरै करै पयान ॥ ५८॥ पुच्छमांहि चिनगा झरें जा वाजी निसि देख ॥ नास

करै धन धाम सो रंग भाये अवरेख ॥ ५९ ॥ इति जाति ॥
अथ रंग ॥ दोहा ॥ सात रंग बाजी कहे तिन के भेद अनेक रंग रंग मिश्रत भये बरणत बुद्धि विवेक ॥ ६० ॥ सेत रक्त अरु पीत कहि पुनि सारंग वखानि ॥ पिंगल नील औ कृष्ण कहि बरणत है सज्ञान ॥ ६१ ॥ चौपाई ॥ सब ते अधिक सेत कहि जानो ॥ राज तिलक सिर मौर बखानो ॥ ६२ ॥ सवैया ॥ सेतु तुखारस मान कहैं नित भूपति को सुख दायक ही को ॥ रक्त सो कुंकुम रंग कहैं पुनि पीतल सै रंग है रजनी को ॥ सारंग सेत असेत मिले अरु पिंगल पिंगलगै रंगु फीको ॥ नील तुरी रंग पंनग के कहि स्याम सो रंग है नील मणी को ॥ ६३ ॥ चौपाई ॥ सेत चरण तन पीत सुहाई ॥ अच्छ सेत भूपति मन भाई ॥ चरू वाक सो तुरी कहावै ॥ भले भाग जाके घर आवै ॥ ६५ ॥ स्याम सरीर चरण सित चारौ ॥ भाल तिलक विधि सम निर धारौ ॥ ६६ ॥ मल्ल कच्छ सो बाजि कहावै ॥ पूरण पुण्य जासु घर आवै ॥ ६७
दोहा ॥ असित गोल मंडल बदन मल्लि कच्छ अनुमान ॥ सेत चरण चारौ लखैं सो यम दूत समान ॥ ६८ ॥ चौपाई ॥ चारौ चरण सेत शुभ जाके ॥ मुख पुच्छरु बच्छ सो सेतहि वाके ॥ ६९ ॥ मंगल अष्ट नाम कहावै ॥ दिन प्रति मंगल मोद बढ़ावै ॥ ७० ॥ दोहा भस्म रंग जेहि अश्व को तजौ दूरि ते ताहि ॥ क्रूर कहावत नकुल मत सेति न लीजे बाहि ॥ ७१ ॥ रंग न जेहि को समुझिये बाजी हेय विसाल ॥ और अश्व को भय करै ताहि तजौ ततकाल ॥ ७२ ॥
चौपाई ॥ अश्व अवनि बहु रंग गुण शोभा ॥ बरणत विबुध पाप मत चोभा ॥ ७३ ॥ शालिहोत्र मत नकुल निहारी ॥ मै संक्षेपहि कहौं विचारी ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ चारौ चरण जु सेत हैं सेत बरण मुख चंद पंच कल्याण सुजानि ये दिन दिन करत अनंद ॥ ७५ ॥ मिले रंग न

औरौ सुभग अब लाव कहौं विचारि ॥ स्याम नील अवलाक
सुभग नकुल मते निरधार ॥७६॥ बाल अवस्था नील है दिन
दिन बाढ़े स्याम ॥ तेहि बाजी को परि हरौं मलिन राखौं धाम ॥
छंद गीता- संदली संजाव कहिये समुद अक्षर गा लाल ॥ दौनार
पायक जरद जानौ चपल चंचल चाल ॥ दौलया कुम्मैत सुरखा ची
नी औ चंपाल ॥ स्यामौ कारण उच्चे अवा सुभग नौ वाजि विसाल
॥७७॥ छंद नाराच ॥ अश्व जाति रंग लरी॥ कहां लौ बखानिये
भिन्न २ भाय निरखि जहां लौ प्रमानिये ॥ वांदि जाइ ग्रंथ कहत पा
र नाहि पाइये ॥ सूक्ष्म रीति ताहि हेत अबलौ सो गनाइये ॥७८॥ इ
अथ अश्व जन्म फल-। दोहा। अब घोरा के जन्म फल सकल
कहौं समुझाय ॥ शालि होत्र मत निरखि कर शुभ औ अशुभ ग
नाय ॥७९॥ चौपाई ॥ प्रथम पहर निसि अति शुभ कारी ॥
जन्मत तुरंग हरत दुख भारी ॥ ८०॥ शत्रु नासि धन धान्य बढ़ावै
शालि होत्र मुनि मत अस गावै ॥८१॥ द्वितिये पहर जन्म फल
चोरी ॥ निधनी के धन करति बहोरी ॥ ८२॥ त्रितिये कछु चिं-
ता दरसावै ॥ क्लै कॉर करणी बहुरि सुख पावै ॥ ८३॥ पहर च
तुर्थक मध्यम कहिये ॥ शालि होत्र मत चाविधि लहिये ॥ ८४॥
अथ दिवा जन्म विचार ॥ चौपाई ॥ जन्मत प्रथम पहर दिन
घोरी ॥ देति आप दातहि घनेरी ॥ ८५॥ द्वितिये पहर फल अति
भय दायक ॥ बरणत शालि होत्र मुनि नायक ॥ ८६॥ संकट ता
हि परै अति भारी ॥ चित्त कुटुंब विनासन हारी ॥ ८७॥ पहर ती
सरो अधम बखानौ ॥ महा निषिद्ध चतुर्थक जानौ ॥ ८८॥ दोहा
उन्नायन के जन्म फल महा पुनीत बखान ॥ दक्षिण मध्यम कह
त हैं श्रावण अति दुख खानि ॥ ८९॥ अथ रदन विचार ॥ दो
प्रथम दंत स्फटिक सम वेद होत परमान ॥ बहुरि पीत दुई के भये

टूटत रदन निदान ॥ ९० ॥ तीस महीना मैं सदा दंत होय दुइ दूरि दुइ दुइ षब्द प्रमान पुनि गिरत ऊगत भरि पूरि ॥ ९१ ॥ सप्तम अब्द पर अंत पुनि स्याही रदन समान ॥ द्वादस ते स्याही नजत मुनि वर करत बखान ॥ ९२ ॥ बत्तिस वर्ष प्रमान करि आय अश्व है लेख उत्तम जाति जो अश्व है तिन की आयु विशेख ॥ ९३ ॥ खुरासानि अरबी कहे वाल्हीको और बखानि ॥ तिनकी ऐसी आयु है रदन रदन पहिचानि ॥ ९४ ॥ अथ आवर्त वरननं ॥ दोहा ॥ आवर्तहि शुभ असुभ जे तिन के तस फल जानि ॥ शालि होत्र अनुसार मत विधिवत कहौं बखानि ॥ ९५ ॥ चौपाई ॥ मध्य भाल भौंरी जो लहिये ॥ एक निरखि अति शुभ सो कहिये ॥ ९६ ॥ कंध तरे चौरी निर धारो ॥ शुभ दायक पुनि ताहि विचारो ॥ ९७ ॥ दुइ शुभ दक्ष कपोल सुहाई ॥ शिव संज्ञिक तेहि नाम गनाई ॥ ९८ ॥ ग्रीवा ऊपर तीनि निहारो ॥ नृप घर योग ताहि निर्धारो ॥ ९९ ॥ दोहा ॥ अष्ट वर्त्त जो कंठ मैं जा तुरंग के होय ॥ मंगल आष्टक नाम है नृप घर लायक सोइ ॥ १०० ॥ कंठ माहिं भौंरी सुभग एकै होय निदान ॥ तासौं चिंतामणि कहै मन इच्छित फल दान ॥ १०१ ॥ चिंतामणि जो देउ मणि ग्रीवा मध्य लखेहु ॥ पुनि गौ मणि कौ आदि दै सब उत्तम कहि देहु ॥ १०२ ॥ भाल जुगुल आवर्त्ति पुनि जा तुरंग के होइ ॥ चंद्र अर्क तेहि कहत हैं सबै सयाने लोइ ॥ १०३ ॥ एक नासिका वंस मैं उर्जे भौंरी जोय ॥ अति शुभ तासौं कहत हैं नृप गृह लायक सोइ ॥ १०४ ॥ चौपाई ॥ अरु माथे पर भौंरीं दोय ॥ सीधी देखि कुंभ कहैं सोइ ॥ १०५ ॥ दोहा ॥ पछिले पाय न अश्व के पिडुरिन नीचे दोइ ॥ विजय करण भौंरी लखौ अति उत्तम हैं सोइ ॥ १०६ ॥ द्वै द्वै दुहू कपोल पर उर्जे भौंरी अश्व ॥ इन्द्र नाम तेहि कहत हैं विजय करै सर बश्व ॥ १०७ ॥ नराचं ॥ लखो सुकान मूल मैं कि कान पै परेखिये ॥ करै विजै सु जुद्ध मैं विजै सुनाम

लेखिये ॥ पैरै परेखि नाक मध्य एक तीनि कै जहाँ ॥ करै सु चक्र वर्त्ति वाहि राज्य भोग है तहाँ ॥ १०८ ॥ **अथ असुभ भौंरी ॥ चौपाई ॥** अब भौंरी पुनि असुभ बखानौ ॥ जो कछु शालि होत्र अनुमानौ ॥ १०९ ॥ भौंरी तीनि लिलाट परेखौ ॥ त्रकुटा ताहि नाम अब रेखौ ॥ ११० ॥ भय दायक सो अश्व विचारौ ॥ भाल तीनि आवर्त्त निहारौ ॥ १११ ॥ **दोहा ॥** बायें दिशि जो भाल पर भौंरी लखिये मित्त ॥ महा असुभ तेहि कहत हैं करै नृपति भय चित्त ॥ पुनि द्वै भौंरी भाल पर मिली होय जेहि अश्व ॥ मेढासिंगी कहत हैं नासु करै सरबस्व ॥ ११३ ॥ **चौपाई ॥** नथुनाऊ पर भौंरी जोई ॥ महा निषिद्ध कहत हैं सोई ॥ ११४ ॥ **भुजंग प्रयात छंद ॥** भुजे कच्छ पुच्छे भल द्वार माहीं ॥ ललाटे तथा जानु मध्येतु यांही ॥ लखौ गुह्य के पुच्छ तीरे सुगाही ॥ कह्यौ ठौर नागा करै लिद्धि नाँही ॥ ११५ ॥ **दोहा ॥** जाके भौंरी पीठि पर धूम केतु तेहि नाम ॥ सो परि हरिये दूरि ते जो सुखु चाहौ धाम ॥ ११६ ॥ **चौपाई ॥** जाके भौंरी त्रिबली माही ॥ ताको मूलि लेत नृप नाहीं ॥ ११७ ॥ तंगतरे भौंरी है सोई ॥ गोम नाम तेहि कह सब कोई ॥ एक दोय कै तीनि निहारै ॥ अति दूखित सब गोम विचारै ॥ नाभि प्रजंत तंग तट जोई ॥ काल समान पेखिये सोई ॥ १२० ॥ **दोहा ॥** और एक आवर्त्त पुनि नाभी तट जो होय ॥ यती कहत हैं ताहि सों अति दूखित है सोइ ॥ १२१ ॥ **चौपाई ॥** आंखिन नीचे भौंरी लहिये ॥ आंसू ढार नाम तेहि कहिये ॥ पलकन ऊपर भौंरी जोऊ ॥ तादिधि दूखित है पुनि सोऊ ॥ मूल करण भौंरी जो होई ॥ एक होइ तौ असुभय सोई ॥ व्याल रूप जो भौंरी होइ ॥ व्याली नाम कहै सब कोइ ॥ भौंरी दोऊ ओर लखाई ॥ ताहू मध्यम कहत जनाई ॥ भौंरी होइ जंघ जुग जाके ॥ संपति भवन न आवे ताके ॥ भौंरी एक लिंग के पास

से वाजी अति असुभ निदान॥ अंड कोस पर भौंरी होई॥ मोहि देत स्वामी को सोई॥ बिचि भौंरी जो नथी लखाई॥ काहू और परै जो आई॥ महा असुभ परि हरो सु तेही॥ जो चाहौ सुख संपति गेही॥१३१॥ दोहा॥ जेहि वाजी के हृदय महँ हृदावली लसंत तौनि पुष्टि की संपदा नासति देखि तुरंत॥१३२॥ कोखा पर जो पुच्छ पै और वगल के मध्य॥ भय दायक सब जानिये भौंरी होइ निखिध्य॥ कच्छ मध्य आवर्त दुइ जेहि वाजी के जानि॥ निज स्वामी की नीर ने मृत्यु कहैं एह मानि॥ जो वाजी द्वौ ओठ को संपुट बाधत नाहिं॥ सो वर्जित है गेह मै यम किंकर गनि ताहि॥ भाल तिकुलिका सेत लखि काल अगवारे अश्व॥ खंड खंड हैं अंग सब नासु करै सर वश्व॥ एक अच्छ कंजा लखौ दूजी नाहि सुपेद॥ ताकी तासौ कहत हैं भय दायक युत खेद॥१३७॥ नाराच छन्द॥ विहीन एक दंत है कै बढ़ि कै एक दंत सो॥ करालि कृष्ण तालुकी कि मूस लील संत सो॥ तुरीय एक जानिये सुजाति अंड मैं कसो सुहीन अंग वाढ़ि अंग जानि ये सो यों लसो॥१३९॥ चौपाई॥ अधिक दंत कै हीन निहारौ॥ भय दायक सो अश्व विचारौ॥ तालू कृष्ण मूसली देखौ॥ कै भृंगी पुनि अश्व परेखौ॥ चक्षुहीन अरु अरजल जोई॥ एकर अश्व भयानक सोई॥ रोमन मध्य बुंद छद जो है॥ कै फूलत पुनि अश्व जु सोहै॥ शत्रु जानि निज ताकौ दीजे भूलि के तासु नाम नहिं लीजे॥१४३॥ तोमर छन्द॥ है स्याम तालू जानि॥ सो कृष्ण तालू मानि॥ जेहि अश्व के पुनि भाल॥ हैं तिलक बुंदिन चाल॥ दल भंज ताहि बखानि॥ ए हम नो नकुलहि जानि॥ एक अंड वाजी देखि॥ एक अंड गनौ विशेखि॥१४४॥ दोहा॥ एक अंड जाके लखण के लघु दीरघ होय॥ ते दूरिहि ते दीरि हरौ जस चाहौ जो कोइ॥ हीन दंत स्वामिनि हनै अधिक दंत

दुख खानि ॥ कृष्ण तालु अति भय करै दल भंजन कुल हानि १४६ आंसू बहैं जो अश्व के दिन प्रति आठौ जाम ॥ महा निखिध्य बखानिये गनौ रोग को धाम ॥ १४७ ॥ अश्व स्वरूप ॥ छप्पै ॥ दीरघ ग्रीवा नैन भाल जाके बिसाल अति ॥ पीन उरस्थल त्रिकुटपरैं सुंम सूधे सुभ गति ॥ उच्च कंध सुख बड़ो ग्रीव ताही सम पुनि गनि ॥ सुच्छ केस सुभ चारु करण लघु पुच्छ अधर मनि ॥ अति गोल जंघ अरु जानु गन सम सेत दंत बखानिये ॥ इति अंग शुद्ध वाजीन के भूपति के मन मानिये ॥ १४८ ॥ सोरठा ॥ ऐसो वाजी पाय भूपति सुखु मानत महां ॥ समर संघारैं जाय शत्रुन घालै सो सदा ॥ १४९ ॥ दोहा ॥ अब बरनौ सब नकुल मत बुध जन लीजो जानि ॥ जो भाखो सारंगधर सो सब कहौं बखानि ॥ १५० ॥ छंद मत्तगयंद ॥ दीरघ आनन पीन पयोधर उच्च सु कंधर ग्रीव निहारौ रोमस चिक्कन ग्रंथित केस सुचामर के सम पुच्छ बिचारौ ॥ थूल भुजा दृढ पुष्ट कटी दृग आमिष पूरित सो निरधारौ ॥ अंग वलिष्ठ सबै नेहि भांति औ चक्र समान लखौ खुर चारौ ॥ १५१ ॥ दोहा ॥ असमान छाती लखौ अति लघु जाके कान ॥ रक्त सचिक्कन तालु लखि पसुरी सूक्ष्म मान ॥ १५२ ॥ सोरठा ॥ शुद्ध फटिक सम दंत षट अंगुल करणों लखैं ॥ अंग लखेद प्रयंत तालू बरणत अति सुभग ॥ १५३ ॥ चौपाई ॥ एह प्रकार को रूप निहारौ ॥ सो बाजी नृप योग विचारौ ॥ अब प्रमाण सो बिधिवत कैहौं ॥ जो कछु नकुल मतो अब गैहौं ॥ १५५ ॥ छंद मत्तगयंद ॥ अंगुल चालिस को गनि कंध कटी तट अंगुल चौबिस लेखौ ॥ पीठिहु को यह है परमान औ पुच्छ सचिक्कन द्वादस देखौ ॥ सुख प्रमान कहें भुज कौं अरु अंगुल चारि को अंड बिसेखौ ॥ चौबिस अंगुल कोमल बारहु दो पुनि सोरह को अब रेखौ ॥ १५६ ॥ चौपाई ॥ अब प्रमान सों

विधिवत भाखौं ॥ जो कुछु नकुल मतो अवि लाखौ ॥१५७॥ छंद मदिरा ॥ चालिस अंगुल लौं गनिये कटि ते अौ पुच्छ लों बीचु जितो ॥ द्वो मणि बंध गनौं पुनि ता विधि वैस किदार प्रमाण तितो ॥ याहि प्रकार सों उच्च प्रमान कहौं लघु एकु सौ बीस इतो ॥ अंगुर चारि गनो खुर उच्च मुनीश्वर ही को विचारि मतो ॥१५८॥ पुनः बत्तिस लक्षन और कहे सुविचारि मुनीश्वर के मत सों ॥ दीरघ चारि अौ उन्नत चारि सु सूक्षम चारि गनौ चित सौं ॥ उन्नत चारि प्रसीनिऊ चार लघू पुनि चारि कह्यौं हित सौं ॥ रक्त सु चारि सुपारसु चारि लखौ सब औरन हैं तित सौं ॥ १५९॥ दोहा ॥ अब के हौं पुनि अंग सब ठौर ठौर भांत भारिव ॥ नकुल कही सहदेव सौं यथा नथ्य अभिलाखि ॥ १६०॥ तोमर छंद ॥ मुख केश दीरघ जान ॥ भुज ग्रीव सो परमान ॥ पग नासिका पुट थूथ ॥ अरु भाल उन्नत थूथ ॥ गनि और जीभ सुतालु ॥ ध्वज रक्त चरण विसालु ॥ लघु रंध्र वाहत सुवेहु ॥ कटि वंस पुच्छ सुजेहु ॥ लघु चारि मानौं मित्त ॥ सो वाजि चंचल चित्त ॥ कहि चारि चौड़े जानु ॥ मणि कंध अौ उर मानु ॥ द्वौ चरण मध्य विशेखि ॥ है ह्रस्वता विधि लेखि ॥ पारसु सु होत समान ॥ द्रुमि वाहत सो परमानु ॥१६१॥ सोरठा ॥ पारसु ज्ञात सो होइ सुख कांधे द्वौ जानु नी ॥ लखौ वाजि सुभ सोइ ए लक्षन पहि चानि के ॥१६२॥ उदर बीच सुभ होइ द्वौ कपरी के मध्य मंह लक्षण लीजे सोइ जानु सहित ए ठौर सुभ ॥१६३॥ दोहा ॥ वक्षस्थल जंघा जुगल सिखा धनस्थल चारि ॥ पुष्ट प्रसीनं जानिये ए सब सुखद विचारि ॥ १६४॥ शालिहोत्र मुनि नकुल मत लक्षण वरण बतीस ॥ ऐसे वाजी सुभ गनौं चाहत तिन्हे महीस ॥१६५॥ अथ वाहक विधान छंद मदिरा ॥ आसन बांधि भली विधि सौं कटि डालें नहीं थिरता करिकै ॥ धारि जो दृष्टि सुकानन मध्य

गहै पुनि रासि हिता करि कै॥ घालै न चाबुक ठौर कुठौर सु क्रोध तजै समिता करि कै॥ बाजि विधान भले समुझै तन सुद्ध रहै दृढ़ता करि कै॥१६६॥ **तोमर छंद**॥ जो जान अश्व विधान॥ आरूढ़ गति पहिचान॥ विद्या वगाही रूप॥ पूजित सभा ते भूप॥ १६७॥ **दोहा**॥ जे नहिं जानै अश्व गति आरूढ़न के भेद॥ वो दृश्य ते वूझ्य ये उपजत देखत खेद॥१६८॥ **छप्पै**॥ धीरज बुद्धि विवेक अंग निर्मल अति राखै॥ दृढ़ता चित मैं धारि झूठ नहि भूलि के भाखै॥ साहस सरस विचार सदा उत्साह बढ़ावत इंद्रिन निज बस राखि आसन की त्रास नसावत॥ कठिन काल सम प्रकृति जेहि सत्व योग समुझै सकल॥ वेस बंस केसर कहि अश्व बाह एहि भांति भल॥१६९॥ **छंद नरिंद्र**॥ संग्रह ईंधन अन्न जल राखै तीर सदाहीं॥ परसै ना अब लोकि डरै नहिं धीर धरै मन माहीं॥ रिपु के सैन प्रवेस समय पुनि निर्गमेश रह सोई अर्द्ध चार संचार सुजानै अस्त्र विधानै जोई॥ अपने अस्त्रन काटि जो जानै रिपु के अस्त्र निवारी॥ शक्ति चक्र भाला भले फेरै दृढ़ता उर मैं धारी॥ अस्त्र शस्त्र नाना विधि छाड़ै रिपु नासक दुख दाई॥ करै सीघ्रता विविधि भांति सो रिपु तेहि लखत सकाई अपने अस्त्र शस्त्र जो कहिये विधिवत भले चलावै॥ रिपु आयुध आवत लखि सो पुनि वीचहि काटि नसावै॥ अस्त्र शस्त्र खंडन करि जानै अपने अस्त्र चलाई॥ निपुन युद्ध विद्या मैं सो पुनि जानै व्यूह बनाई॥ कंध कंठ मुख ग्रीव पृष्ठ पै करै समान प्रहारै॥ चाबुक चालन कौ करि जानै जा विधि समुझि विचारै॥ अश्व बाह ताको पुनि कहिये जामै ए गुण होई॥ ते पूजित नृप द्वार मध्य महं जानत चतुर जु कोई॥१७०॥ **छंद नरेंद्र**॥ अश्व बाह विद्या इमि भाखत ताड़न तुरग जते हैं॥ जा विधि ताड़न उचित

अंग जेहि ता विधि सबै वते हैं॥हींसत जानि अश्व के चाबुक कांधे ताड़न कीजै ॥ जंघन मध्य हनौ तब चाबुक सुकध्वजा जो छीजै ॥ छाती मध्य हनौ तब चाबुक डरपत अश्वहि जानी॥ उन्मारग अब लोकत लखि के मुख के मध्यहि हानी ॥ क्रोधित आनि अश्व कौं ताविधि पूंछ मध्य सो डाटै ॥ ताविधि चकित बिलोकि भ्रमित सो जंघन मध्ये सांटै ॥ १७१॥ छंद ग्रंथि ॥ एह और कहे पुनि जोई ॥ निज धारि हिये बिच सोई ॥ कर धारि के चाबुक ही को ॥ नहिं ताड़िय और कुठी को ॥ १७२॥ दोहा ॥ बिन जाने जे अश्व के चाबुक करैं प्रहार॥ अश्व कोप तिन पैं करै आयु प्रजंत अपार ॥१७३॥ अश्व फेरि वे की क्रिया अब कछु कहौं जनाय ॥ सज्जन अपने चित्त मैं लीजे समुझि बनाय ॥ १७४॥ भूमि समान बिलोकि के तहां चलावै अश्व ॥ फेरै वाग सुधारि के जै कांछी सर वश्व ॥१७५॥ चालि चलावै अश्व को धारत तेहि कर नाम॥ लघु दीरघ अरु मध्य गति हांकै दक्षिन वाम ॥१७६॥ विक्रम पुलिका ताड़िता पूरन कंठी होय॥ प्रथम द्वुतीया तीसरी क्रम करि जानौ सोइ ॥१७७॥ पंचई चौथी नाम सम सज्जन लेहु बिचारि॥ निरलंबा षष्ठी कही ग्रंथ माहि निरधारि ॥ १७८॥ विप्र वरण हय पर चढ़े प्रथम पहर शुभ होय॥ पहर दूसरे छत्रि पै यह जानौ सब कोइ ॥ १७९॥ पहर चतुर्थ बैस्य कौ सद्र हिराति गनाय ॥ यहि प्रकार सब वरण के वाहन कहत जनाय॥ १८०॥ अथ सुगति दोहा॥ पहिली कही मयूर की तीतुर दूजि प्रमान॥ तीजी कही माल की तुर्य चतुष्पद जान॥ छंद दुर्मिला ॥ अति वेग सौं चालि मयूर लखौ पुनि कांपत पुच्छ औ पींव सही ॥ थिरता करि पुच्छ उतायल चालि सुतीतुर की पहिचानि यही ॥ हालै डगौ पसुरी औ धुनै सिर मंद चलै

गति हंस सही ॥ चारौ पांय चलै चलला यह चालि चतुष्पद की सो कही ॥ १८२ ॥ दोहा ॥ चालि चतुर्विधि जो कही सो सब उत्तम मानि ॥ तामें जो अति चपल है सो बड़ मुखद बखानि ॥१८३॥ अथ बाहक निंदक । छंद किरीट ॥ चंचल चित्त सदाई रहै अरु थूल सरीर सु चंचल आसन ॥ क्रूर सो मूरख जानि लखौ बिन कारण चाबुक घालत त्रासन ॥ कुंडल रूप तुरंगम को नहिं फेरि सो जानत ताविधि नासन ॥ निंदित बाहक वैस के दार कहे यहि भांति सो ग्रंथ प्रकाशन ॥ १८४ ॥ दोहा ॥ बल वर्जित जो सत्व गत शंकर वरण कहाइ ॥ तिन कौं कहा सराहिये अति निंदित अधिकाइ ॥ १८५॥ रितु पर्जा जानै सवै बोलै बाणी सुद्ध ॥ भक्ष्या भक्ष्य विचारि के अन्न न खाइ निषिद्ध ॥१८६॥ तीस पैग की दौर मैं फेरै अश्व वहोर ॥ पाछे आनि तुरंग को लहरि सार ता ठौर ॥ १८७॥ विनि फेरे बांधे रहैं ते नर होय न सूर ॥ सिथिल होय अंग अंग सो काज परे ते कूर ॥ १८८॥ मर्यादा ते अधिक करि अश्व फरिये नाहि ॥ तन दुर्बल अरु व्याधि युत निश्चै गनिये ताहि ॥१८९॥ श्रावण भादौं मास मैं होत अश्व बलहीन ॥ असवारी सहि ना सकत भार धरे अति दीन ॥१९०॥ पित्त कोप अति होत है अग्नि तुल्य दोउ मास ॥ असवारी के श्रम सौं लहैं तुरंगम त्रास ॥१९१॥ हिम अरु सिसिर बसंत मै बाजी बल सरसात ॥ असवारी कित कौ करौं तनक न मन अरसात ॥१९२॥ होइ विरेचन अश्व कौं के अति दुर्वल होइ ॥ गर्भवती जो अश्वनी तापर चढ़ै न कोइ ॥१९३॥ उच्च पदारथ को लखे हींसत हैं हय जोय ॥ अति उत्तम करि मानिये शालि होत्र मत सोइ ॥१९४॥

अथ शाला वर्णनम् ॥ दोहा ॥ अब शाला वरनन करौं नकुल मते अनुसार ॥ जाहि जानि के नृप सबै पावत सुक्ख अपार ॥१॥

छप्पै छंद ॥ राज धाम के वाम रुचिर शाला सुभ रचिये ॥ योतिष मत अनुकूल सुद्ध सायति कहँ संधिये ॥ उच्च होय दस हस्थ सतषट वा पुनि सोई ॥ यथा उचित विस्तार बाजि सुख पावैं जोई होइ पार जहँ रुद्र को बिप्र वेद नित उच्चरैं ॥ सुभ धाम अश्व आरम कहँ जहां होम आहुति परैं ॥ १९६ ॥ सोरठा ॥ छत्रवनावे आय मधु मक्खी जेहि धाम महँ ॥ निंदित कहैं गनाय अश्व योग सो धाम नहिं ॥ १९७ ॥ यथा शक्ति करि दान धूप दीप करि विविधि विधि ॥ उत्तर मुख करि थान सुभ सायति बांधै तुरंग ॥ १९८ ॥ अश्व पाल चातुर तरुण राखै बुद्धि विसाल ॥ पालै बाजी विविधि विधि सो कहिये महिपाल ॥ १९९ ॥ मरकट बांधै लाय हय साला के द्वार सें ॥ प्रतिमा रुचिर बनाय के थापै तहँ बुद्धि बर ॥ २०० ॥ दोहा ॥ दक्षिण मुख करि तुरंग को भूलि न कीजे थान ॥ दिन प्रति विप्रन पूजिये यथा शक्ति करि दान ॥ २०१ ॥ अथ शिरा मोक्षण ॥ दोहा ॥ सात शुक्र गत धातु हैं तिन को करौं बखान ॥ जेहि जाने ते जानिये अश्व रोग परमान ॥ २०२ हय के रुधिर बिकार ते होत अधिक विधि रोग ॥ ताते रुधिर विकार को प्रथमहि कीन्ह प्रयोग ॥ २०३ ॥ चौपाई ॥ द्वै सहस्र सब सिरा बखानी ॥ ता ऊपर दुइ सप्तति आनी ॥ तिन के गत हैं रुधिर जु सोई ॥ ताहि परीक्षा जानत जोई ॥ २०५ ॥ दोहा ॥ कुत्सित रुधिर विचारि के करत चिकित्सा जोइ ॥ ते नर जस कौं लहत हैं चतुर वैद्य पुनि सोइ ॥ २०६ ॥ सोरठा ॥ मुख नासा पुट दोय वक्षस्थल अरु कंठ मैं ॥ पासु दोनो सोइ भाल अंग जुग पग गनो ॥ २०७ ॥ दोहा ॥ फस्त खोलिवे के सबै लीजै अस्त्र मंगाय ॥ देस काल कौं देखि कै रुधिर स्राव सुखु पाय ॥ २०८ ॥ छंद मदिरा ॥ सत्रह और कहे पुनि ठौर विचारि तिन्है तस ली

जिये जू ॥ नस्तर कर्म करै जो विजक्षन लक्षन ते रग जानिये जू॥ रक्त विकार भवै जबहीं तब अश्व महा सुख पैयै जू॥ ते सब ठौर गनाय कहौं धरि धीर अहो चित धरियेजू॥ २०६॥ छंद दुमिला॥ धुज के अरु कच्छ के मध्य महा पुनि गुल्फ चहू पग के जुन सै॥ गुद पुच्छ ललाट गरे चहुं जंघन जा विधिसों जेहि भांति लसैं॥ वस्तिस्थान गनौ इतने अब संधिस्थान सुनौं सुति सैं॥ जिव्हा औरु दु कान के मूल सु मर्मस्थान लखोगति सैं॥ २१०॥ दोहा॥ संधिस्थान गनाय के कहे नकुल मतभाखि रक्त स्राव के जानिये ठौर सबै मुनि साखि॥ २११॥ विधिवत सो पहिचानि के रग खोले सज्ञान॥ विनि परखे अज्ञान युत होत भ्रान्ति की खान॥ २१२॥ रूप परीक्षा रगन की बुधियुत करै विचार॥ सो कहिये शुभ वैद्य वर ताकी बुद्धि अपार॥ २१३॥ आम कोप ते होति है रुधिर विकार अनंत॥ तिरजग गति शोणित लखो वाजि व्याधि जो वंत॥ २१४॥ कुपच अन्न ते जानिये आम दोष बढ़ि जाय॥ बंधे रहत ते तुरग नित ति- न की थिति ठहराय॥ २१५॥ छंद नरेंद्र॥ जो तन पुष्टि वलि- ष्ट तुरग वर रुधिर विशेषै जानो॥ जे दुर्वल वड़ अंग लखो न- हिं तिन की अस गति मानो॥ उत्तम मध्यम हीन यथा जोतिन कहुं तस निरधारो॥ प्रथम एक औ अर्द्ध तुर्य पुनि शोणित भा- व विचारी॥ २१६॥ दोहा॥ सूक्षम रीति मैं यह कही कहि हौं और विसेष॥ जैसी विधि जा ठौर जो शालि होत्र मत ले- ख॥ २१७॥ छन्द छप्पै॥ सौ सौ सिरनि वास गनी मुख औ कपोल महं॥ दंतन मध्य मैं वास लखौ करवरी मैं सोत- हैं॥ दस मेह मध्य दस पुच्छ समुझि ता विधि सो लीजे॥ औ मंडन द्वौ जंघ पचिस पचिस कहि दीजै॥ बाहस कंठमेंसुख

मै ता विधि के तस्यान तब ॥ सो धन हित है रक्त के यहै कहे परमान अब ॥ २१८॥ छंद मत्तमयंद ॥ पित्त करेजि लखौ रंग सो अरु बात विकार को स्याम बखानौ॥ कै पुनि लाल सुरंगित शोणित पांडु सो रंग कफै पहिचानौ ॥ पिच्छल ताकै कहैं मुनि सो कै रंग कषायल ताहि प्रमानै ॥ याहि प्रकार विकार तिहू कहैं रंगति रक्त परीक्षहि जानौ ॥ २१९॥ दोहा॥ तीनौ दोषन के कहे जो रंग तीनि प्रकार ॥ सब लक्षण जो पै मिलैं सन्निपात निर्धार ॥ २२०॥ सन्निपात के दोष ते रोग असाध्य हि जानि ॥ भिन्नि भिन्नि के भेद ते होति त्रविधि पहिचानि २२१ कुंडलिया ॥ उदर शुद्ध करि अश्व को दीजे अभया ताय ॥ पांच २ पल दिवस प्रति सुरभी मूत भिजाय॥ सुरभी मूत भिजाय ताहि अभे यासो दीजे॥ ग्रंथ रीति अनुसार चिकित्सा या विधि कीजै ॥ पांच २ पल देउ दिवस इकइस लगि ताई ॥ उदर शुद्ध इहृ जाय व्याधि सब अश्वन साई ॥ अथ ऋतु प्रचार दोहा॥ लागत वर्षा काल के अश्व चढ़ै नहिं कोय॥ और ऋतुन सब छाड़ि कै यह अति दूषित होय ॥ २२३॥ जहां पवन हो शुद्ध अति बांधे थान पुनीत ॥ कूप नीर दे पान कहूं रक्षा करै विनीत॥ २२४॥ तेल लगावैं तिक्त जो अश्व अंग के मांह॥ देइ विरेचन चतुर नर पुष्टि हेत तेहि कांह ॥ २२५॥ रक्त स्राव अति शुभ कहो तेहि ऋतु मैं ऋषि राय ॥ करै चिकित्सा बुद्ध वर अश्व व्याधि बहि जाय॥ २२६॥ एक अंतर दिन युक्त सौं सिंधु लवण कहँ देइ ॥ रका इइक परमान करि मुख जड़ता हरि लेइ २२७ छंद मत्त मयंद॥ वर्जित तोइ कहो बर्षा तेहि मध्य तुरंग प्र को वल छीजे॥ भीजत पीठि सो व्याधि बढ़ै जुरु खाजु तुरंते सो गनि लीजे॥ उत्तम नीर सुपान कराय औ थान भलो सुभ ता विधि

कीजै ॥ सुद्ध जो भोजन हेत कही तब दूब नवीन मगाय के दीजे ॥२२८॥ अथ सरद ऋतु ॥ दोहा ॥ सरद काल मैं है कहो भातु सर करा छीर ॥ भाग बराबर दीजिये आवत रोग न नीर ॥ २२९॥ मधुर असन औरो सुभग दीजे दिन प्रति ताहि ॥ नदी नीर अतिसुद्ध लखि पान करावै वाहि ॥ २३०॥ मोठि महेला दीजिये घृत युत बुद्धि प्रवीन ॥ शालि होत्र इमि उच्चरै पोरुष होति नवीन ॥ २३१॥ अथ हेमंत। छंद छप्पै ॥ ऋतु आये हेमंत यहै मत नकुलज गावत ॥ जहां पवन नहिं लगै तहां सुभ तुरंग बंधावत ॥ घी उत्तम कै तैल तिक्त नित अश्व पिआवत ॥ काची दाना देत हर्दि गुड़ ताहि खवावत ॥ कह बैस केदार सु भाखि अस बाजी पालत बुद्धि वर ॥ उत्तम थान सो बांधि के ऋतु हेमंत विचारि कर ॥ २३२॥ अथ सिसिर- छंद त्रिभंगी ॥ सिसिर जु आवै तेलु पिआवै अब रका परमान मनौ ॥ दिन इकइस दीजै पुनि गनि लीजै खुइदि खवावै भाति भनौ ॥ दिन बीस प्रमानौ यह अनुमानौ जौ के अंकुर जानि लहै ॥ बाजी अनुरागै बाउ न लागै शालि होत्र मत यहै कहै ॥ दाना जो दीजै एह मत लीजै अधि महा परि पाक करै जब जौं नहिं होई चणक सो लेई सुद्ध सकल तेहि भाति धरै ॥ जब चना न पावै मसूरि लावै पीसि मिलावै तेलु तहीं ॥ इहि भाति न पालै बाजि बिसालै यत्तन घालत देर नहीं ॥ २३३ ॥ दोहा ॥ दाना बरनै जे सकल तामै मोठि बिशेषि ॥ जानि लीजिये चतुर नर शालि होत्र मत देखि ॥ २३४॥ दाना कौं अति शुभ कहै ऋतु वसंत चण भाखि ॥ ग्रीषम सतुआ जौन के मुनिकै मत अभिलाखि ॥ २३५॥ वर्षा आदि जे ऋतु कहीं सिसिर प्रयंत गनीय ॥ तामै सितिर विधान अति जानौ हेतु तुरीय ॥ २३६॥ रोग ग्रसित जे अश्व हैं जौं वर्जित तिन हेत ॥ समुझि जानि कर

चतुर नर तिन कौं दामा देति॥ २३७॥ रक्षा कीजै सरवश तामैं सिसिर विसेष॥ शालिहोत्र मुनि अस कह्यो ताहि लीजिये देखि॥२३८॥ जो स्नेह विधान है वर्षा ऋतु मैं जानि॥ जौं भक्षन ता-विधि गनो सिसिर मध्य परमान॥२३९॥ तेलु पिआवै अश्व कौं जौं भक्षन कौं देइ॥ सिसिर मध्य जो चतुर नर सकल व्याधि हरि लेइ॥२४०॥ निज इच्छा सौं सुक्ख जौं जो कछु खाय तुरंग॥ ताकौ कबहूं जानियै व्याधि न व्यापै अंग॥२४१॥ छंद मत्त मयंद मोठि कही हित दायक सो वड़ पुष्टि वीलष्ट तुरंगमही को॥ मूंग-उ तुल्य गनो तेहि के पुनि तेलु मिलाय के भक्षन नीको॥ छिक्कल हीन कहो चण सो सब कालन मै सुभ दायक ही को॥ होति बड़ो उत्साह दिये नहि व्यापति व्याधि कछू है जी को॥२४२॥ दोहा॥ अन्न अपलइ जानि के घृत दीजे सब काल॥ शालि होत्र मत अस कहै समुझै बुद्धि विशाल॥२४३॥ भच्छन विधि जो अन्न की उत्तम दई बताय॥ वातव्याधि के रोग मैं लंघन मुख्य उपाय॥२४४॥ चौपाई॥ कर्क सिंह वर्षा ऋतु अहई॥ कन्या तुला सो सर्द कहाई॥ वृश्चिक धन हेमंतहि जानो॥ मकर कुंभ पुनि सिसिर बखानो॥ मीन मिथुन संक्रम है जोई॥ ऋतु वसंत सो कह सब कोई॥२४७॥ दोहा॥ वृष अरु मेख तपत रवि मारतंड प्रचंड॥ ऋतु ग्रीषम पहिचानिये ज्वाला बढ़ति अखंड॥२४८॥ सब ऋतु एक समान नहिं भिन्न प्रकृति उहराय॥ जानि चिकित्सा कीजिये देश काल बल पाय॥२४९॥ अथ धातु परीक्षा दोहा॥ धातु परीक्षा कौं कहत नकुल मते अनुसार॥ जाके जाने ते सबै करत सु वैद्य विचार॥२५०॥ चौपाई॥ रक्त अधिक जाके जब होई॥ विधिवत अन्न खाइ नहिं सोई॥ बाढ़त रक्त पित्त बढ़ि आवै॥ कफ को कोप तहाँ दरसावै॥२५१॥ छंद नराच

जहां रक्त औ पित्त को कोप जानौ ॥ तहां खाजु की ब्याधि तुरते प्रमानौ ॥ चढ़ै पित्त को कोप जबहीं तुरंगै ॥ चलै राह नाहीं तजै चैन अंगै ॥ श्रवै नासिका तोय अति से जु भारी ॥ गनौ पित्त को कोप ताको धिकारी ॥ कढ़ै रक्त को कोप औरो निहारौ ॥ जु होवै तवै सोइ लक्षन विचारौ ॥ २५२॥ चौपाई ॥ रक्त वलासलखै कफ दोषै ॥ फुल कित रोम सो गनौ विशेषै ॥ कोइ न परै बुंद जेहि केरे ॥ ब्याधिवन्त सो गनौ घनेरे ॥ रक्त बाद दोषै अधिकाई ॥ वारवार तुरंगहि हनाई ॥ २५३॥ दोहा ॥ बात रक्त जेहि अश्व के कोंप करै जेहि काल ॥ तब हूं दुर्वलता बढ़ै नयन होयं ढ्ढोलाल ॥ २५४॥ रक्त संग इड़ दोष त्रिय कांपत अधिक तुरंग ॥ निद्रा बाढ़ै अधिक सो बहु पीड़ित करि अंग ॥ २५५॥ नयन होयं गंधक सद्रश कोइ न मैन निहारि ॥ स्याम बुंद हों जीभ में सो असाध्य निरधारि ॥ २५६॥ पीत बुंद लखि जीभ में रक्त बुंद पुनि जासु आकृत जाके वज्र सम पुनि असाध्य कहि तासु ॥ २५७॥ सवै धातु एक ठौर इड़ कोंप करै जब आनि ॥ विविधि वरण सो लखिपरै नयन परीक्षा जानि ॥ २५८॥ बात पित्त अरु कफ गनौ कहे जो तीनि प्रकार ॥ तीनौं दोषन के मिले होत त्रिदोष अपार ॥ २५९॥ द्वौ दोरवन के मिले ते द्विंदिज जानौ सोइ ॥ लक्षन ते पहिचानिये दोष परीक्षा जोइ ॥ २६०॥ मनुज हेत जैसे जतन करि निदान बुधवंत ॥ ता विधि भाषत हैं सकल सालि होत्र को तंत ॥ २६१॥ जो प्रचार परहेज के ग्रंथन कहे गनाय ॥ नर को ता विधि हैं कहत तुरंग हेत मुनि राय ॥ २६२॥ मानुष ते चौगुन कहो औषदि को परमानु ॥ तुरंग हेत सो जानिये नकुल मतो अनुमान ॥ २६३॥ पसु करि इन्हैं न जानि ये हैं देवन में देव ॥ शालि होत्र मुनि के बचन यथा तथ्य गनि लेव ॥ २६४॥ रुधिर स्त्रावन विधि। दोहा

अश्व विरेचन विधि कहौं जो है जैसे भाय ॥ जानि चिकित्सा कीजिये देस काल बल पाय ॥ २६५॥ चौपाई ॥ कर वारो अरु सोंठि लियावै ॥ अस गंध पुनि सम भाग मिलावै ॥ काढ़ा करि घोड़ा कौं दीजे ॥ उदर व्याधि ताकी हरि लीजे ॥ २६६॥ दोहा ॥ गंधक साबुन सम करौ घृत मैं देउ प्याइ ॥ रोग नसावै अश्व को उदर व्याधि गिरि जाइ ॥ राई खारी सम करौ तरु सेर परमान ॥ अति रेचन है अश्व कौ मुनिवर करत बखान ॥ विंदारक एक भूंजि कर दधि युत देइ खवाय ॥ तीनि दिवस उपचार ते उदर व्याधि गिरि जाय ॥ कारा जीरी टंक नौ तप्त नीर के संग ॥ शालि होत्र मत देखि कर रेचन कही तुरंग ॥ २६७ ॥ अथ ज्वराधिकार तत्र आदौ पित्त ज्वर ॥ दोहा ॥ अरुन नयन धौ कीस हित स्वांस लखौ अधिकाइ टापै पानी देखि कै पित्त दोष ठहराय ॥ २६८॥ मोथा पीपरि लौंग लै जै फर मिर्च गिलोय ॥ अदरख पान सो भाग सम जानो ता विधि सोइ ॥ २६९॥ अष्ट विशेषी अश्व कहँ दीजे क्वाथ बनाय ॥ सप्त दिवस उपचार ते पित्त विथा टरि जाय ॥ २७०॥ छंद मेदा ॥ वाय विरंग लेउ पुनि त्रिफला दामर लै मन मानो ॥ निर्गुंडी को डेढ़ सेर रस लैकर तामें सानो ॥ देइ खवाय अश्व कौ तब सो निहचै रोगु नसाइ ॥ अति उत्तम औषधि यह कहिये नकुल मते अधिकाई ॥ २७१॥ दोहा ॥ डेढ़ सेर गौ दूध में पीपरि लाख मिलाय ॥ औटि देउ तो तुरतही पित्त दोष मिटि जाय ॥ २७२॥ अथ बात ज्वर। दोहा ॥ भारी लखियै भौंह कौ नयन द्रवै बहु नीर ॥ पीरो रंग कण को लखौ गनौ वात ज्वर पीर ॥ २७३॥ चौपाई गो घृत खैर सार लै आवै ॥ अग्नि आंच सौं तप्त करावै ॥ लेप हाथ अरु पाय कराई ॥ पीड़ा अंग तुरंग नसाई ॥ पुनः ॥ सोंठि कटाई वाय विरंग ॥ पिपरा मूरि सोंचरहि संग ॥ हींग सुहागा

भूंजि सो लेइ ॥ सेंधो भाग बराबरि देइ ॥ टंक तीनि नित घोरहि दी
जै ॥ मेटै रोग व्याधि सब छीजै ॥ २७४ ॥ अथ स्लेषम ज्वर । चौ
पाई ॥ तप्त सरीर अम्ब को देखौ ॥ पुनि आमासु नैन पर लेखौ ॥
२७५ ॥ दोहा ॥ कफ डारै मुख ते अधिक कांखै घास न खाय ॥
कफ को ज्वर तेहि जानिये शाल होत मत पाय ॥ २७६ ॥ चौपाई ।
पीपरि सेंधव गो घृत आनौ ॥ अम्ब रोग हर उत्तम जानौ ॥ ता पाछे
यह काथ बनावै ॥ अंग अम्ब की व्याधि नसावै ॥ २७७ ॥ वाय वि
रंग अंड जर लेहू ॥ सोंठि कचूर गुर्च सम येहू ॥ अष्ट विसेखी का
ढ़ा दीजे ॥ सात दिवस महँ नीको कीजै ॥ अथ द्विंदिज ज्वर ॥
दोहा ॥ बात पित्त कफ पित्त पुनि कफ अरु बात गनाय ॥ द्वै
दोषन लच्छन मिले द्वंदिज कहौं जनाय ॥ २७८ ॥ अथ बात
पित्त ज्वर क्वाथ ॥ दोहा ॥ कुटकी गुर्च चिरायता नागर मोथा
लेइ ॥ सुंठी फ़फुला पाठ अरु सम करि काढ़ देइ ॥ २७९ ॥ अथ
कफ पित्त क्वाथ ॥ दो० ॥ गुर्च कटाई इंद्र जौ रूसा और जवास
भारंगी जर पान की करै पित्त कफ नास ॥ २८० ॥ अथ विरोधी काथ
सो घोड़े देइ प्याय ॥ कफ अरु पित्त की व्याधि जो तुरतै सो बहि
जाय ॥ अथ बात कफ ज्वर । दोहा ॥ अजवाइनि औ सोंठि लै
राजनी पीपरि लेइ ॥ रींठा जीरो इन्द्र जौ मिर्च निसो ती तेइ ॥ २८२
भारंगी पुनि भाग सम औषधि कहौं गनाय ॥ बीज सम्हारू काथसे
बात कफ़ज्वर जाय ॥ २८३ ॥ अथ सुख ज्वर ॥ दो० ॥ होइ भ्रमित
अति अम्ब सो दी राय ते जोइ ॥ नैन बहै संसा करै सूखै मुख पु
नि सोइ ॥ २८४ ॥ वेल गुदा नरकुल जरैहि खस पटोल सम भाग
अष्ट मास काढ़ा दिये आवै नहीं सो लाग ॥ २८५ ॥ अथ मन
मथ ज्वर ॥ दोहा ॥ वार वार मूतै तुरंग हींसै औ डवराय ॥
पंडित ज्वर की व्याधि सौं सो मन मथ ठहराय ॥ २८६ ॥ जीरो जेफर

मस्तगी माग जो केसरी एड्ड ॥ गाय दूध मिसरी सहित मनमथ कौ हरि लेड्ड ॥ २८७ ॥ अथ गलही ज्वर ॥ दोहा ॥ दीले रहैं जो करण जेहि अफरो उदर लखाय। गलही ज्वर पीड़ित तुरंग दाना घास न खाय ॥ २८८ ॥ कवाई जर को अरक पुनि त्यों अजमोदहि लेड्ड ॥ नारंगी खारिका सहित अरहर चूनहिं देड्ड ॥ २८९ ॥ गलही ज्वर के नास कौं है यह सहज उपाड ॥ ऊपर ते तब तुरत ही आध सेर घी प्याड ॥ २९० ॥ अथ सरदी गरमी ज्वर ॥ दोहा पानी पीकर अश्व कौं दौरावै जो कोइ ॥ सरदी गरमी युक्त करि ताहि ताप तब होइ ॥ २९१ ॥ गज पीपरि वच हींग लै सोठ चून सम भाइ ॥ अष्टमास काढ़ा दिये दीजै ज्वरहि बहाय ॥ २९२ ॥ अथ सन्निपात ज्वर ॥ चौपाई ॥ तन्न सरीर अश्व को होइ हींसै रापै चौकै सोइ ॥ स्वास प्रचंड अश्व कहँ देखौ ॥ सन्निपात ज्वर ताकहँ लेखौ ॥ वाय विरंग खंड जर खावै ॥ लोदिगुर्च फल पोस्त मिलावै ॥ अष्ट विशेखो काढ़ा करै ॥ सन्निपात घोड़ा को हरै ॥ दोहा ॥ सन्निपात हय को हरै मिर्च सो पिपलामूल ॥ काकरा सिंघी हर्र बच देड्ड नासु सम तूल ॥ सोरठा ॥ लाख सुपारी आन पथ्या और इलायची ॥ देड्ड नासु पर मान सन्निपात हय को हरै ॥ लहसनु पिपरा मूरि सज्जी सेंधौ सोंठि वच करै सन्न की दूरि अजवाइनि विड़ताम्हरियो ॥ दोहा ॥ गुड़युत पिंड बनाय के देड्ड खवाय तुरंग ॥ सन्निपात नासै सकल बढ्ड सुखु पावै अंग ॥ अथ सूलोप चार ॥ सलिवंत सूल चौपाई ॥ स्वासा करै महा दुख भरै ॥ वार वार पुनि लोटै गिरै कोखै अरु चितवै अति वंत ॥ तासौ कहैं सूल सलिवंत ॥ स्याह चारि अजवाइनि लाई ॥ टंक नौक दामरि सो बताई ॥ गो घृत सहित सो घोरहि दीजै ॥ तुरत सूल सलि बातहि छीजै ॥ ३०२ ॥

अथ मूत्र बंत शूल ॥ दोहा ॥ टेढ़ी डोलै पूंछ सोय है ता-
ही पहिचानि ॥ मूत्र बंत लक्षन सकल भुई सूंघै ज़ु निदान ॥
सीतल बदन तुरंग को सीस हलावै जोय ॥ मूत्र बंत वह शू-
ल है यह भाखत सब कोइ ॥ सेंधौ नून औ मिर्च लै मक्खन
सहित मिलाय ॥ तासु दीजिये तुरंग को मूत्र बंत हरि जाय ॥
चौपाई ॥ गज पीपरि पीपरिहि मिलाय ॥ डेढ़ सेर जल में औ-
टाय ॥ घी गुरु सहित सात दिन दीजै ॥ मूत्र बंत को विदा सो
कीजै ॥ अथ कृष्णबंत शूल ॥ दोहा ॥ कोखि चढ़ाय छाती हनै
फिरि २ कोखा देखि ॥ कृष बंत वह शूल है लक्षन कहै विसेखि ॥
छंद अरिल्ल ॥ छालि सैंजने की लै पुनि सेंधव नून मंगाइये
बीज तोमरी करुई लेकर दामर खोजि लियाइये ॥ परिहा बा-
रि के तेल में पिंड बनाइयै ॥ टंक नौक भरि देतहि शूल भगा-
इये ॥ अथ वायशूल ॥ दोहा ॥ गिरै धरनि औ दृग करै
आंखैं मूंदै जोय ॥ वाय शूल तासों कहैं यह जानो सब कोय ॥
चौपाई ॥ पाषाणवेद बच कूट हिलावै ॥ सेंधव सम करि ताहि
मिलावै ॥ दोहा ॥ दही के अनुपान मैं दीजै पिंड बनाय ॥ वा-
य शूल सो तुरंग को तुरतै देत नसाय ॥ पुनः ॥ खुरासानि बच
कूटहि लीजै ॥ सेंधव दंति छालि सम कीजै ॥ भुंजि सुहागा गंधी
लेऊ ॥ पाषाण वेद लै तामैं देऊ ॥ दोहा ॥ ए सब औषध भा-
सम मक्खन लेइ मिलाय ॥ देतै ही का होइ सो सर्व व्याधि
वहि जाय ॥ अथ गुल्म शूल ॥ दोहा ॥ गोला उठै सो उदर
मैं पीड़ित होय तुरंग ॥ सूंघै कोखि गिरि गिरि परै बड़ दुख
पावै अंग ॥ गोरोचन बवई सहित पीपरि लेइ पिसाइ ॥
बीजपूर रस सानि के बाजिहि देइ खवाय ॥ सोरठा ॥ ज्वर
गुल्म नसि जाय यह पिंडा के देत ही ॥ मुनि मत कहो जताय

समुझि धरौ उर चतुर नर ॥ अथ छिन्न मस्त का सूल। दोहा॥ नथुनन में लोहू बहै लक्षन यहै विचार॥ रक्त भ्रमेही शूल लखि फिरि कीजै उपचार॥ जुनरी वरिगो दुग्ध मै तुरतहि दीजै नासु रक्त भ्रमेही शूल को यासे होइ विनासु॥ चौपाई॥ जीरो और उसीर मगाय॥ लेपन माथे तासु कराय॥ नासु देइ त्रिफलाके नीर॥ या विधि हरै अश्व की पीर॥ अथ वात मस्तका शूल॥ दोहा॥ सिर भारी सूजनि लखौ वातमस्तका शूल॥ त्रकुटा के फल नासु ते दोष होय निरमूल॥ सोरठा॥ वाय विरंग कचूर कुटकी सोंठि सुहाग युत॥ सम करि पिपर मूर भूजे आटा दीजिये॥ दोहा॥ प्रात सांझ दोऊ वखत पिंडा देउ खवाय॥ रोगु नसावै तुरंग को सकल विथा वहि जाय॥ अथ कफ मस्त-का शूल॥ दोहा॥ भौहैं सूजैं अश्व की पीत भरै कफ जोय नासु कटाई दीजिये लखि कफ दोषै सोइ॥ सोंठि सुहागा सों चरइ मिर्च करण सम लाय॥ पिंड देतही तुरंग की शूल विथा मिटि जाय॥ अथ क्रम शूल लच्छनं॥ दोहा॥ नांक ऐंचि सूंघन लगै चौं नहीं फिरि घास॥ गिरै पटेरै पेट तें निसुदिन रहै उदास॥ राई हल्दी कायफल तीनौं वस्तैं आनि॥ प्रात होतजो दीजिये भूजे आटा सानि॥ व्याधि नसावै अश्व की भाषि कहो मुनि राय॥ पुनि पाछे से कीजिये या विधि और उपाय॥ अरिल्ल-त्रिकुटा कूट मगाय सो ताहि बटाइये॥ वच दामर पुनि भागव एवर आनि मिलाइये॥ घीगुरु सो ले सानि टंक नौ दीजिये परिहा क्रम मिटिजाय सो शूल नसाइये॥ अथ भ्रम शूल दोहा॥ चितवै संभ्रम चहूं दिसि अरु डवरौ हय होय॥ भूख घटै पहिचानिये यह भ्रम शूल जु सोय॥ चौपाई॥ सोठि वचा गज पीपरि लावै॥ पीपरि हींग औ लोनु मिलावै॥ टंक नौक

सम भाग सो कीजे ॥ घी में सानि अश्व कौ दीजे ॥ तुरते भागै
सकल विकार ॥ नकुल मते शुभ यह उपचार ॥ पुनः हर्दी राई
हर्र मंगावै ॥ सोंठ सुहागा खील करावै ॥ हींग भूंजि के तामैं
देइ ॥ सम करि भाग औषदी लेइ ॥ दोहा ॥ भूंजे आटा सानि
के घोड़ै देउ खवाय ॥ भूख बढ़ै बल वीर्य युत नीको होय बना-
य ॥ अथ मुख शूल दोहा ॥ दातन सों मुहं टेकि के जब घोरा
रहि जाय ॥ निश्चै करि मुख शूल है कीजे ताहि उपाय ॥ चौपाई
सोंठि मिर्च अरु पीपरि लावैं ॥ लहसनु बाय बिरंग मिलावै ॥
घृत मैं सानि अश्व कौं दीजे ॥ रोगु हरै नीको पुनि लीजे ॥ अथ
राक्षस शूल ॥ दोहा ॥ उपजे शूल तुरंग के उदर माहिं जेहि
वार ॥ उठै गिरै बहु धरनि मै हींसै टापि अपार ॥ द्रगन मध्य
लाली लखौ राक्षस शूल विशेषि ॥ दवा करौ ततकाल सो शालि
होत्र मति देखि ॥ पकी अमिली तेलु लै सेंधव लोनु मिलाय ॥सि-
रका के संग देतही सकल विथा हरि जाय ॥ अथ रस वंत शू-
ल चौपाई ॥ टूटै बैठे लटि पुनि रहै ॥ ऐसे पेट दुःख पुनि सहै
ऐसे लक्षन लेइ विचारी ॥ सो रसवंत शूल अधिकारी ॥ अजवा-
इनि अरु हर्र बखानौ ॥ बाय बिरंग सो ताकौ जानौ ॥ बीज तु-
रैया के लै औरी ॥ निबुआ पात कहत तेहि ठौरै ॥ सम करि भाग
सो औषदि लीजे ॥ टंक नौक करि घीमैं दीजे ॥ दोहा ॥ नकुदा
गंधी कायफल खंड बराबरि लेइ ॥ ए औषदि सब जतन से
मदिरा के संग देइ ॥ सोरठा ॥ कर वावै परहेज दाना पानी घा
स सो ॥ औषदि है यह तेज गात देखि के कीजिये ॥ अथ अ-
जीर्ण शूल ॥ दोहा ॥ अंगु घालि लोटत रहै करै सोस अति
नित्त ॥ शूल अजीरन जानिये ए लक्षन धरि चित्त ॥ अरिल्ल-
सेंधो सोंचर हींग वच लीजिये ॥ अजवाइनि पुनि आनि सो चूरण

पीजिये ॥ देइ दही मैं सानि औषदि सम करि येही ॥ परिहा शूल अजीरन फेरि न उपजै तेही ॥ अथ धात क्रम शूल ॥ दोहा ॥ पोषी देखे फेरि फै ज्वाला अधिक अपार ॥ रोग अ-साध्य सो जानि के कहिये क्रम निर्धार ॥ छंद नरेंद्र ॥ ग्वा-री और हैंजने की जर सोऊ छलि मंगाई ॥ अजवाइनि अरु वाय विरंगे सम करि ताहि पिसाई ॥ टंक तौक लै गुर मे दीजै तुरतै रोग नसाई ॥ वेस वेस केदार सिंह यह नकुल मतो स-धिकाई ॥ दोहा ॥ लै सेहुड़ के दूध मैं ननक कपूर मिलाय देत उदर ब्रण जंतु जे ते सब जात नसाय ॥ अथ सभू क्रम शूल ॥ चौपाई ॥ तुरी रहै पुनि पाउं पसारे ॥ ज्वाला ढीले सो अधिकारे ॥ ए लछन देखो जो कोई ॥ मूल सभ्र क्रम जानौ सोई ॥ अर हरि अरु अजवाइनि दोऊ ॥ निर्गुंडी कहिये पुनि सोऊ ॥ इंद्रोरनि जर और कटाई ॥ सम सब भाग सो कहौं ज-ताई ॥ दोहा ॥ सब औषधि चूरन करौ देउ दही मैं सानि ॥ लै गुर सौं पुनि दीजिये करै रोग की हानि ॥ अथ मभ्रान्ति शूल ॥ दोहा ॥ हींसे भांकै रुकै अति वोलै वारंवार ॥ मूल मभ्रान्ति वखानिये ताको यह उपचार ॥ चौपाई ॥ वाय विरंग हींग स-न आनौ ॥ नमदा ए रव सो ताहि वखानौ ॥ वच अरु सोंठि सु-हागा लीजै ॥ नीर रेह के सानि सो दीजै ॥ दोहा ॥ सात दिवस परमान करि औषदि कीजै मित्त ॥ मूल मभ्रान्ति नसाइ सो नि-श्चै जानौं चित्त ॥ अथ शिला व्रत शूल ॥ चौपाई ॥ गिरै धरनि अरु सूंघै छाती ॥ मूल शिला व्रत सो उतपाती ॥ हींग सोंठि सेंधव निर्धार ॥ सिरका सानि करै उपचार ॥ तप्त नीर पी वे को दीजै ॥ जब लगि शूल व्याधि नहिं छीजै ॥ लंघन करे हानि नहिं होई ॥ दाना दिये व्याधि सब खोई ॥ ऊर्ध्व शूल ॥

चौपाई ॥ मुख घोड़ा के पानी झरै ॥ अधिक पसीना वहु विधि गिरै
लोटै नहिं वैठै नहिं भूमें ॥ नयन मूंदि सो अति झुकि झूमें ॥ पीपरि
पिपरा मूरि मंगावै ॥ वीज कसौंधी मिर्च मिलावै ॥ सोंठ वेतरा
मूरि सुहाई ॥ गाय छीर में देइ खवाई ॥ दाना को तेहि नाम
न लीजै ॥ तप्त नीर पीवे को दीजै ॥ अथ सन्निपातशूल ॥ दो-
हा ॥ कांपै तुरंग सभीत अति उकुलि गिरै भुइं माहि ॥ सैन्निपात
सो शूल है यामैं संसै नाहि ॥ चौपाई ॥ अजवाइनि वच राई
लावै ॥ भूंजि फ़रकरी खील बनावै ॥ मिर का गो घृत हींग सुहा
गा ॥ घोड़ै देऊ हरै दुख नागा ॥ सप्त दिवस यह औषदि करै ॥
सकल शूल घोड़ा के हरै ॥ पुनः प्रथम सैजना हींग मंगावै ॥ अ-
जवाइनि फटकरी फुलावै ॥ दोहा ॥ वाय विरंग सोंठि लै धूरा
करौ बनाय ॥ मरदन कीन्हे अंग में सकल व्याधि वहि जाय
पुनः सुंठी वायविरंग लै अजवाइनि सम सोइ ॥ सप्त दिवस का-
ढ़ा दिये सकल व्याधि है खोइ ॥ वर्ष दोइ प्रति लीजिये लोहू
सें प्रवाउ ॥ रोगी अश्व न होइ तेहि काहिक करौ उपाउ ॥ विनो
चराइ अश्व कें लोहू लीजै नाहिं ॥ विन जानै जतनै करै बड़ दु
ख वाढ़ै ताहि ॥ अथ वाय वरननं ॥ विकट वाय ॥ दोहा ॥
हयं अंग सब धूमते ना पावै हय चैन ॥ निरखि जानि लच्छन
यहै विकट वाय है ऐन ॥ वच निबुआ को रस मिलै करै लेप
तेहि अंग ॥ दीजै औषदि खान की बहु सुख लहै तुरंग ॥ वाय
विरंग जु हर लै घी गुरु सौ सन वाय ॥ यह औषदि के खात ही
विकट वाइ हटि जाय ॥ अथ समान वाय ॥ रोग वात आगे
रहै आगिले को तन तान ॥ तासौ वाय समान कहि लच्छन कह-
त वखान ॥ तोटक छन्द ॥ अब पीपरि पिपरा मूरि सुलै ॥ अ-
ज वाइनि वाय विरंग मिलै ॥ सेऔ सोफ सो चूरन करी ॥ निंबू

को रसु तामें भरि ॥ दोहा ॥ घी गुरु सौं पुनि सानि के दीजै ताहि खवाय ॥ तीनि दिवस परमान ते वाय समान नसाय ॥ अथ उधान वाय ॥ दोहा ॥ आंखिन की पुतरीं फिरैं ताते चारौ पाय ॥ इन लच्छन ते जानिये सोई उधानक वाय ॥ छंद नरेंद्र ॥ कालि सैंजने की सुभ लहसनु निर्गुंडी लै आई ॥ वच दासरि सम भाग सबै सो लेइ तबै औटाय ॥ टंक नौक भरि सो पुनि लै करि दीजै ताहि खवाई ॥ गो घृत अनूपान गुड़ के संग वाय उधानक जाई ॥ अथ अंड वायः दोहा ॥ अंड कोस सू जेर हैं लच्छन कहौं विचार ॥ अंड वाय तातैं कहैं करौ तासु उपचार ॥ चौपाई ॥ घी अरु तेल से मर्दन कीजे ॥ ता पाछे यह औषदि दीजै ॥ सोंठि कटाई दोनो लेउ ॥ पीपरि वच पुनि तामें देउ ॥ ऊमरि की जरखोदि मंगावौ ॥ क्वाथ देऊ सब रोग नसावै ॥ दोहा ॥ गेरू सोंठि कूर ले कारा जीरी आनि ॥ मथि लीजे सो छीर मैं गोवर के रस सानि ॥ करि के गर्म लगाइये वैजा पर यह सोइ ॥ या औषदि उपचार ते वैजा रोग न होइ ॥ अथ मुख वाय ॥ दोहा ॥ मुख सूजे जा अम्ब को लच्छन जानौ सोइ ॥ मुख सो वाय विचारि के कहत सियाने लोय ॥ अरिल्ल छंद ॥ जवारखार औ हर्र लै सेंधव आनिये ॥ अजवाइनि औ सोफ़ सो सरसों सानिये ॥ चारि दिवस भरि ताहि पिंड यह दीजिये ॥ परिहा मुख वाय नसाय तुरी सुखु मानिये ॥ अथ रस कुंडली वाय ॥ दोहा ॥ परै गूमरी अम्ब के पैसा सी लखि जौन ॥ वाय कहत रस कुंडली इन लच्छन ते तौन ॥ अरिल्ल छंद ॥ त्रफला और अरूसो बताइये ॥ सज्जो निर्गुंडी पात सो लैके मिलाइये ॥ सिरका के रस सानि सो मर्दन कीजिये ॥ परिहा औ रूसो औषदि या विधि दीजिये ॥ दोहा ॥ अजवाइनि अरु सोंठि पुनि लहसन सहित बराय ॥ घी गुरु सौ

रस कुंडली देइ खवाय भजाय ॥ अथ गलग्रह वाय ॥ दोहा ॥ आंखि मूंदि मुख भौं लगैं नकुआ खैंचै जोय ॥ वाय गलग्रह जानिये इस लच्छन से सोइ ॥ चौपाई ॥ मर्दन ताते घी सों करै खैवे कौं औखदि अनुसरै ॥ सौंठि मङ्गरा जीरो लेई ॥ वाय निरंग भाग सम देई ॥ दोहा ॥ घी सौं सानि खवाइये यह औषदि सिर ताज ॥ वाय गलग्रह कौं हरै जैसे गज मृगराज ॥ अथ कंप वाय ॥ दोहा ॥ कांपति देखि तुरंग कौ कंप वाय पहिचानि ॥ जो विकार कछु और नहिं औषदि या विधि आनि ॥ दीजे दूध मिलाय करि सेल सर करा लाय ॥ पान करावे अश्व कौं कंप वाय वहि जाय ॥ वर्षा जल औ पवन ते पीड़ित होइ तुरंग ॥ तिनहूं को उपचार यह पुष्टि करै सब अंग ॥ गोघृत औ गो दुग्ध लै मिसिरी सहित मिलाय ॥ तनक कपूरहि संग दै कंप वाय वहि जाय ॥ अथ अधंग वाय ॥ दोहा ॥ आधो धर जा अश्व को जकड़ि वाय रहि जाय ॥ उठै न आधो अंग पुनि ताको करै उपाय ॥ सेमर छालि मंगाय के निर्गुंडी घी संग ॥ लहसन अमिली भाग सम देउ खवाय तुरंग ॥ मालिश कीजे तेल घृत ताते करि ता वार ॥ अर्द्ध जकड़ खुलि जाय सो कीन्हे यह उपचार ॥ अथ अग्नि वाय ॥ दोहा ॥ परैं पपोरा देह मैं अग्नि दग्ध के ढंग ॥ अग्नि वायु तासें कहत जानि परीक्षा रंग ॥ चौपाई ॥ सेर एक नैनू ले आवै ॥ मद मुलतानि औ मिर्च मंगावै ॥ मधुयुत कडुये तेल मिलाय ॥ अंग अश्व के देइ लगाय ॥ पोंछि अंग यह औषदि करै ॥ उर्द उसेय नीर मथि धरै ॥ दोहा ॥ अंग अश्व के मर्दिये नीर यहै ता वार ॥ पालि होत मत देखि कै उत्तम यह उपचार ॥ अहि कारे की केंचुली मांसे चारि मंगाय ॥ रोटी करि घृत सानि के घोड़हि देइ खवाय ॥ पुनः फफुला ले दस सेर सो

खंड खंड कर वाय ॥ मठा मेलि दिन सात लौ घूरे देउ गड़ाय ॥ दिवस आठवें काढ़ि के सेर सेर प्रति नित्त ॥ दीजै खान तुरंगकी हरै रोग निहचिन्त ॥ काई लेकर ताल की जौं के आंटा सानि ॥ सात दिवस के खातही आपै वायु की हानि ॥ अथ साकन रोग. नकुष्ण वहि खांसत रहे लोक ल्हार निर्धार॥ सकल दोष की जर यहै करै ताहि उपचार ॥ हींग सोंठि को नासु दै जतन सहित जो कोइ ॥ या प्रयोग के करत ही साकन डारै खोइ ॥ पीपरि सिंधु हजीर लै सोंचर सहित मिलाय॥ पीसि छानि सम भाग करी दीजै नासु बनाय॥ सोरठा॥ फल विभीत सुभ लेइ मिलवै फलनी राजिका ॥ सिंधु लवन युत देइ कास श्वांस नासै सकल सहदोई बच चारु इन्द्र वारुनी कूट युत ॥ मधुयुत के उपचारु हरै कांस संसै नहीं ॥ अथ कुब्बक ॥ दोहा ॥ पीवा तर गुम्मरी परै सोथ अधिक उहराय ॥ बलगम बिगरै अश्व के कुब्बक कहै जताय॥ हरै रक्त कारि जतन सौं घृत देवै नित प्रात॥ पुनि लेपन यह करतही बड़ सुख पावै गात ॥ चौपाई॥ रस न अरनी सुंठी लीजै ॥ रजनी दारु हर्दि सम कीजै ॥ चीतोल्वंग जरा युत लेइ ॥ सोथ ध्वंस लेपन करि देइ ॥ दोहा॥ रजनी पत्र पलास के तक्र सानि दै आंच॥ सीर गर्म लेपन करै नासै कुब्बक सांच ॥ अथ खारिस ॥ दोहा॥ कारे तिल कुट वाय के वामें तेलु मिलाय॥ पुनि हाडी में डारि के ताहि लेइ औटाय॥ हांड़ी गाड़ै पांच दिन घूरे मैं फिरि जाय ॥ छठे दिवस कढ़वाय के आलसि करै बनाय ॥ पहर बादि इन चाइये पांच दिवस कै सात॥ या विधि के उपचार ते खारिस रोग नसात पुनः बकुची गंधक मैन सिल वाय विंगड़ चोख॥ कूटि पीसि जल कूप मै निसि भिजव निर्दोष ॥ तिक्त तेल युत मर्दि करि तीनि

चरी दै घाम ॥ फिरि पाछे हनवाइये रहे न खारिश नाम ॥ पुनः पाषाण बेद गंधक कह्यो दोऊ निसा समेत ॥ और मनो ह्वासर पिषा मक्खन मैं मथि लेत ॥ यह औषदि नित मर्दिये और खवावै मित्त ॥ खाजु नसावै अश्व की निश्चय जानौ चित्त ॥

औषदि चांदनी मारे की ॥ दोहा ॥ दधि सुत रवि सुत कौ हनै है यह रोग निखेद ॥ तदपि औषदी कीजिये शालिहोत्र लहि भेद ॥ चौपाई ॥ प्रथम एक मुर्गी मंगवावै ॥ जायफल मिर्च सो ताहि लियावै ॥ दोहा ॥ चीरो मुर्गी पेट सो लै कर तामैं देऊ ॥ सेर दसक गो दुग्ध मैं औटावन करि लेऊ ॥ पांचसेर जब दूध सो औरत ते रहिजाय ॥ मुर्गी काढ़ि के फेरि तब लीजै दही जमाय ॥ घृत निकारि दधि मथि तवै कीजै यह उपचार ॥ मुर्ग पेट ज़ेफ़र वसी मिर्च लेइ ता वार ॥ मिर्चैं नैनू बांटि सो तुरग घोड़ा के देय ॥ रोग चांदनी प्रबल सो ताको बड़ हरि लेइ चौपाई ॥ पीपरि मिर्च सोंठि सम आनौ ॥ पुनि मेथी अरु पानहिं जानौ ॥ लहसनु और सैजने छालि ॥ कंज मैन फल तामैं घालि ॥ पैसा भरि को पिंड बनावौ ॥ घोड़ै एकु सो प्रात खवावौ ॥ दोहा ॥ अजिया चर्म मगाय के झांपै बदनु तुरंग ॥ फिरि औषदि या विधि करै विथा न व्यापै अंग ॥ चौपाई ॥ लहसनु हींग सुहागा लीजे ॥ काएजीरी तामैं दीजे ॥ सेधव सोंचर सज्जी लावौ ॥ भारंगी अरु सोंठि मिलावौ ॥ पीपरि मिर्च सो मूल जवासा लेउ कयाई अतीस अरूसा ॥ विसखपरा अरु अदरख पान ॥ सम सब औषदि एक प्रमान ॥ दोहा ॥ सींगु जरावौ भैंसि को रख ताहि करि लेऊ ॥ पिंड टंक परमान नौ भूजे आटा देऊ ॥ तप्तनीर दै पान कौ पहर इइक उपरांत ॥ धूरा कीजे अश्व के होय रोग की सांति ॥ अथ धूरा- चौपाई- आक धतूरा सेंड़ड़ जारो

अजवाइनि हर्दी निरधारै ॥ राख छानि सो मर्दन कीजै ॥ याविधि रोगु अश्व को छीजै ॥ अथ मांस वृद्धि ॥ दोहा ॥ मांस वृद्धि लखि अश्व की रग खोलै ता बार ॥ फिरि पाछे से कीजिये ता- को यह उपचार ॥ चौपाई ॥ नीला थोथा सुम्मल खार ॥ अजै पाल सज्जी एक तार ॥ दोहा ॥ नोंदपात टिकिया करौ वरिके नी के भाय ॥ तिल्ली तेल मैं डारि के ताकौ देउ जराय ॥ फिरि टिकिया सो काढ़ि के औषधि तामैं देउ ॥ ताइ फेरि सो औषदी खरल ता- हि करि लेउ ॥ लेपन कीजे अश्व के मास वृद्धि वहि जाय ॥ शालि होत्र अनुसार सो सुन्दर यहै उपाय ॥ अथ आम सोथ ॥ दोहा ॥ जा घोडा के सोथ कछु ग्रीवा तन जकि जाय ॥ ताकौ तुरतै कीजि ये या विधि सहज उपाय ॥ सेंहुड़ क्वारि मिलाय के सेक करै ता बार ॥ फिरि पाछे से कीजिये ताकौ यह उपचार ॥ अजवाइनि अजमोद लै हींग सोंठि सम भाग ॥ कारा जीरो और पुनि लेप करत नहिं लाग ॥ रग छाती की खोलिये कीजे यहै उपाय ॥ सूधी गरदनि होय सो सोय सकल मिटि जाय ॥ अथ जहर बाद ॥ दोहा ॥ मिर्च कसौंधी पान सम अदरख लेऊ मिलाय ॥ या प्रयोग के योग ते जहर बाद मिटि जाय ॥ अकर करा औ लौंग लै पिपरा मूरि मिलाय ॥ आफू हींग सुहाग युत सोंठि लेऊ तेहि भाय ॥ सोरठा ॥ दूने भाग विशाल राई मिर्चै पीपरै ॥ अर्क सैजने छा- ल खोरा सम गुटिका करौ ॥ देइ सांझ अरु प्रातगुटिका एक तुरं ग कौ ॥ जहर बाद नसि जात शालि होत्र मुनिवर कह्यो ॥ अथ ब्राह्मणी रोग दोहा ॥ परसन जारि जुराब करि साम्हरी की पु- नि लेउ ॥ सिरका मैं मोय अश्व के केसन मैं मलि देउ ॥ घरी चारि के बाद सो फिरि अन्हवावै ताहि ॥ या प्रयोग से सहजही ब- म्हनी रोग नसाहि ॥ अथ बरसाती रोग ॥ चौपाई ॥ बर्षा

अरतु जबही सो आवै ॥ तब यह रोग अधिक दर सावै ॥ दोहा॥
अंग अश्व के देखिये चरसी जो परि जाय ॥ लोहू आवै जब तत्त-
क मलिये मोमु लगाय ॥ मोमु तेलु कडुये सहित सेंदुर लेउ मि-
लाय ॥ पुनि थोरी बारूद लै अग्नि आंच सौ ताइ ॥ करि के मलि-
हम सो तवै मालसि कीजे अंग ॥ बरसाती नासै सकल बड़ दुख
लहै तुरंग ॥ अथ औषदि पेशाब बंद ॥ दोहा॥ पकी आमि
ली लीजिये पन्नो करै बनाय ॥ नारि एक घोडै दिये मूत्रहि देइ
बहाय ॥ खीरा ककरी बीज लै पीसि नीर मैं सोइ ॥ देइ पिआइ
तुरंग कौं तुरतै मूतै सोइ ॥ कारी मिर्चहि पीसिये सेंधव लोन के
संग ॥ करवा मध्य सो डारतै मूतै तुरत तुरंग ॥ गर गौटा कौ वी-
रि लै मिर्चैं साबुनु और ॥ बत्ती करि शक्कर सहित देइ मूत्र के ठौर
पीपरि सोंठि पिसाइ के बत्ती लेइ बनाइ ॥ नाजा मै सो देतही
मूतै देइ बहाय ॥ कै शक्कर की सो करै पुटरी एक बनाय ॥ कै
सोरा के देतही मूत्र तुरत बहिजाय ॥ साबुन मिर्च कपूर कौ पानी
खरल कराय ॥ नरा मध्य बाती दिये मूत्र बंध खुलि जाइ ॥ अथ
लीदि बंध चौपाई ॥ कारा जीरी मिर्च सुकारी ॥ सज्जी लै कुट
की पुनि डारी ॥ हींग टका भरि खील सुहागा ॥ अजवाइनि लै
करि सम भागा ॥ खारी सोंचरु सोंठि प्रसंग ॥ जवाखारु अरु वा-
य बिरंग ॥ दोहा ॥ अदरख के रंग बांधिये गोली टंक प्रमान
दुइ गोली के देतही डारै लीदि निदान ॥ पुनः ॥ सोंठि घीव मै
सानि के गुदा मध्य दै सोइ ॥ डारै लीदि तुरंतही तहां न संसौ हो-
इ ॥ मठा मेलि खारी नमक राई लेइ पिसाय ॥ नारि दुइक सो तु-
रंग कौ दीजै ताहि पिआइ ॥ लीदि करै संसै नहीं बाय दोषखु-
लि जाय ॥ पाव सेर घी गाय को हींग टका भरि लेउ ॥ लीदि बन्द
खोलै कठिन यह औषदि जो देउ ॥ पीपर डालि मंगाइ ये दुइ

सिर जल औटाइ ॥ अथ विरोधी क्वाथ करि देत लीदि खुलि जाइ चौपाई ॥ टका एक भरि गंधक लीजे ॥ आटा सानि अश्व कौं दीजे ॥ निश्चै लीदि बंधु खुलि जाई ॥ यातें सुख तुरंत अधिकाई ॥ अथ वाय बंध-दोहा ॥ उदर बंध ह्वै जासु को वायु सरै नहि अश्व ॥ शालिहोत्र मत देखि के यह औषदि सर बस्व ॥ चौपाई ॥ अजवाइनि अरु सोंठि पिसावे ॥ घृतसंग औटि के कोखि मलावै ता पाछे कंचनरिपु लीजै ॥ सोंचरु सोंरि हींग सम कीजै ॥ दोहा कूटि सैंजना अर्क मै गोली करै बनाय ॥ भूजे आटा दीजियै-वायु तुरत खुलि जाय ॥ अथ प्रमेह ॥ दोहा ॥ त्रिफला दीजै खांड़ संग सात रोज उठि प्रात ॥ सब प्रमेह नासन करै मिटै रोग उत्पात ॥ नाग वेलि जड़ कदलि रस शक्कर लेइ मिलाइ ॥ सिगी विनौरा भाग सम तवा खीर तेहि भाय ॥ देश काल वल पाय के सुरभिदूध के संग ॥ सात दिवस के देतही बड़सुखु लहै तुरंग ॥ अथ मूत्र कृच्छ-दोहा ॥ सोंचरु हर्दी पीपरी इन्द्राइनि फल लेहु ॥ मूत्रकृच्छ हय की मिटै पिंडी सम करि देहु ॥ अथ रक्त मूत्र उपाय दोहा ॥ श्रोणित मूतै अश्व जो ताको एहै उपाय ॥ वृच मधु गाड़र घास लै सक्तु भलात खवाउ ॥ अथ अतीसार दोहा वराहरोह अरु निंब त्वक आरसी पत्र मिलाय ॥ अतीसार सब अश्व के नाश करै अधिकाय ॥ कवित्त ॥ मागधि मजीठ हर्रसुरतरु समेत कै लीजै पुनि घास जो सुगंधित सुहावनी ॥ रुधिर मल मिलो गिरत देखि कै तुरगम के पिंडी एह देइ ताहि तुरतै सु पावनी ॥ मुस्ता अरु धाय लै पटोल गिरि करणी सो इनहूं की करौ वटी मन की जो भावनी ॥ रक्त अतीसार हरै आंव को विनास करै और सकल दोष उदर के तौ सो हैं दावनी ॥ अथ जकड़ा औषदि-दोहा- लेऊ कुहारे चीरि के डारो मिंगी निकारि ॥ ताके

विच आफू धरी संपुट करौ सुधारि॥ भूजि अग्नि तें तासु को आधो नित्त खवाइ॥ दाना दीजै ताहि नहिं पानी तप्त पिआउ॥ पुनः बोड़ी पोस्त मंगाय गे सज्जी साम्हरि डारु॥ सालिव साबुनसम करौ टका टका एक तारु॥ पाउ सेर गुड़ युक्त करि भूजे आटा देउ॥ सांझ प्रातही नित्त सो घोड़ा नीको लेउ॥ पुनः-सोरठा-॥ लहसनु टंक पचीस ता सम साम्हरि लीजिये॥ दीजै सो दिन वीस जकड़ बंध तुरतै मिटै॥ पुनः दोहा॥ हर्दी सालिब गुड़ मिले सांझ प्रात नित देउ॥ घडी चारि कै जा करौ घोड़ा नीको लेउ॥ तप्तनीर इस रोग मैं आधौ प्यास पिआउ॥ सिंघ साउ तेहि दीजिये दाना नाहिं खवाउ॥ अथ सिंह ताउ-कुंडलिया- ईट पुरानी खोजि कै लीजै ताहि मंगाय॥ सुंभ तरे सो अश्व के धरै अग्नि मैं ताय धरै अग्नि मैं ताइ तक्र तापर पुनि डारै॥ उठै वाफ तब फेरि फेरि सोइ युक्ति विचारै॥ चारौ पाइन तरे जतन तेहि भांति सो कीजै॥ सिंह साउ सो कहै अश्व को याविधि दीजै॥ अथ छाती वंद-छंद दुमिला- अब छातीबंद विधान सुनौ मुनि के मत पर्म प्रधान यहै॥ रिपु कांचन सो अरु गूगुरु हींग सु सोंचरु लोनुइ कौ जुल है॥ अजवाइनि एक टका भरि लै एद्रब्य सबै सम भाग कहै॥ नित प्रात जो देत तुरंगम को तब छाती बन्द विकार दहै॥ दोहा॥ गूगुरु पैसा द्वैक भरि गाय मूत्र संग देइ॥ छातीजक खुलि जात है तहां न संसै कोइ॥ लोहू लीजै अश्व को रग विधिवत् पहिचान॥ जकड़ बंद चौबंद अरु छाती बंदहि जान॥ जतन सहित जो लीजिय लोहू हरै विकार॥ विन जाने नहिं कीजिये कठिन प्रयोग अपार॥ अथ करण रोग चौपाई॥ श्रोणित श्रवन अश्व के बहई॥ कै ज्वर युत आभास दिखाई॥ कापै अंग हलावै सीस॥ करण वायु सो विश्वावीस॥ ताकी

औखधि या विधि कीजे ॥ तिल हर्दी सौं सेंकु सो दीजै ॥ कुंडलिया- लहसनु हर्दी बांटि कै अर्क पात पुनि लाय ॥ ता पर लेप लगाइ करि आगी लेइ तचाय ॥ आगी लेइ तचाय कूटि फिरि अर्क निकारै ॥ घी युत सो वद्र अर्क अश्व के करोंहि डारै कह केदार कवि वैस सुनौ यह पर्म प्रयोगा ॥ निश्चय नीको होय करण के भागैं रोगा ॥ दोहा ॥ जो आमास्र होय अति नस्तर देइ लगाय ॥ जेतो रुधिर विकार को सो सब देइ बहाय ॥ सेंधी साजी सोचरौ लै पानी मै सानि ॥ तब पानी सो जतन सौं भरै करण में आनि ॥ सेंक करै सो चतुर नर या प्रयोग के संग ॥ रोग नसावै करण को वद्र सुखु लहै तुरंग ॥ अथ मुख रोग- दोहा- मुख ते डारै लार वद्र के कफ़ स्यामल रंग ॥ सेंक करत तेहि वार सो वद्र सुखु लहै तुरंग ॥ चौपाई ॥ कुकरौंधा को रंग निकारै ॥ सेंधव साम्हारि मिर्चै डारै ॥ सो रंग ताके वदन लगावै ॥ निश्चै करि मुख रोग नसावै ॥ उपजै दंत जो तालू माहीं ॥ काम नाम कहिये तेहि ठाहीं ॥ दंत तोरि औषदि यह कीजे ॥ घोडे घास खान नहिं दीजे ॥ दोहा ॥ लै हर्दी अरु मिर्च सो घृत पुनि शहत मिलाय ॥ तनक लोनु दै ताहि मै लेपन करै बनाय ॥ उपजै वात विकार जो मुख सूजै तब अश्व ॥ तत छन सो पुनि कीजिये यह औषदि सर वश्व ॥ चौपाई ॥ जवाखार अजवाइनि लई ॥ सरसौं सौंफ़ हर्दि पिसवाई ॥ लहसनु मिलै वजनु सम करौ ॥ जल मैं सानि अग्नि मैं धरौ ॥ गर्म सीर मुख देउ लगाई ॥ सेकैं तुरत रोगु वहि जाई ॥ अथ नेत्र रोग हरण विधि- दोहा- जातु रंग के नेत्र मै नाखूना उपजाय ॥ चतुर वैद्य सज्ञान सो या विधि करै उपाय ॥ डारि सएइ मर्दि सो ऊपर को करि लेइ ॥ लोहू मांस राह सो सब वहाय पुनि देइ ॥ चौपाई- भूजि

फटकरी खील सो कीजे ॥ सोंठि पाहत घृत तामें दीजै ॥ दोहा-
टिकिया करि सो जतन सौं बांधै ऊपर ताहि ॥ सीत वात नहिं व्या
पई नीको होइ उमाहि ॥ अथ नेत्र ढरका- सोरठा- हरसौं पि
परा मूल बकला मूल अरंड को ॥ पुनि कड़इल के फूल हाऊ
बेर सो ग्वारि लैअलीजे अर्क निकारि कूटि छानि एक तार करि ॥
ढरका हरै प्रचारि छींटा दीने द्रगन मै ॥ पुनः दोहा-चंदन
सोफ तगर लै गो घृत लेड मंगाय ॥ बकरा की पेशाव युत अं
जन करै बनाय ॥ शालि होत्र मत देखि कै उत्तम यहै उपाय ॥
भरिये द्रग जो तीनि दिन ढरका रोग नसाउ ॥ अथ फुली हर
ण विधि- दोहा- सोना मक्खी फटकरी बंदन मिर्च कचूर ॥
सिरस बीज युत आंजि द्रग करै फुली कौं दूरि ॥ पीपरि सेंधो स
हत लय विस खपरा रस सानि ॥ अंजन दीन्हे द्रगन में करै फुली
की हानि ॥ अथ रतौंधी-दोहा- साबुन मिर्च मिलाय कर
लीदि रंग मै सानि ॥ घोड़ा के अंजन करै करे रत्यौंधी हानि ॥
अथ नकसीर उपाय- दोहा- फूटैं नकुआ अश्व के पित्त कोप
वहराय ॥ सोंफ धना जीरो सहित लीजै सोंठि मंगाय ॥ आकी
विधि सों बांटि के माथे देइ लगाय ॥ लीजे लेड़ी ऊंट की अर्क
काढ़ि ता बार ॥ गो घृत रंचक नमक लै दीजै नासु विचारि ॥ सं
खाहुली के फूल लै गाय दूध मैं सानि ॥ नासु दीजिये अश्व को
करै रक्त की हानि ॥ अथ विष उपचार- दोहा- तीनि तरह
के विष कहे सोई तीनि प्रमान ॥ स्थावर जंगम सुनौ कृत्तम औ
र बखान ॥ धातु वृक्ष ते जानिये स्थावर विष होय ॥ सर्पकीट
कौ आदि दै जंगम जानौ सोइ ॥ मंत्रादिक के योग ते कृत्तम वि
ष निर्धार ॥ यथा योग पहिचानि कै कीजै ताहि प्रचार ॥ स्थावर
विष कैसे हूं खाय तुरंगम कोइ ॥ कीजे ताहि उपाय सो नकुलमतो

है जोइ ॥ छंद मत्त मयंद - लैगडुरी वदरी फल सो पुनि पंकज नाल औ तक्र मिलावै ॥ देइ खवाय तुरंगम कौ तब थावर कोवि-ष दूरिहि जावौ ॥ ताहि प्रकार सु कांस कुसौ जर केसरि नाग कुसुं महि लावै ॥ औरु हनी सरसौं असगंध सो जंगम कोविष देत भ-गावै ॥ दोहा ॥ सो पर्णी कंकोल लय गो घ्रत साथ मिलाय ॥ जंगम के विष नाश को दीजे ताहि खवाय ॥ नल कुस कांस तिहून की लीजे मूल मंगाय ॥ विष कल्पम के नाश को कीजे यहै उपाय ॥ कुसम नाग केसरि सहित तामै लाख मिलाय ॥ खान पान अरु नस्यकौ घ्रत सौं देइ मिलाय ॥ अथ हड्डा मोतरा इत्यादि रोग क-थनं - दोहा - अब आगे संक्षेप से सुनियें यह उपचार ॥ हड्डा जानू मोतरा ये सब रोग अपार ॥ पुस्तक हड्डी वेर जो और चका वल होइ ॥ रसो आदि ये रोग सब महाभयानक सोइ ॥ एकवंदी दै आदि मै कीजे यहै प्रयोग ॥ बहुत कहा अब भाखिये महा कठिन ए रोग ॥ इति ॥ अथ अम्ल दग्ध चिकित्सा कथनम् ॥ दोहा ॥ सेत दूर्वा अगरु पुनि एला सहित मिलाय ॥ सितासहित दग्धेतु रंग तुरते देइ खवाय ॥ पुनि अलसी को तेल लै सेत दूर्वा लेइ ॥ आमिली छालि जराय करि सोलेपन करिदेइ ॥ अथ शस्त्र घात चिकित्सा - दोहा - शस्त्र घात पीड़ित अधिक वा-जी लखिये जोय ॥ तिनको तुरते खवाइ ये यह औषदि तब सोइ जवाखार औ सोचरऊ सेंधव वाय विरंग ॥ मधु युत पिंडी दीजि ये घायल देखि तुरंग ॥ दारव धना मेथी कही हरिचिरौंजी लेइ गावो घी मै सानि के घायल घोड़हि देइ ॥ अथ विशेष सौं खदिवाम साला कथनं - दोहा - अब औषदि सो मै कहौं जो नासक सब रोग ॥ और मसाला विविधि विधि उत्तम अधिक प्र-योग ॥ कवित्त ॥ निसा पीत लावै औ कूटहि मिलावै जो कुटकी

तथा भाग सम कर कही ॥ कलेसुर सो जोऊ विडंगी है सोऊ सुहागा औ
कारा है जीरो मही ॥ स्फटिका जो सोहै औ पीपरि आतो है अपर कंज
पिपरा सो मूरौ लही ॥ कचूरौ समेतौ औ सुंठी निकेतौ सो तौ मिर्च का
रो औ चफला नही ॥ दोहा ॥ अमलतास असगंध कहो अजवाइ-
नि तेहि भाय ॥ मेथी सम सब औखदी दूने गुड़हि मिलाय ॥ आध
सेर को पिंड करि घोड़हि देउ नहार ॥ जहर बाद बलगम कठिन
नासै सकल विकार ॥ पुनः लौंग मिर्च औ पिप्पली अदरख पान
हिं लेउ ॥ रोग रहै सब दूरही जो नित घोरहि देउ ॥ घनाक्षरीछंद
कुटकी कचूर मिर्च लहसन विडंग सो पीपरि और पिपरा मूरहू लि-
याइये ॥ कंचन रिपु हर्दि वच गूगुरु जवाखार सो मेथी पुनि सोंठि
मैन फलहू मंगाइये ॥ सज्जी अजवाइनि कसौंदी के बीज लै चीतो
औ पमारि बीज जीरे दोउ मिलाइये ॥ फटकरी कलेसुर असित जीरै
हू सो तुल्य सब ताही सम दही भंग सेरक बताइये ॥ दोहा ॥
सौ पल मानुष खोपड़ी द्वै पल महिषी सींग ॥ लेऊ जराय सो राख
करि ताही सम लै हींग ॥ टका एक नित दीजिये भूंजे आटा संग
रोग रहै पौरुष गहै बड़ सुख लहै तुरंग ॥ अथ सिगुरुफ़ गुटि
का ॥ दोहा ॥ सिंगुरुफ़ सुम्मल सोधि के टका टका भरि लेहु ॥
चकुटा गुगुरु सिंगिया टका टका भरि लेहु ॥ कंचन रिपु अदरख क-
ही लौंग ताहि सम जानु ॥ कर वेरी के वेर सम गोली करो प्रमानु ॥
नित प्रति गुटका एक सो भूजे आटा देहु ॥ रोग नसै सब अश्व को
शालि होत्र मत एहु ॥ अथ मसाला छंद नरेंद्र ॥ वाय विडंग सु-
हागा औ पुनि अजवाइनि कौं लावै ॥ राई लहसनु कारा जीरो
पीपरि हर्दि पिसावै ॥ कालि सैंजने की सम औषधि आके खाल
करावै ॥ गो दधि मेलि लोन सब डारै घामे माहि धरावै ॥ सोरठा
जब औषदि उफनाय टका एक भरि नित्त प्रति ॥ ग्रीषम ऋतुहि

बचाय जो घोड़ा कौं दीजिये ॥ होय पुष्टि सब गात छुधा बढावै अमित सो ॥ वाजी वल सरसात शालिहोत्र इमि उच्चरै ॥ पुनः ॥ अजवाइनि लहसनु सहित कारा जीरी लेउ ॥ एई पिपरा मूरि सो चौराई सम तेउ ॥ वाय विडंगौ सिंधिका सेंधौ सोंचरलौन खारी साम्हरि मेलि कै घोड़े दीजे तौन ॥ टका एक भरि दीजिये सोंठि महेला अम्ब ॥ छुधा करन या सम नहीं बल दायक सर बम्ब ॥ अथ मोटे होने की विधि छंद मत्त मयंद ॥ सेरक लै मडुआ सुभ सो अलसी पुनि भाग बराबरि लीजे ॥ भार भुजाय कुटाय भली विधि तामे सो और यह औषदि दीजे ॥ मेथी जया अजवाइनि टंकइ सोन्चर खील द्रवी तब कीजे ॥ चारिक सेर सो लेउ गुड़हि स्द पाच में सानि कै ताहि धरीजे ॥ दोहा ॥ देश काल को देखि कै दीजे नित पल चारि ॥ मोटो होय तुरंग सो भक्षत यहै अहारि ॥ पुनः मसाला छंद मत्त मयंद ॥ पीरी निसा लै आढक सेर सो छीर के मध्य मे ताहि भिजावै ॥ छांह सुखाइ कै कूटि भली विधि ताते से घीउ मै आनि मिलावै ॥ सेरक सोंठि कही पुनि सो तब पांचक सेर सो गेंहू पिसावै ॥ दूनी शिता दे अर्ध सो दूध लै मंद सी आंच मै ताहि पकावै ॥ दोहा ॥ पाउ सेर नित दीजिये घोड़े कौं उठि प्रात ॥ याते पुष्टि शरीर कुछु मोटो होय सो गात ॥ पुनः सहदेई अरु कूट वच इंद्राइनि फल चारि ॥ दूनी लीजे वारुनी पिंड करौ निरधारि ॥ शहत सहित दीजे विदित हय कौं सांझ सकार ॥ अंग रोग नासै शकल जानौ सहस कुवार ॥ पुनः ॥ काकोली औ सहत लै सेत कैतकी मूल ॥ लेउ मुनक्का भाग सम पिंड बनावौ तूल ॥ जे वल हीन तुरंग हैं और वृद्ध जे सोइ ॥ दीजै तिन की नित प्रति या सम पुष्टि न कोइ ॥ पुनः जवाखार त्रपनी वचा घृत युत पिंड बनाय ॥

नित प्रति घोड़न कौं दये सर्व व्याधि बहि जाय ।। पीपर छा-
लि जराय के लोनु बराबरि डारि ।। क्षुधा करन अतिही कहो
दीजै ताहि नहारि ।। पुनः ।। ग्रीषम काल प्रचंड अति तपत
तरंगे भानु ।। यह पिंडी कांजी मिलै दीवे को सुष दानु ।। सो-
चरु पीपरि हर्दि लै सम करि ताहि पिसाय ।। दिन प्रति अभ्यहि
दीजिये सकल व्याधि बहि जाय ।। अथ कामद घृत छन्द-
मत्त मयंद ।। ले सम भाग सबै सुभ औषदि चौगुन कै घृत आ-
नि मिलावै ।। सोई प्रमान कहो जल को पुनि औषदि से करि
तुर्स बतावै ।। कूटि के वस्तु सबै विधि सौं तब आछी सी भांत
से कल्क बनावै ।। कामद नाम कहो घृत सो अब द्रव्य सुनौ
सोद्द खोजि के लावै ।। पुनः लेऊ मंगाय बकायन कौं इंद्राइनि
और सिलाजित लावै ।। नागझ पुष्पक हैं पुनि सो तेहि तुल्य
प्रमान गनौ पचलावै ।। एकहि एक पलै सो सबै पल तीस सो घी-
उ मिलाय के राखै ।। कूटि के द्रव्य सो कल्क करै तुलसी रस चारि
टका भरि भाखै ।। दोहा ।। घृत मैं कल्क पचाय के मंद आंच के
योग ।। मधु युत नित्त खवाइये उत्तम सरिस प्रयोग ।। वातव्याधि
विनास करि रोग हरै अधिकाय ।। बल औ पुष्टि की वृद्धि कौ
जानौ सरिस उपाय ।। अथ वातव्याधि विनास घृत-छंद
मदिरा- लेऊ सो धाय के फूल मंगाय के केसरि कूट कुसुंभ तबै
दाड़िम नाग जो केसरि लोधु करो एक ठौर जु बस्तु सबै ।।चौगुन
सो घृत गाय कहो करि कल्क बनाय पचाइ दबै ।। मंद सी आंच
भली करि कै पुनि शुद्ध भये पै उतारि जबै ।। दोहा ।। देस का-
ल कौ देखि के घोड़े दीजे नित्त ।। बल पौरुष बाढ़े सरिस निहचै
जानौ मित्त ।। वातव्याधि जो कठिन मे पीड़ित होय तुरंग ।। या-
प्रयोग के करतही बड़ सुख पावै अंग ।। अथ हर्दि प्रयोग छन्द

मत्त मयंद- मोटो जो वेगी करो चहैं बाजि तौ ताहि निशा अव पहरु खवैये ॥ औरु प्रयोग सवै तजि के एक हर्दि बड़ी गुण कारी जो पैये ॥ हर्दि कौ वल वेग वलिष्ट सो हर्दि समान न और गनैये ॥ हर्दि से रोग न होत कभू अव ताते सो हर्दि सो हर्दि वतैये ॥ छंद मत्त मयंद ॥ चारि टका रजनी लै पीसि सो आछी जामै दूध मिजावै ॥ मौठि को चून मै सानि भली विधि आछो सी भांति लै पिंड बनावै ॥ प्रात समै नित देहु तुरंगै कौन सकै गुण ताके गनावै ॥ मोटो तुरंत होत सो खात परा क्रम को करि ओज बढ़ावै ॥ छंद मदिरा ॥ हर्दि के तुल्य लखौ नहिं और सो हर्दि बड़ी गुण कारी लही ॥ हर्दि कौ वल वेग पराक्रम हर्दि से भूख बढ़ै नितही ॥ हर्दि से पानी लगै न कभू अरु वात के रोगन होत सही ॥ हर्दि बड़ी गुण दायक सो कवि वैस केदार विचारि कही ॥ छंद मत्त मयंद ॥ हर्दि रंगीलो सो पीली भली गुण केसरि के सम ताहि सम्हारो ॥ हर्दि जो आवत काम सवै सब खात तिसे नितही सो विचारो ॥ हर्दि विना वह कौन सी वस्तु जहां नहिं हर्दि तहां निरधारो ॥ हर्दि से रोरी बनै तौ सही शुभ कारज मैं पुनि हर्दि निहारो ॥ दोहा ॥ नित प्रति चौरै दीजिये हर्दि सकल सिर मौर ॥ शालिहोत्र मत देखि के नाहि मसाला और ॥ जै महेश गिरिजा सहित जै मुनि वर सुर राज ॥ जै यति नकुल सह देव जै वरदायक सब काज ॥ ग्रंथ समाप्ति मै करो मुनि वर मतो विचारि ॥ सज्जन कृपा सो दृष्टि करि लीजे चूक सुधारि ॥

इति श्री सत्वैस वंशावतंस केदार सिंह वर्मा विरचिते तुरंगम चिकित्सायां शालि होत्र तंत्र समाप्तम् शुभं भूयात्

इश्तिहार

विदित हो कि अश्व चिकित्सा ग्रन्थ अब तक कोई उ-
त्तम रीति अश्व वैद्यक अनुसार छपा नहीं है इसलिये
अति परिश्रम से प्राचीन ग्रंथ बहुत से मथि कर यह
शालि होत्र तंत्र ठाकुर केदार सिंह वर्मा नवीन तौर पर
निर्माण किया है कोई साहब बिदून मर्जी संपादक के
छापने या छुपाने का इरादा न करें लाभ जान नुक़सान
न उठावें और जितनी पुस्तकें जिन साहिबों को चाहिये
हों वह क़ीमति भेजकर मुझसे मंगा लेवें और मैंने हक़
तसनीफ़ किसी को नहीं दिया है अपने अख़्त्यार में रक्खा
और पता मेरा यह है कि ठाकुर केदार सिंह निवासी माधौ
नगर परगने तालिग्राम व डांक ख़ाना तालिग्राम ज़िला
फ़र्रुख़ाबाद ॥

द: केदार सिंह
व: भोलानाथ
कापी नवीस

शबीह ठाकुर केदार सिंह

ओ३म्

शालहोत्र

जिस में

घोड़ों की ज़ात तथा रंग का भे
द और ब्राह्मण क्षत्री वर्णादि
का निर्णय भौंरी आदि सर्व शु
भा शुभ चिन्हों का वर्णन और
रोगों के लक्षण और चिकित्सा
वर्णन की गई है

मतबै प्रकाश हिन्द लखनऊ मुहल्ले सु
भान्नगर मे बएहतमाम लाला कालीचरन
के छपा २५ मार्च सन् १८८९ ईसवी
मुताबिक़ चैत बदी ११ संवत् १९४५॥

श्रीगणेशायनमोनमः

अथ शाल होत्र आरंभ्यते

मंगलाचरण

दोहा

नमो निरंजन देव गुरु मार्तण्ड ब्रह्मण्ड
रोग हरण आनंद करण सुखदायक जग पिंड
श्री महाराजऽधिराज गुरु सेंगर वंश नरेश
गुण ग्राहक गुणि जनन के जगत विदित कुशलेश
जाके नाम प्रताप को चाहत जगत उदोत
नर नारी सुष सों रहत कुशल कुशल कुल गोत
चित चातुर चख चातुरी मुख चातुर सुख देन
कवि कोविद् वरनत रहत सुख मुख पावत चैन
वाजी सों राजी रहै ताजी सुभट समरत्थ
रनरहेर पूरे पुरुष लहहिं कामना अरत्थ॥
वालापन ते सरन रहि मैं सुख पायो वृन्द॥
शाल होत्र मत देखि के वरनत चेतन चन्द॥
श्री कुशलेश नरेश हित नित चित चाह लह्यो
अश्व विनोदी ग्रंथ यह सार विचार कह्यो॥
मूलमान शाखा सु मधु पत्र सुभग कर साज
सुवन फूल फलियो सदा कुशल सिंह महराज

अथ शालहोत्र यथा प्रतिवर्णन

दोहा। विजय करन अरु जय करन गावत चारों वेद
नकुल कहै सहदेव सों रवि वाहन को भेद
वाहन भूसुर को सुरथ क्षत्रिय को है जान
वैश्य वृषभ वाहन कह्यो महिषा शूद्र निदान
रवि शशि कुल के वंश जो क्षत्री वीर प्रचण्ड
एक तुरी एक नारि वस विजय करन अखंड
मार्तण्ड मण्डल सकल उपजा जासु प्रकाश
वाहन ते जो तुरंग ते जुग जुग जुगत विलास
तेहि वाहन को भेद सब सुनहु सकल सहदेव
प्रभु देहो प्रतजान यह हय देवन को देव
जाको प्रबल प्रचंड बल अमित अनल आकाश
ताको गुण कहं लौं कहौं जो रविरथ आकाश
भुवि रुचि क्रिया और धर्म युत जो सवो जग होय
ताहि भगावतो दाहिनो सारन मंडै गोय ॥
महा पुनीत पवित्र तन होय तुरी अस वार
विजय करै संशय नहीं डारै शत्रु संहार
जैसे भानु उदोत ते तिमिर लोप ह्वै जाय
तैसेइ गाजी मर्द ते शत्रु न रण ठहराय ॥
गाजी केवल अश्व है मर्द सो क्षत्री नाम।
जाके प्रबल प्रतापते जग पावत आराम

चारि वरण वाहो चरण चाहो जुगजस जास
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र चरण को दास

सहदेव उवाच

अहे अनुज हय प्रवल है जानत सकल जहान
इन में चारों वर्ण है तिन को करौं वखान ॥
तिन के लक्षण सब कहो जा विधि जानेजात
अश्व सबै सामर्थ है होत एक सो गात ॥
वर्ण वर्ण के भेद सब भिन्न भिन्न कह देहु
कैते रण समरत्थ हैं कैते पालहिं देह ॥

नकुल उवाच अश्ववर्ण लक्षण वर्णनं ॥

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र वर्ण हय होत
लक्षण ते पहिचानिये तिनके अंग उदोत
सूक्ष्म रूप अनूप छवि महातेज अधिकार
जाके दर्शन देखते नवनि करै संसार ॥
रुचि दाने रहुं अति रहै भोजन करै अघाय
तेज न मानै तोयको पैठे जल में धाय
अग्नि पुंज ज्वाला ज्वलित रन के देखि होय
महा सुगंध प्रस्वेद तन जल अंचवै मुखमोय
अड़ पकड़ै छाडै नहीं डरै न त्रासहि त्रास
ब्राह्मण सो पहचानिये सरसों आवै रास

अथ क्षत्री वर्ण के लक्षण ॥

क्षत्री वर्ण विरोध अति मानै नेक न हारि
क्रोध करै संग्राम लरि डारै शत्रु संहारि
बार २ धुनि शब्द मुख ललकारै जनु वीर
एका एकी और को आवन देत न तीर ॥
टापै हौसै बल करै डारै बंधन तोरि ५ ॥
असवारी प्यारी लगै वाहि न दीजे खोरि
रण देखै प्रचंड ह्वै मन के साथ उड़ै ॥
अस्त्र चोट मानै नहीं सन्मुख टूट पड़ै
अति सुगंध प्रस्वेद तन आवै लहर सुवास
चौंकै चितवै सहजही नवन नमानै खास
मरदानो क्रोधी बडो वर्ण जो क्षत्री होय
जाके बल अरु पौरुष हिं अम्व न लागै कोय

अथ वैश्य वर्ण के लक्षण

सुस्त चुस्त तन तंग कसे रहै सदा आधीन
जल्द करै तो जल्द है तन बलते नहि हीन
हड़के देखत भीत भय मानै उर अधिकाय
रण कांचो नाचत फिरै उतरन ते चलि जाय
अंग प्रस्वेद प्रस्वेद ज्यों आवै नाहिं सुवास
शुद्ध राह चाहै सदा रुचि सों दानो घास

अथ शूद्र वर्ण के लक्षण ॥ ॥

मलिन बसन सो सो रहै लोटहि थान विशेष

मंदमंद भोजन करै डरपहि पानी देखि ॥
वैसे तो हयौ रहै औ गुन देय भुलाय ॥
महा सुगंध प्रस्वेद तन स्नते चले भगाय
यह लक्षण चहुं वर्ण के सब में सब नहि होत
मिश्रित अंग पहिचानिये तैसे करे उद्दोत
जो एक हि अंग देखिये लीजै ताहि विचार
चेतन चंद सचेत करि शाल होत्र उपचार

अथ रंग वर्ण उपचार

दोहा तुकरा हंस स्वरूप अति रजित सेत एक अंग
कुमैत मुश्की सुरंग सम सुरखा सकल प्रसंग
जर्दा सोरठो अतिहि दृढ महा बली बल सात
पंचाद्रियाको सकल शाल होत्र बल भात
तोमरछं· एक स्याह अबलक लाल एक समन्द सहित विसाल
एक संदली पंजाव एक रिबक है सुरखाब
एक समद सिरंगा रंग एक चालि चौधर अंग ॥
एक हूत पचकल्यान एक सब्ज नीला जान
दीनार पायक ज़र्द नीलादि नारी मरद
एक रंग गात्रा लाल एक स्याह अबलक खाल
एक ते लिया कुम्मैत एक सेर तप्पाल तेज ॥
एक तपल ताजी मंज फुल वारिया कर कंज
एक चंचल चीनी अंग चतुरंग अंग उतंग ॥

दोहा प्रयाम कर्ण ऊंचे अरुण वास तुरंग वखानि
अवर रंग मिश्रित वहुत चेतन चंद्र प्रमान

अथ घोड़े के जन्म समय का फल विचार।

प्रथम पहर जो राति के जन्मे घोड़ो पुत्र
महा सुफल फल कहत हैं देखत नासै शत्रु
द्वितिय पहर को फल यही निधनी के धन होय
पुत्र लाभ वा साल मे साल होत्र कह सोय
तृतियपहर चिंता करै कछुक दिनन को नाहि
वहुरि क्टणी ह्वै कै पुरुष सहरै वेगि उमाहि
पहर चतुर्थक फल यही जन्म सुना सुत गेह
धन प्राप्ति होइ तास को सुत फल होय सनेह

अथ घोड़े के दिन मे जन्म होने का फल वि०

वासर जन्मे पुत्र को सुत फल होय सनेह॥
प्रथम पहर मध्यम कहत हरै चित्त वित नेह
द्वितिय पहर फल अति निरखि जाको घोडो होय
संकट ताको परिय अति विरले जानै कोय
तृतिय पहर मध्यम अधम चौथा महा मलीन
दीजे काहू शत्रु को फेरिन वांधे जीन॥ ७

अथ रवि फल विचार

उत्तरायन शुभ फल कहै दक्षिण मध्यम मान
ताही में श्रावण विषै महा निषिद्ध वखान।

अथ घोड़ा के दांतो का लक्षण वि०

प्रथम दंत अस फटिक सम वेद होत गुनक्षीर
वद्धि पीति डर के भये टूटहि है गंभीर ॥
हैक भये तासो कहे ऐसे चार विचार ॥
नेसरि कारे पुंज गति आगे लेहु निहार
तरुण रदन स्याहो रहे सप्त वर्ष उनमान
द्वादश ते स्याहो तजे लेहु वृद्ध पहिचान
जो असील हैं ठोर के खुरासान मुलतान
ऐरा की अरबी कच्छी दीरघ आयु बषान
तिनकी तैसी आयु है दीरघ वर्ष प्रमान
वदन वदन ज्यों जानियो रदन रदन पहंचाने

सोरठा अधिक दंत हैं जासु विरले विरले अश्व के
करि विना है नास धनी धाम रहि नाम के

अथ भौंरी के शुभा शुभ लक्षण वर्णन

अथ लक्षण घोड़ा के लहो । जो कछु शाल होत्र मत चहौं
समुझै पंडित अरु बुधि वंत । रंग वैरूप घोड़ा के अंत ॥
याते धारत चौपइ छन्द ॥ वरनि कहत सब चेतन चंद
कालह सुठार नयन वह भारे । शुथरी छोटी अधहि कारे
कंठ मिली ग्रीवा अस्थूल । छाती चौड़ी होय समूल ॥
लूधी स्वक्ष्म मास न होय । कर पद म्रग कैसे शुभ होय
ग्रीवा पृष्ठ उचास बनावे । कटि लखि चौड़ी पुटी लखावे

छोटे करन श्याम शुभ भौरे । लम्बोदर कोत फ़ुर वारे ॥
चारयो चौका आठहु रंग ॥ जो पावै वनि कैसो चन्द ॥
भूरि भार नरको तेहि भावे । जो घोड़ा या विधि को पावै

अथ भौंरी शुभ लक्षण

अथ भौरी वरणो तेहि अंग । जो शुभ राखो अंग तुरङ्ग ॥
जो माथे पर भौरी लहिये ॥ गुणो लोग औगुन मत कहिये
कध तरे भौरी जो होय ॥ उत्तम कहत सयाने लोय
अधरस भौरी जो लहो ॥ शुभ सुख दायक वाह कहो
कोसन मे भौरी जो होय ॥ शुभ लक्षण भौरी जो सोय
पिछले पावन जंघा ऊपर ॥ जो भौरी लहिये पद ऊपर ॥
ता समान शुभ वरणन सोय । जो भौरी पावन मे होय ॥
विजय करन ताही सो कहो । साल होत्र जेहि लक्षण लहो
भौरी चार और जो होती ॥ तिन को नाम सुनहु उद्योती

दोहा॰ चिंता मणि अरु गोमणी होत कंठ मणि नाम
देव मणि भौरी आदि दे शुभ राखो श्री राम

भौरी अशुभ लक्षण

भौरी अशुभ कहो मै सोई ॥ अंग अश्व के यह विधि होई
आंखिन नीचे ऊपर पूंछ ॥ होत मध्य यह भौरी पूछ
आंसू ढार नाम है ताको ॥ खोवै तेहि घोड़ा है जा को ॥
अंग तरे भौरी जो होय ॥ तंग करे स्वामी को सोय ॥
मूल करन के भौरी लहो ॥ एकहु याते अशुभ हि कहो

जो भौंरी होय सपी कार ॥ तो दीजे वाह्न को डारि ॥
विधि भौंरी जो नथो समान ताह्न डाल देय सों ज्ञान ॥
पट्टे तर भौंरी जो परै ५ ॥ स्वामी को दारिद्री करै
हृदया वलिहु हृदयमे होय सो डाले स्वामी को खोय ॥
भेजा पर भौंरी जो लोय ॥ मेटि देय स्वामी को सो य ॥

दोहा नखन भाल सब काल हों खंड २ सब दाम
और सपेदी अंग नहिं अकरव ताको नाम
एक लक्ष कंजा लहो दूजो लहों सफ़ेद
अक़रव ताको कहत सों लीजे उपजे खेद

रोग वर्णन

अब औषधि अरु रोग सब वरनों मति अनुसा
र चेतन चंद समेत नर लहो सुअंग विचार
दोनो वेर सुबेर सों विना नाक जो देय
जाय बंद ते होय है रोग दोष सब कोय

अथ घोड़े के सर्व रोग व्याधि नाशक औषधि ॥
कुटकी कूट अरु कारी जीरी कलिस्यार हल्दी अरु पोरी
वाय विडंग सुहागो लेउ ॥ भूंजि फिटकरी ता महि देउ
मिर्च कंज अरु पीपर मूल ॥ त्रिफला अमल तास को मूल
असगंध नागोरी तह्न देउ ॥ भाग वरावरि सब करि लेउ
अजवाइन मेथी अरु राई ॥ लेइ पुराने गुड़ हि मिलाई
सम करि औषधि एक न दीजै औषधि में दूना गुड़ दीजै ॥

आध सेर के पिण्डा चार ॥ घोड़हि दीजे एक न बार
बलगम ज़हर बाद को नासै तासों होय रूप परकासैं ॥
दोहा लोंग मिर्च अरु पानले अदरक पीपल मूल
नित प्रति घोड़हि दीजिये रोग हरै तेहि शूल ॥

घोड़े का बत्तीसा मसाला

पीपल लहसन पिपलामूल कुटको बाय विडंग कचूर ॥
मिर्च सुहागा काला जीरो अजवाइन हल्दी अरु पीरो
कच गूगुल और दही मंगावे सज्जी जवाखार को ल्यावे ॥
मेथी सोंठ मैन फल लेउ ॥ बीज कसौंदी तामहि देउ ॥
चीती बीज पमार विधारो ॥ कालेश्वर जीरो किच न्यारो
सेर एक विजिया को लीजे हींग टका भरि तामहिं दीजे
लेउ सुहागा और फिट करो भूंजि खोल सों जो वह करो
दोहा मानस की खुपड़ी सुफल द्वैपल महिषी सींग
लेय जराय सों राख करि ताहि कर्म ले हींग
टका एक भरि दीजिये भूंजे आटा मध्य ॥
रोगन सें सब अश्व के बल पौरुष की वृद्धि

सिंगरफ़ गुटिका

सिंगरफ़ टका एक भरि लेउ सम्मल खार तेहि सम कर देउ
त्रिकुटा गूगल अरु विषनागा टंक एक भरि तीनों भागा
लोंग अदरक पान सुहागा करिके खोल सोध विष नागा
कर बेरी सम गोली करै ॥ सबहि रोग घोड़ा के हरै ॥

मूंजे आटा मध्य जो गुड़ का देय बनाय
ता मै रोग सुचंद करि और न करै उपाय

क्षुधा करन विधि

सन दुइ गाय दही मंगवावै छाल सहजने को कर लावै
सेंधो सांभर सज्जी लीजे ॥ सोंचर खारी नामहि दीजे ॥
राई लहसन कारा जीरो ॥ अजवाइन हल्दी अरु पीरो ॥
वाय विड़ंग मूसली संग ॥ खील सुहागा करि इक संग
सब को ननक सु कूट करि राखे धूप धराय
टका एक भरि दीजिये जब औषधि उफनाय
ग्रीष्म ऋतुहि बचाय करि जो घोड़े को देय
होत सुपुष्ट शरीर तेहि क्षुद्र अमित कर लेय

औषधि क्षुधा करन

सज्जी अजवाइन अरु राई साम्हर वाय विडंग कटाई
सोंचर सेंधो सांभर लीजै वज़न बराबर यह सब कीजै
काला जीरो अरु चौराई ॥ लहसन पीपला मूल सुहाई
मानस को पेशाव मंगावे। कूट पीस तामहिं धरवावै
एक टका भरि दीजिये मोठ महेला माहिं ॥
क्षुधा करन अति अश्व को औषधि या सम नाहिं

औषधि क्षुधा करन

नींव बकायन और कसौंदी ता महि देउ कंजा की पेंदी
ता पीछे विष खपरा लीजे सेर सेर इन सब को दीजे ॥

अदरक पान मिर्च को लेउ। करि गुट का घोड़ा को देऊ
सात दिवस अश्व जो पावै क्षुधा होय अरु मास बढावै
सोरठा भूजे आटा मध्य प्रात समय जो दीजिये ॥
होय सुबल को वृद्धि चेतन चंद विचार कह

घोड़े को मोटा करने को दवा

सेर एक महुवा मंगवावै ॥ अलसी सहत भाग भुजवावै
मेथी अजवायन तहां भाग टका एक भरि खील सुहाग
गुड़ में सान लेय सेर चार प्रात सांझ दीजै फल चार ॥
जाय बंद नहिं दीजिये मोटो देखन होय
शाल होत्र यह भाखहो बढै पराक्रम सोय

दूसरी विधि

हल्दी सेर आठ ले आवै ॥ सुरभी क्षीर ताहि भिजवावै
सात दिना तक भीजो करै छांह सुखाय कूट कर धरै ॥
ताती घीउ तारि कर मलै ॥ वेर एक सोंठ फिर कलै ॥
सेर पांच मेदा जो लावै ॥ सब को मेदा एक करावै
खेत खांड को हलुवा करै दूध डारि कर हुल सों चलै
पाव सेर नित दीजिये घोड़े को उठि प्रात
चेतन चंद विचार करि मोटा हुइहै गात

सरदी गरमी शांति कारी औषधि

सम्मुल खार संखिया लावै खील सुहागा को करवावै
वहरि अफीम एलुआ धरै ॥ तासों चार चार सब करै ॥

ले दश माशा साबुन लोट । तामें अश्व होय बहु मोट
काले तिल के साथ सब गुटका दीजे टंक
दीजै प्रात सो एक हो रोग राव अरु रंक

औषधि ज़हर बाद की

मिर्च कसौंदी अदरक पान चारो करो एक परमान ॥
ज़हर बाद विष वेलहि हरै कहे सो शालहोत्र मति चलै

दूसरी औषधि

राई मिर्च पीपले लेउ ॥ टंक २ भरि सम करि देउ
हींग सुहागा और अफ़ीम उन औषधि ने कीजो नीम
सोई भाग हींग को करो ॥ अक़र करा ताही सम धरो
सोंठ पीपला मूल मंगाई उड़क छाल जड़ सेजन लाई
तामे गोली कीजिये औरा के परमान ॥
सांझ भोर को दीजिये रोग न रहै निदान

चांदनी मारे का इलाज

राई मिर्च पीपले लेउ ॥ सम करि लहसुन तामे देउ
पीपल मिर्च सोंठ अरु पान छाल सहजने को सम आन
कंजा मैन फल इक तर करो पैसा भर गोला अनुसरो
प्रात समय घोड़ा को दीजै रोग घटै घोड़ा को दीजे ॥
सिंह चर्म अजया को लावे घोड़ा को मुख ढांप बंधावे
औषधि कीजे जो कहे लाग न आवे कोय
दधि सुत रवि सुत को हनै वहरिन नो का होय

दूसरी विधि

लहसन हींग सुहागा आनि कारा जीरो अरु अजवानि
पीपल मिर्च सोंठि भा रंगो ॥ सेंधो सोचर साजो संगो ॥
सींग जलाय राख करि लेउ तव औषधि के माही देउ
मूल जवासा और अतीसा पान खटाई और अतीसा
विष षपरा अरु अदरक पान गोली कर और परमान ॥
भूंजे आटा माहीं देय ॥ दोय पहर बंद करि देय ॥
पानी अधिक तप्त कर वावै शीतल करिके ताहि पियावै

अथ अधूरा

आक धतूरो सेहुड़ जारि अजराइन हल्दी लेउ डारि
और राख में दीजे सानि ॥ अंग अश्व के मले निदान
जागहि वंद वांधि तेहि राखे मरहि मंत्र खेद जो भाखे

मंत्र विधि

चंडी चंडी तूपर चंडी । आवत चोट करै नव खंडी । हय रा ख हय राख । घूनो वडेरा राख ॥ दुहाई हनुमन्त वीर अ गस्त मुनि की फट् फट् स्वाहा ॥

चौपाई

पाव अनार तीन ले दीजे । होय आरवल तो नहि छीजै

सर्व रोग हरण सम्मुल गुटिका

हींगलु सम्मल खार मंगाई टका टका भरि वज़न कराई
गूगल आदो लौंग सुहागा पैसा पैसा भरि प्रति भागा
पीपल मिर्च मिला सम करै अदरक पान के अर्क में धरै

खरल करै दिन तीन बनाई गुटिका चना प्रमान कराई ॥
गोली दीजै अश्व को भूंजे आंटे माहिं ॥
रोग हरै बहु बल करै मिटै ज़हर जो छांह ।

अथ जो घोड़ा जकड़ि गया होय ताको औषधि ॥
प्रथम छुहारे खाली करै ॥ फिर अफ़ीम ताही में धरै ॥
करि कपरौटी भूंजै ताहि ॥ आधो नित्य खवावै वाहि ॥
अश्व अंग खुलि जाय तुरंत दाना मति दीजो बुध वन्त ॥
पानी प्यावै तप्त सो रोज ॥ मिटै रोग रहहिं नहि खोज

दूसरी विधि

सज्जी साम्हर बोड़ी पोस्त ॥ सालिम गुड़ सावन दे दोस्त
टका टका भरि औषधि लेउ पाव सेर गुड़ तामहि देउ ॥
आंटा भूंजि के देउ मिलाय सांझ प्रात अश्व जो खाय ॥
अंग अंग खुलि नीको होय दाना देउ न सातै दोय ॥

तीसरी विधि

साम्हर लहसन टंक पचीस गोली करि दीजै दिन बीस
दाना मेटि मसाला देउ ॥ पानी तप्त नित्य करि लेउ ॥
आधी प्यास पियावै पानी ॥ देइ मसाला यह सुन ज्ञानी
हल्दी सालिम गुड़ सब लेइ प्रात समै घोड़ा को देय ॥
सांझ समय यह गोली देउ घड़ी चार का डज्जा करेउ ॥
नीको होय न लागै वार औषधि साल होत्र अनुसार

छाती बंध का इलाज

गूगुल टका एक भरि लेय ॥ हींग सुहागा खील करेय।
अज वायन सों चर मिलवाय घोड़ा को दे प्रात खवाय
हींग सुहागा मासे वीस ॥ औषधि वज़न बराबर पीस
दाना मेटि मसाला देउ ॥ सात दिवस में नीके लेउ

नारूने का इलाज

मिर्च दकिवनी को लैलेउ ॥ मांग सुहागा ताम हि देउ।
सेंधो नोन फिट करी खील। गूगुल वज़न बराबर लील
कटुक तेल महं खील कराई ना रूने पर देउ लगाई।
रोग मिटहि असनी को होय चेतनचंद कहत है सोय

मास वृद्धि को औषधि

अजय पाल अरु हरिया थोथा सम्मल खार सज्जी अरु मोथा
नीम पात की टिकिया करै ॥ कड़ुवे तेल मध्य सों चरैं ॥
टिकिया काढि औषध हि ताय नीचे खल सों खरल कराय
लेपन करै खोलि रंग देय ॥ हरै रोग नीको करि देय ॥

वादी खाये का इलाज

काला जीरा औ गेरू लेय ॥ सोंठ कत्तूर हिं ताम हि देय
गोवर के रस खरल कराई। छीर सों मथिके अग्नि लगाई
हरै रोग नीको ह्वै जाई ॥ यामें कछु संशय नहिं लाई
गरम होय जब लेपन करै वादी रोग अश्व को हरै ॥

दूसरी विधि

टांक सुमन औटाय के नित प्रति बांधे जोय

खाल होय कृमि और वे जो रोगन होय

खारिश की औषधि

बत्सो गंधक मैन सिल आन। वायविडंग चौले ले जानि
कूट पीसि के कुलकट लीजे। पानी में सब निशाधर दीजै॥
प्रात समय ले कड़वे तेल॥ घोड़े के अंग मर्दन मेल॥
घटिका तीन घाम में राखे। मही मलि धोवे हरि साखे
रोगन में जो धोय खवावे॥ फेरि खारिस होन नहिं पावे

अग्नि वायु का इलाज॥

लोनी घिरत सेर नित लेय। ता पाछे औषधि करि लेय
अरुणा मिर्च पैसा भरि लेय मधु माखी ले माटी देय॥
माटी पैसा भरि सुलतानी॥ तेल डारि कड़वे में सानी
अंग अंग घोड़ा को मले॥ पीछे अंग बहुरि यह कले॥
उड़द अतय नीर मथि धेरे सो लेपन पुनि अंग पर केरे
अहि कालि की कांचलि लावे मासे चार कनक मिलवावे
रोटी करके घृत में सानि॥ घोड़हि देउ प्रात ही आनि

दूसरी विधि

फूला हार सेर दश लेय॥ खंड खंड करि दूध मे देय॥
सात दिवस घूरे में राखे॥ दिवस आठवें बाहर राखे
सेर २ घोड़ा को दीजे॥ ता पाछे औषधि यह कीजै
महिषी सुत को सींग जरावै छाछ भेड़ की में मथवावे
टंक तीन मैन सिल लेउ॥ करि मैदा नाड़िय में देउ॥

घास तेल में मथ्थे बनाई। घड़ी एक या में मथ्य वाई
पीत मट्टि कां में अनुवाई अग्नि वायु को सोध्य मिटाई
या विधि से जो नित प्रति करै अग्नि वायु घोड़ा को हरै॥
वाई ले कर ताल की जोका आंत देय
सात दिवस के देत ही घोड़ा नीके होय

ब्राह्मनो रोग का इलाज

पट सन जारि ग्रांव सो करै सांभर तीन टंक तहं धरै
दोऊ सोरा मथि लग वावै। चार घड़ी पीछे अन्ह वावै
सन की राव जो ग्रांव भरावै सांभर सहित देह लगवावै
सात दिवस करै जो कोई॥ केस बढ़े ब्राह्मनो को खोई

बरसायत की औषधि

बरसायती मोम सों मले॥ मलत२ लोहू जब चलै
कटुक तेल ले आगे धरै॥ तामें और मोम को करै॥
अंजक की दारू जो ल्यावै॥ सेंधे सहित वाहि मिलवावै
मल्हम करै हरै बरसायत सात दिवस लागहि दिनराते
दिवस सात में नीको होय बरसाती को डारै खोय

विष बेलि का इलाज

प्रथम मिलाये की विध लेउ एक२ वढि सौ तक देउ॥
सौते उतरि एक जब आवै जब या मल्हम को बंधवावै
पात बबूल नीम को लीजै। मेढा सींग सहित भज कीजै
मुरदा संग सुहागा लावै॥ छेरी छीर खरल करवावै

बर पापरी सेंदुर साने ॥ कडुवे तेल मोम को आने

पहले लोहा लीजिये चार बंद को खोल

पीछे औषधि को करौ या विधि से सब तोल

सब को खरल करै धर ध्यान मल्हम कीजै या विधि जान

अस्थ अंग पर ताकूं धरै ॥ निश्चय जान बेल को हरै ॥

हड़ा जानवा का इलाज

जोजाने यह रोग है चारो बंद देय दाग ॥

औषधि कीजे तुर्त यह चेतन चांद सो लाग

मानस की खुपड़ी को लावै तप्त अग्नि सों ताहि जरावै ॥

महिषी मेढा सींग हि जारै जो औषधि सम नामहि डारै

त्रिफला त्रिकुटा साज्जो राई जारि सुहागा खोल कराई

कालि म्बर और कारा जीरो अजवाइन हल्दी अरु पी

गुड़ सों गोली या विधि करै टंक टंक सब केशनि धरै

उलहत रोग सारी ऋतु करै सकल रोग घोड़ा के हरै।

घोड़े के पेशाब बंद का इलाज

प्रथम सेर पानी को करै ॥ ताको अमिलो में अनु सै

घर गड़रिया के लै जाय ॥ तुरत देहि पेशाब हि डा

दूसरी विधि

खीरा ककड़ी बीज मंगाई पीस नीर में देय पिलाई

घर गड़रिया के ले जाय ॥ घूंसत वाउ तुरत खुल ना

तीसरी विधि

दोऊ करन सो मिर्च पीसि। डाले संग नोन दुइ बीस
ता पीछे बाती कर लीजे ॥ नारि मध्य घोड़ा को दीजै
मिर्च दक्खिनी सांभर नोन गर घोड़ा को विष्टा नौन॥
बाती कर के देय चलाय॥ छूटै मूत्र रोग मिटि जाय

इलाज लीद बंद पेशाव बात हरण का ॥

कारी जीरी मिर्च मंगावै॥ खील सुहागे की करवावै
सज्जी कुटकी राई लेय॥ हींग टका भरि ता मे देय॥
अजवायन संग भाग कराई अदरक रस में गोली बंधाई
एक छटांक अस्त्र जो खाय बाई रोग गुल्म मिट जाय।

सोंठि घीउ संग सानि के गुदा मध्य दे फोरि
लीद करै घड़ी एक में अधिक न होवै वारि

घोड़े के जुल्लाब की विधि

कड़वा नोन और सोंठ का एक संग औटाय
काढ़ा दीजे भाग सम उदर व्याधि बहि जाय

जुल्लाब विधि

राई खारी दही सम सेर अर्ध जो देय ॥
व्याधि उदर की गिर पड़े सकल दोष हर लेय

अथ इलाज

अस्त्र प्रमेह महा कठिन जो नित बढ़े हरे
ताकी औषधि कहत हौं नीको विस्तु करै

अस्त्र औषधि

नाग बेलि की जड़ को लावै कदली जर सम भार करावै
तवा खीर सुरमा अरु चीनी मिंगी बिनौरे सम करि लीनी
गाय दूध द्वै सेर मंगावै ॥ सात दिना दीजै तेहि खावै
नासै रोग पुष्ट बहु होई औषधि करै जो या विध कोई
बैठहिं उठहिं लोटि लेजाई मुख बोले अरु बासन खाई
शूल क्षुधा इति ताको नाम औषधि करो होय आराम
छाली मकरा और पलास बीज करंजन होंग जवास ॥
सेंधो सम करि देय मिलाय गोघृत संग देय पिलवाय
शूल मिटै दोये दिन दोय नासै रोग भूख बहु होय

अथ वायु शूल का लक्षण

गिरै धरनि पर दम करै आंखि मूंदि रहि जाय
वायु शूल वासो कहै ताको यही उपाय ॥

खुरासान बच कूटि मंगावै दंति छालि सों सेंधो आवै
हींग सुहागा सम करिलेउ पाषाण भेदलै ताम हि देउ
सकल कूटि कर मैदा कीजे माषन सानि अश्व को दीजै
दिनहि नीको होय बनाय सकल व्याधि वाकी बहि जाय

अथ प्रकृति शूल लक्षण ॥

शूल प्रकृति वखा नियै ताको यह उपचार
हीं सें नाकहि भूक अति बोले बारम्बार

५ लाज

वाय बिडंग हींग सम लेउ नवदा राख जराय के देउ ॥

वच अरु सोंठ सुहागा लीजे । नीर रेह के शान सो कीजे ॥
नो को होय व्याधि वहि जाय यो या विधि सो करो उपाय।

अथ शिलह हस्त शूल लक्षण ॥

सूंघे छाती अश्व को जो गिर हि धरनि बहुवार
शूल तासु पहिचानिये कीजै यह उपचार ॥

हींग सोंठि सेंधो सम लेउ। सिरका छानि दही में देउ॥
ताते नीर शूल लखि दीजे यह विचार पुराण सुनि लीजे
लंघन करै हानि नहि होय दाना दिये हानि अति होय

अथ भ्रम शूल लक्षण

सूखे घंटै अरु लोटे अति अरु चितपे चहुंओर
भ्रम शूल तासों कहे वाहि न दीजे खोर

अथ औषधि

हल्दी हींगुल दे वैसाखो ॥ सोंठि सुहागा खोल सो भाषे
वजन समान पीस के देउ हींग सुहागा थोड़ा लेउ।
सूखे बढ़े अरु शूल भ्रम नाशै बल वीरज बहुत हो प्रकाशै

अथ ऊई शूल लक्षण ॥

मुख घोड़ा को पानी भरे ॥ अधिक पसीना वह विष करे
लोटे नहिं बैठे नहिं भूमि नयन मूंदि रहे झूमि झूमि
ता को यह औषधि जो करे अष्ट दश शूलन को हरे ॥

औषधि

पीपल पिपला मूल बीज कसौंदी मिर्च ले ॥

सोंठि बेतरा मूल गो क्षीर सों दीजिये ॥
रोग नसै जो दीजहि प्रात मूखे बढ़ै मोटो होय गात
दाने का तेहि नाम न लेई तप्त नीर सोंऐ करि देई ॥

घोड़े के सुम वा ऐड़ी फटने की दवा

गल मोम गुड़ गूगुल लेइ लोध लोस सेंधा सम देइ ॥
पीपल गऊ का घी मंगवावै सब को मैदा पीसि करावै ॥
काले तिल को तेल ले सब को एक तर आन
आंच अनल सों तप्त करि सुम में भरे निदान
कपड़े सों पग बांधिये ऊपर देय के पात ॥
नीको होय जु सुम्म यह मानहु सांची बात

बिवाई की विधि

वाय पित्त कफ की अधिकाई जो घोड़े के उठै बिवाई ॥
ताही दिन तुम औषधि करो जो कछु साल होत्र मति चै

पित्त विकार की दवा

लक्षण अरुण नेत्र घी की बजे टापे पानी होइ
पित्त विकार सों जानिये औषधि कीजे सोइ

औषधि

मोथा पीपल और गिलोय मिर्च लौंग जाय फल दोय
अदरक पान सोंठि सम लेय सात दिवस यह औषधि देय
नीको होय व्याधि को हरै साल होत्र यह मति उच्चरै ॥
जो सत कार घो दाना दीजे सात दिवस महं नी को लीजै

कफ़ाज्वर की औषधि

लक्षण· भारी माथो होइ अति नैन चुवै बहुनीर
पीरी कफ या कर बदन होइ ताहि कर पीर
खैर सार और गऊ का घीउ अग्नि पांच सों तप्त करेउ ॥
हाथ पाउं घोड़ा के मले ॥ ता पीछे यह औषधि करै ॥
औषधि सोंठि कटाई रंग ॥ पीपल मूल कटाई संग ॥
सोचर सेंधो हींग मिलाय औषधि वज़न बराबर लाय
हींग सुहागा मासे चार ॥ भूंजि अग्नि में दीजे डार ॥
टंक तीन भरि दीजै रोज । मेटै अंग रोग को खोज ॥

काढे की दूसरी विधि

दन्तो जर भारंगी आन ॥ नागर मोथा कुट को सान ॥
नीव छाल असंग देवदार चीता मिर्च लेउ पुनि ग्वार ॥
अष्ट विशेषी काढा करौ । सहत टंक भरि ता महि भरौ
सात दिवस देवै नित वाय रोग हरै काढो देय प्याय ॥

श्लेष्मा ज्वर के लक्षण और औषधि

तप्त शरीर अश्व को होय आमा सौज सुन दृग होय।
कफ़ डारै मुख ते अधिका कांखै बदन खाय नहिं घास
पीपल सेंधो घीउ मिलाय नास देय घोड़ा को आय ॥
ता पीछे यह काढा करै ॥ अश्व अंग की पीड़ा हरै ॥
वाय विडंग अंड जड़ लावै सोंठ कच्चूर अरु राइन्ह मिलावै
अष्ट व शेषी काढा करै ॥ सात दिवस में रोग हि हरै ॥

सन्निपातज्वरलक्षण

नख सोर ग्रष्म को होय   होसै टापै कुड़के सोय ॥
स्याम मच्छ डे चले तेहि अंग   सन्नि दोष ज्वर ताके संग

औषधि

वाय विडंग ज्वार औरपोस्त   जड़ अरंड कारे को दोस्त ॥
अष्टा व शेष देह ताहिकाढ़ो   सन्निपातज्वर नासे काढ़ो
गुल्म अग्नि वाके जो परे ॥   ता पीछे एक औषधि हरे ॥
सोंठ पीपरा मूल मंगावे ॥   सहत षाय गुड़ संग खवावे
कज़न वरा वर घोड़हि देय   गुल्म व्याधि वाकी हरि लेय
वहो वात ज्वर को अनुसरे   या सन्नि ज्वर को औषधि करे

दूसरी औषधि

मोर पालका अरु अंजीर   खांड सहित मिश्री अरु क्षीर
कज़न वरा वर सब कुछ लेउ   गाय दूध में घोड़हि देउ ॥
नासे रोग व्याधि सब हरे   साल होत्र या विधि अनुसरे

मस्तक के शूल का लक्षण और औषधि

सोरठा   लक्षण त्रिविधि विकार वात पित्त कफ जा ह्वै,
नियै साल होत्र अनुसार औषधि कीजै देषि

जो शीतल घोड़ा को पिवाई   रुधिर चले नकुअन में आई
पित्त दोष पहिचानो ताहि।   औषधि कीजै या विधि आहि
आस और उसीर मंगाई।   लेपन माथे पै जो कराई
नास देय त्रिकला के नीर   मेटि लेइ या विधि जो पीर

मस्तक के शूल का लक्षण और औषधि

मोंहन पर जो होय अमास देउ कटाई को तेहि नास
पीरो कफ़ पानी सों झरै ॥ जो या विधि से औषधि करै
सोंठि सुहागा साचर नोन ॥ मिर्च पीपली ता महि देउ
वज़न बराबर दीजे वाहि ॥ नासै रोग शूल दहि जाहि

वात कृत मस्तक शूल के लक्षण और औषधि

भारी सिर और होय अमास देउ कटाई को तेहि नास ॥
ता पाछै यह औषध करै ॥ तौ घोड़ा को वेदन हरै ॥
कुट को वाय विडंग कचूर ॥ सोंठि सुहागा पीपल मूर
वज़न बराबर मैदा लेय ॥ भूजहि आंटा सब करि देय
प्रात सांझ घोड़ा को देय ॥ सकल व्याधि वाको हर लेय

मुख रोग लक्षण

मुखते खाई जायन घास ॥ लेपन करै पके मुख जास
कफ गिरै मुख ते बहु जाके स्याम रंग मुख माहीं वाके

औषधि

ककरोंधा ताही को रंग ॥ सांभरि सेंधो मिर्च संग
छाल फेरि मलै दोउ जोड़ नीको होय तुरत ही घोड़
तालू मध्य दंत जो होय ॥ काम नाम भावे सब कोय
ताहि निमित्त यह औषध कीजे घोड़ा घास खात नहिं छीजे
कै हल्दी मिर्चै अरु नोंन ॥ कै घृत गाय सहित सम दीन
तुरी दंत मिलि दीजे ताहि तत्क्षण नीको लीजे वाहि

जो मुह सजे सब [illegible] होत निकार तात जोरा को

दूसरो औषधि

जवा खार अजवायन राई। सरसों सौंफ़ हरद मिलवाई
लहसन मिलै वजन समकरे जल सों पीसि अग्नि पै धरो॥
गरम सीस मुष देउ चढाई से को नित्य रोग रहि जाई

अथ कर्ण रोग

शोणित चुवै श्रवण जो जाके के आमास होई ज्वर ताके।
मार हि सिर और कांपे अंग। ताहि जानिये वाय प्रसंग॥
ताको औषधि देय निदान तिल हल्दी सो से कै कान
लहसन हल्दी हींग मिलाय आक पत्र मांहे धर वाय॥
कपरौटी करि दीजे आग॥ काचो रहे जरै नहिं आग॥
ताहि कूटि करि अर्क निकार घाउ सहित दीजे मधि डार
सानि सानि कानन में भरे। निश्चय पीर अन्त को हरे।

दूसरो औषधि

जो आमास होइ अधिकार तो दाल मलर सों निकार॥
सेंधो कांचो संचर आनि॥ सो लीजे पानी में सानि॥
ता को पानी कानो मे भरे सेक करै पीड़ा को हरे॥

नेत्र रोग हरण औषधि

औषधि नारेला को होय नीको होय करै जो कोय
हल्दी सोंठ सहित घृत सान बांधे ऊपर ते तेहि आन॥
सीत बात ते देय उतारि॥ नीको नेत्र होइ रहे नहि बा

नेत्र ढरका की औषधि

सरसों पीलो मूल अरंड ॥ गोलो बांधि करो जिमि खंड
ता को अर्क खींचि सम लेय ता मदिरा औषधि सम देय
हार बेर अरु खार मिलाय कनेर फूल सहित पिस वाय
सब को एक करि अर्क निकारै सांझ भोर दृग छीटा मारै ॥
नीको होय वायदे वन्द ॥ साल होत्र कहै चेतन चंद

दूसरी औषधि

चंदन सौंफ़ तगर को लावै बकरा को पेशाब मिलावै ॥
रस छन कोजब लेइ निकार तामि घोड़ वसन में डार ॥
भरै नेत्र में रोग न साय ॥ घोड़ा नीको होइ वनाय

फुल्ली हरण औषधि

सोना माखी वन्द न कीजै लेप फिट कड़ी ता सम दीजै
सिरस बीज अरु चीनी लाय मिर्च कचूर देय मिल वाय
मैदा करि अंजन दृग भरै । सात दिवस फुल्ला को करै

दूसरी औषधि

रस अंजन रत अंजन लाय विष षपरा को रंग मिलाय
मधु सों पीस नयन में भरै ॥ सात दिवस फुल्ला को करै

घोड़े की आंखों को सफ़ेदी का इ०

पीपल सेंधो सहत मिलाय विष खपरा को रंग मिलाय
दे करि मूंदि नयन दे ताहि नीको नेत्र तुरत है जाहि।

दूसरी औषधि

सावन मिर्च मिलाय कर लीद रंग सो सान
घोड़ा के अंजन करौ मिटै रतौं धौ खान

घोड़ा के सर्व रोग हरण विधि

घोड़ा में जो होत है सर्व रोग विचारि ॥ ॥
तिन की औषधि कहत हों साल होत्र निरधारि
भाषत चेतन चंद साल होत्र को निर विकै
सुख पावहिं मम हृंद कुशल सिंह महाराज प्रभु
घोड़ा की छाती होय भारी लहि नहिं दीजै अव टारी
हफ़ दाम खोल को नास कौ सकल रोग न कौ नास
जो छाती ने लोह लीजै ॥ तौ विचार या विधि सों कीजै
प्रथम घड़ी यह राह चलावै ता पीछे रग चौर खुलावै
गरम मसाला दीजै ताहि ॥ क्रम सों दाना दीजै वाहि
उष्ण नीर अचवन कों दीजै छाती खुलै जो मन यह लीजै

मसाला

हालम हल्दी सोंठ सुहागा सोंचर सारन साजौ पागा
गुड़ सों मिलै वज़न सम लेप छाती खुलै मान यह लेप
टंक सुहागा नामहि दीजै। वेल गिरी की औषध कीजै

द्वितीय मसाला विधि

गूगल पैसा दोय भरि गौ मूत्र सों देय ॥
जकड़ो अश्व खुल जात है या सांचो सुनि लेउ
सांभर लहसन भाग करि दीजै नित्य खवाय

जकड़ौ नौ को होत है पै लंघन करवाय
तप्त नीर नित दीजियै दाना देहि बताय
यह औषधि को नेम है लीजे चित्त बसाय

वात शूल का इलाज

दो॰ भूमि गिरै अरु दम करै फिर फिर उठै मरोर
ता को यह औषधि करौ भगै रोग को जोर
त्रिकुटा हींग और काय फल खंड बराबर लेउ
गंधी मासे चार सो मदिरा के संग देउ ॥ ६

सोरठा॰ कर बाँधै पर हेज़ दानै पानी वात सों ॥
औषधि दै यह तेज गात देखि कै दीजिये

दूसरी विधि

पीपल सोंठ जो रेणु का लांबी कूरौ आन
औषधि है यह तेज लो मेहंदी में सान

तीसरी विधि

घोड़ा जो कंपै घनो होयं जो नयने लाल
ता को दीजे नास यह रोग नसै तत्काल
गौ घृत ता को करै न दोष तैल सिवाव नास दै दोष ॥
तौको होय पीर नहिं करै ॥ साल होत्र या विधि उचरै

राक्षस शूल का लक्षण

घोड़ा व्याकुल अति ही होइ उठै गिरै बहु पल२ सोय ॥
हो से टापै दृग होय लाल। औषधि ताहि करै तत्काल ॥

औषधि

पवकी इमली को रस लेय सेंधोतेल तिलन को देय ॥
सिरसा को रस ता सम करै इक तार करै नारि महं भरै
तीन दिवस घोड़ा को देय। हृष्ट पुष्ट तेहि नी को लेउ।

मूत्र शूल का लक्षण और दवा

चौर रंग हलदी को करै ॥ मुख से लार अधिक तर गिरै
शीतल वदन हलावे शीस। बढ़ो शूल तो विष्ठा वीस

औषधि

सेंधो पीसि नथन महं डालै मिर्चन सहित नास अनुसरै
टहलावे और कोषा मलै। या औषधि सों घोड़ा खुलै
गड़ स्वाती ओस सम लीजे पीसि दूध में घोड़ा दीजे ॥
नीको होय ताक जो करै ॥ साल होत्र या विधि अनुसरै

शिखा वर्त शूल का इलाज

कापूरा जो ज़र्द कराई ॥ निर्णय कर देवे जो पिवाई
हल्दी राई गुण सम लेय ॥ शिरका संग घोड़ा को देय
दिनहि नीको होय वनाय तुरत व्याधि वाको मिट जाय

मृत्यु शूल के लक्षण

दाना खाय न जल सो नेह नित प्रति सूखे वाको देह
हांफे भूमे गिर गिर पड़े ॥ ता को औषधि या विधि करै

औषधि

प्रथम बादाम एकते लेय। दूसरे आगे कम कर देय।

वहरि मलाई या विधि करै । जामे रोग अश्व को हरै ॥
हल्दी राई गुड सम लेय ॥ कूटि पीसि सिरका समदेय
तप्त नीर पीवन को दीजे । सप्त दिवस मह नीको लीजै
शीतल होय न एको गाढ़ौ । ताको रोग नित्त ही बाढै
मल वंतोने रंग को होय ॥ तेहि असाध्य लक्षण है सोय
ताको औषधि नहि उपचार । सालहोत्र भाखै निरधार ।

सन्निपात शूल के लक्षण और औषधि ॥

कांपै उछलै गिर गिर परै ॥ ताको औषधि या विध करै
अजवाइन बच राई लेय ॥ भूंजि फिटकरी नामहि देउ
सोंफ सुहागा हींग मंगाय । सिरका के संग देउ पिवाय
ता सिरका को डारै घीउ ॥ ताते सुस्त होइ नहिं जीउ
सप्त दिना जो औषधि करै । सत में शूल अश्व को हरै ॥

दूसरी विधि

सोरत ज्वर के शूल यह ताको औषधि एक
उपचारै लहै एक जो कष्ट न राखै एक

घोड़ा के अंग होय अमास । एरण लक्षण खाय न घास
उचके चौंकि धरनि पर गिरै । औषधि ताको या विधि करै
प्रथम सहजा हींग मिलाय । अंजवाय कंचन रिपु लाय
वाय विडंग सोंठि अरु सर सों । अधूरा करि चहुंधा करसों

दवा खिलाने की विधि

सोंठि अजवायन वाय विडंग । वजन बराबर एक मसंग

काढ़ौ अष्टविषेषौ देउ सात दिवस महं नौको लेउ
बरस बरस प्रति दीजिये गेहूं के रसवाय
रोगी अश्वन हेत है नौको यहौ उपाय
विना चराई लोह्न लेय ॥ जाय विदिवन जतन करेय
तौ घोड़ा की ह्वैहै हानि ॥ साल होत्र कहि दीजे मानि

अथ लोह्न हरण विधि

लोह्न लीजै अश्व को जा को है विष वेल
जाय विन्दु को पुष्ट है ता दिन दीजे मेल
जा घोड़ा को लोह्न कढ़ै ॥ ताते बीस गुनो नित बढ़ै ॥
लालच मोटे को मति करौ सेर सवैया लोह्न हरौ ॥
रोग न होय रहहि चालाक जो लोह्न लीजै ना पाक ॥
नर घोड़ा एक गति साल होत्र कहि भाष
ताके लक्षण भेद सब अंग २ प्रति भाष
नर नारी तेहि भोग संयोग ताके वाके बढ़ै न रोग ॥
ताके गुन लोह्न जो हरै ॥ घोड़ा बन्द रहै अरु चरै।
जो कस्बी धामहि पहिचानै लोह्न लै इन राखौ ज्वानै
विन जानै छेदहि नस कोइ कत्ल करौ करता के सोय
ख़ुश रंग शहर यवट रंग होइ हफ़ते दामा जानिये सोय
ऐसौ तेरहै धामहि जानि जो जाहौ ताहौ सों मानि
मारग को जेते गुन कहौ ॥ कस्बी लोह्न तैसे कह्यौ
नसनी रहै हैनै तनै जोय जो डोरै रोगन को खोय

नरको जो पर हेज़ है हय को सोई जान
लोहू लीजै तास को होय न जीको ज्यान

घोड़े के अमास सोथ का इलाज

जो घोड़ा को सोथ पकड़ै ग्रीवा कंठ अरु तन जकड़ै ॥
ताको प्रथम करै उपचार सें को ग्वारि सों सेंधो डारि
ता पीछे यह सेकन करै ॥ सकल व्याधि घोड़ा को हरै

अजवायन अज मोद ले हींग मोठि सव लेउ
काली मिलय कर लेप तुर्त वहीं कर देउ ॥

सो० जव सोथा मिटि जाय रुखी गर्दन होय जव
कीजैयही उपाय रग छाती की खोलिये

खून बंद होने को औषधि

घोड़ा की नकसीर जो फूटै चहुं ओर में धारा छूटै ॥
के लोहू कै पानी गिरै ॥ ताकी औषधि या विधि करै
सौंफ़ धनिया जीरा मंगवाई सोंठि सहित दीजे पिसवाई
भाल अस्था को लेपन कीजे नास ताहि या विधि सो दीजे
संग ऊंट के लेंड़ा लीजे ॥ ताको अर्क छानि कर कीजे
तिन को गऊ घीउ मंगवाई दमड़ी भरि सेंधो मिलवाई
नास देय घोड़ा को जभी ॥ श्रोणित वंद होय गो तभी

सो० कुट कुट के तार तारि अग्नि सों धूप देय ॥
औषधि करहु विचार रोग हरण संशय नहीं

इति वन्द चौपाई

प्रथम सेक माथे पर करै हल्दी पानी सो अनुसरै
ता पीछे यह लेप कराय सोंठि सुहागा पीपल लाय
पीसि कूटि करि लेपन करै सकल रोग घोड़ा को हरै

पेशाब बन्द की औषधि

मूत्र रोग घोड़ा के होय ताको जतन करै सब कोय
पीपल सोंठि देहु पिसवाय नरा मध्य वाती चलवाय
रंचक नोन मिर्च पिसवाय दोउ करण घोड़ा के नाय।
छूटहिं मूत्र धार अधिकार मेटहिं वाके सकल विकार
देवे को यह तीन हैं मूली अमली पा
न को कोरे के बीज हैं याते होइ न हानि

लीद बंद का इलाज

राई मठा देहु पिस वाइ के कोरी मर्थ मठा के लाय
दधि खारी सो देहि खवाय छूटै अस्थ रोग वहि जाय

दूसरी विधि

हींग टका भरि लाइके सेर दोय लै घीउ
दीवा करिके दीजिये कहिं घोड़ा सो पीउ

कृमिरोगहरणइलाज

जो घोड़ा के पेट मे कृमी बहुत ह्वै जायं
गिरे पटेरे पेट सों दाना घास न खाय
राई हल्दी काय फल आन प्रात होत दीजे नित खान
तो को होय व्याधि सब हरै शाल होत्र या विधि उच्चरै॥

प्रमेह का इलाज

त्रिफला दीजै खांड सो सात रोजउठिप्रात
मूत्र रोग नासन करै मिटै रोग उत्पात ॥

दूसरी विधि

राल खांड द्वै सेर भरि घोड़हि देउ खवाय
वीर्य बन्द ह्वै जायगो जो यह करै उपाय

अथ षट्ऋतु का उपचार

ऋतु वसंत और मासरा चैत्र और वैसाख
दाना दीजो चनेका मन मिश्री अरु दाख
ग्रीष्म जेठ असाढ है महा अग्नि को मूल
सतुवा दीजे जवन को बनो रहै जो फूल
सावन भादों भेद नहि यह वर्षा ऋतु जा
न गेहूं को गजरा भलो घीउ खांड में सान
आश्विन कार्तिक सर्द ऋतु मोठ मूंग अधिकात
काचीदाना दीजिये हल्दी गुड़ नित प्रात।
मार्ग पूष हेमंत है घीउ महेला आन ॥
मिर्च साथ सो दीजिये होय अश्व बलवान
शिशिर माघ फागुन कहे दाना दीजै मोठ
गुड़के साथ खवाइये मिर्च पीपली सोंठ
त्रिफला दीजै खांड जो ग्रीषम और वसंत
त्रिकुटा दीजे गुड़ सहित शरद और हेमंत

हल्दी वर्षा शिशिर मे घोड़हि दीजे नित्त
नित्त नेवाला दोजिये रोग न करै नित्त
मुरब्बा परहि वाली करै जो घोड़ा को देय
वात बचावे अंग को सकल रोग हरि लेय

अथ वैजा मोत्त रा नासन विधि ॥ ॥

तारा साखो लाय करि सोना साखो साथ
नींबू का रस खरल करि मल्हम कीजे तात
पछना दे लेपन करै बांध चना तेहि देहिं
अजा मूत्र सों भिजै कर तत्छिन नीको लेह
सप्त दिवस पीछे खुलै भीजत रहै हमेश
ता पीछे जव खोलिये औषधि कीजे वेश

अथ इलाज

डरपी सेंधो गोघृत मल्हम सो करि लेय
माखी चाय चवाय करि चापरि तेहि देय

अथ सिंगरफ़ गुटिका

कर्ष एक सुमंल सों लेउ खरल करवाय
देउ टंक भरि सवै लै औषधि दीजे ढार
सिंगरफ़ मिर्च सुहागा लीजै गूगुल मिर्च ताहि में दीजै ॥
अदरक रस में खरल कराय गोली चना प्रमाण धराइ ॥
सर्व रोग को दीजे कह्यो ॥ साल होत्र गति मति में लह्यो

दूसरी विधि

अमलो और कचनार को नीम पत्र सम वाय
सिरका में औटाय सब तापर देउ चढाय
उल हत बांधै सात दिन बहुरि नवेजा होय
नित नेवाला दीजिये जो पहिचानै कोय
टेसू सुमन उसेय करि नित्त चढावै जोय
उल हत ही विधि करै वाद बढै नहि रोग

घोड़ा को रंग पल्टो चाहै ॥ कै चाहै कै चीन्हन आहै ॥
वाल सफ़ेद करै या रीती ॥ जो पावै मन महं पर तीती
प्रथम वाल वे दूर करावै ॥ तापर साबुन घिसघिस लावै
कूष मंड रस धोवै ताहि बहुरि फटकरी देवै जाहि
खरल करै सावन रस माहं मल्हम करि राखे तेहि छांहं
लेपन कीजे फिरि २ ताहि या विधि सो भावै नित वाहि
एक मास में होय सफ़ेद ॥ विरले जानै ताको भेद ॥

अथ सांप काटे की विधि

दाना घास दुहूं पर हेरै ॥ लोद करै खुल कै वह चैरै

उपाय

गरुड़ मंत्र पढवाय के निर्विस कीजे ता-
हि औषधि ताको सात दिन दीजे तायं मंगाय

औषधि

काना दूरी अर्क जड़ मिर्चै सम लेलेय
संग नीर में पीस के प्रात सांझ नित देय

हय नर को जो दीजिये लीजे तुरत जिवाय
पुनि जो कीजे यथावत विष विष धर वहि जाय
अश्व म पाला को जो खाय । घाम मध्य जो रहै छुपाय
ताके लक्षण कहौं वषान । जो नर को आवे पहिचान
वारि बदल मुख ते अति छूटै । ग्रीवा सूजि अंग तेहि फूटै
बिछुआ टंक सो पांच ले दीजे मिरचैं घीउ
घर घीउ में वाटिकै घोड़हि देय पिवाय
ता पीछे यह औषधि करै ॥ तुरत व्याध घोड़ा की हरै
चौराई जड़ अंड मिलाय ॥ आक मूल तामस ले जाय
मिर्च कसौंदी अदरक पान । सब को करहु एक पर मान
संग घीउ के देउ खवाय ॥ विष धर को विष निश्चै जाय

घोड़े की सुजुम्मा फुल्ली काटने का उपाय ॥ ५

अर्क दूध फिटकरी सो या विधि आनिये
बहरि दूध मिलवाय कनक में सानिये
आनि अग्नि में धरहिं जलावै तासु को
सुरमा करि दृग देय नाम सबरे रोग को

अथ दूसरी विधि

मानस की खुपड़ी तनक अग्नि मध्य लेवार
खोल फिटकरी मिले कर सुरमा करै विचार
दूध खोल के डालिये सात दिवस लो नित
फुल्ली सु जुम्मा काटि है सांचो मानो मित्र

खालदार घोड़े
का स्वरूप जिस
घोड़े पर स्याह ख़
न हो उस को वह
न बुरा जानो

कुत्ते की जीभ वाले घोड़े की सूरत

मलदांत घोड़ा

फ़लदार घोड़ा

मिकाल घोड़ा बुरा होता है

कीलकास्वरूप

गामचो केपेटमें कचरी
का निशान
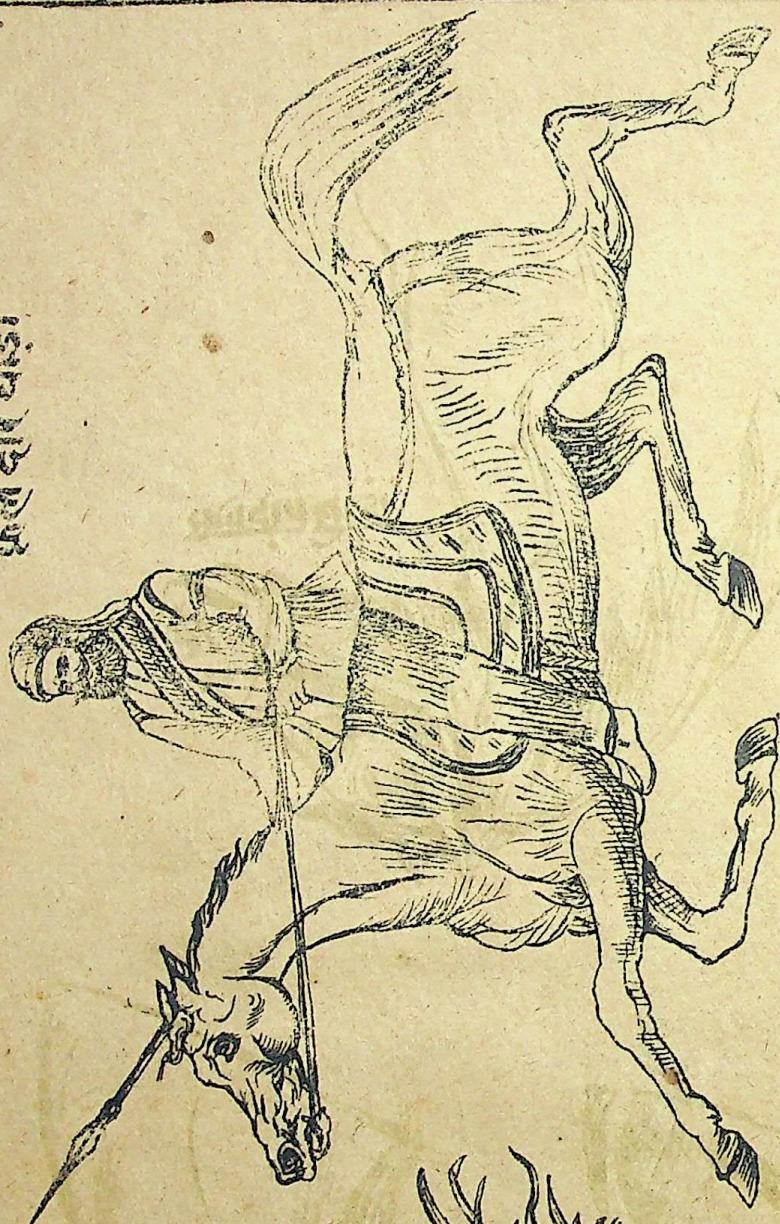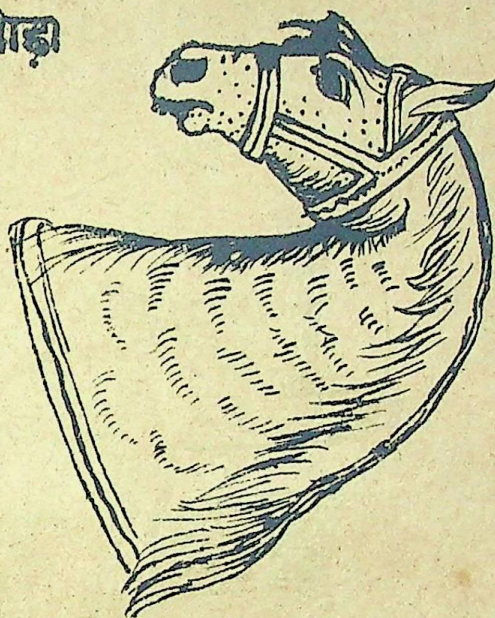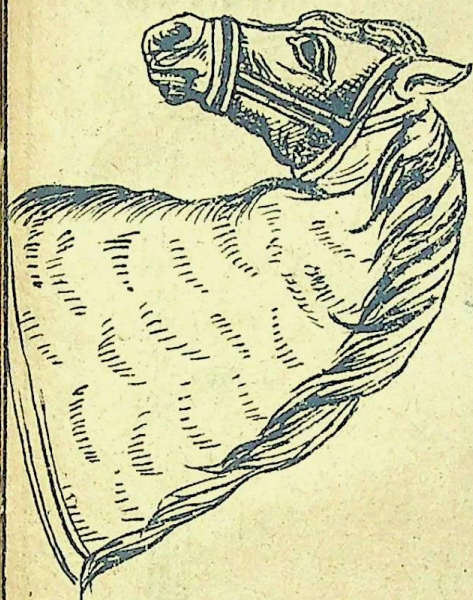
सुतरदंत घोड़ा
पोपले घोड़े
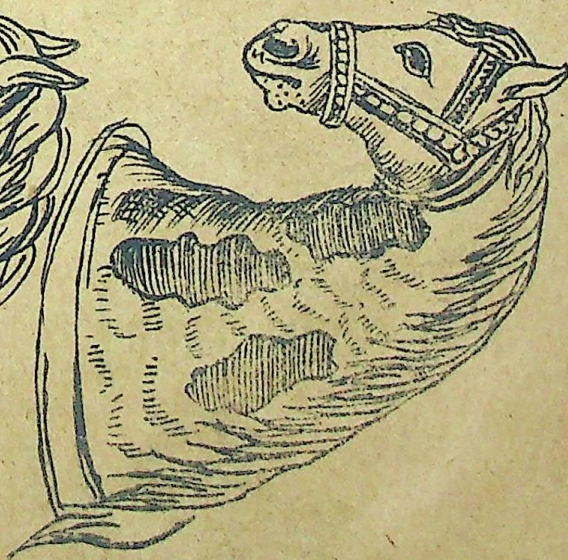
जो एक पैर की सफ़ेदी दूसरे पैर
की सफ़ेदी का जवाब न रखती हो
तो बुरा है और उस घोड़े का ए
तबार नहीं
अर्जुन घोड़ा बुरा है
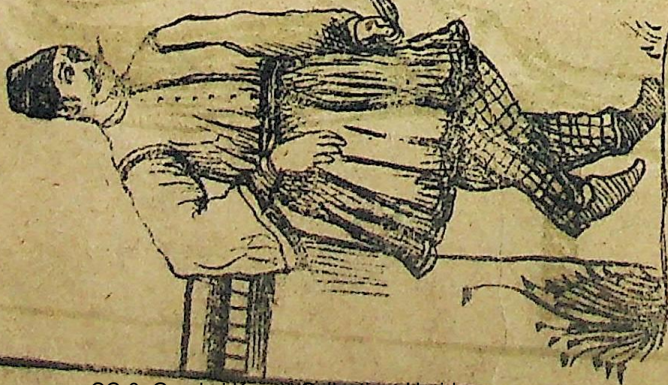
रकाब को सांपन का मुंह सवार को तरफ़ है
जवलभौरो

घोड़े के मुहं पर सब्ज़े का निशान

देरमनी
पुत्रभंग
भौंरी

जिस घोड़े के हाथ में फ़ल हैं कमबख़्त है

चपदस्त घोड़ा उस्ताद को बुरा होता है

अबलखभौंरी
आंसूदार
चंद्रसूर्यकीभौंरी

अमलीया घोड़े का सफ़ेद हो उस को अर्जुन घोड़ा कहते हैं ॥

शानदार घोड़े की पहिचान

कानेघोड़े

गीनवान नारि घोड़े

ज़रदेका स्वरूप

यहभीमुतलयकुमहै
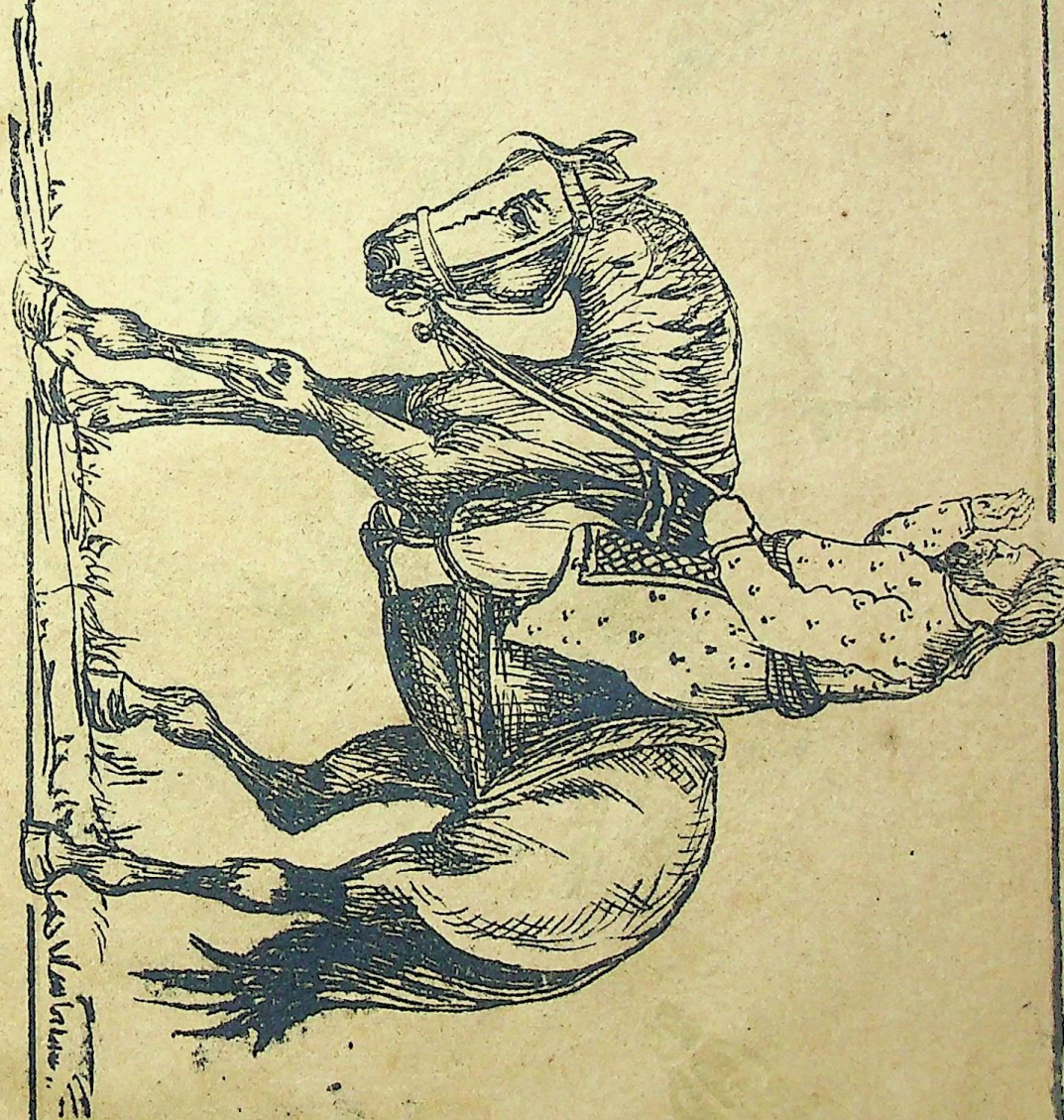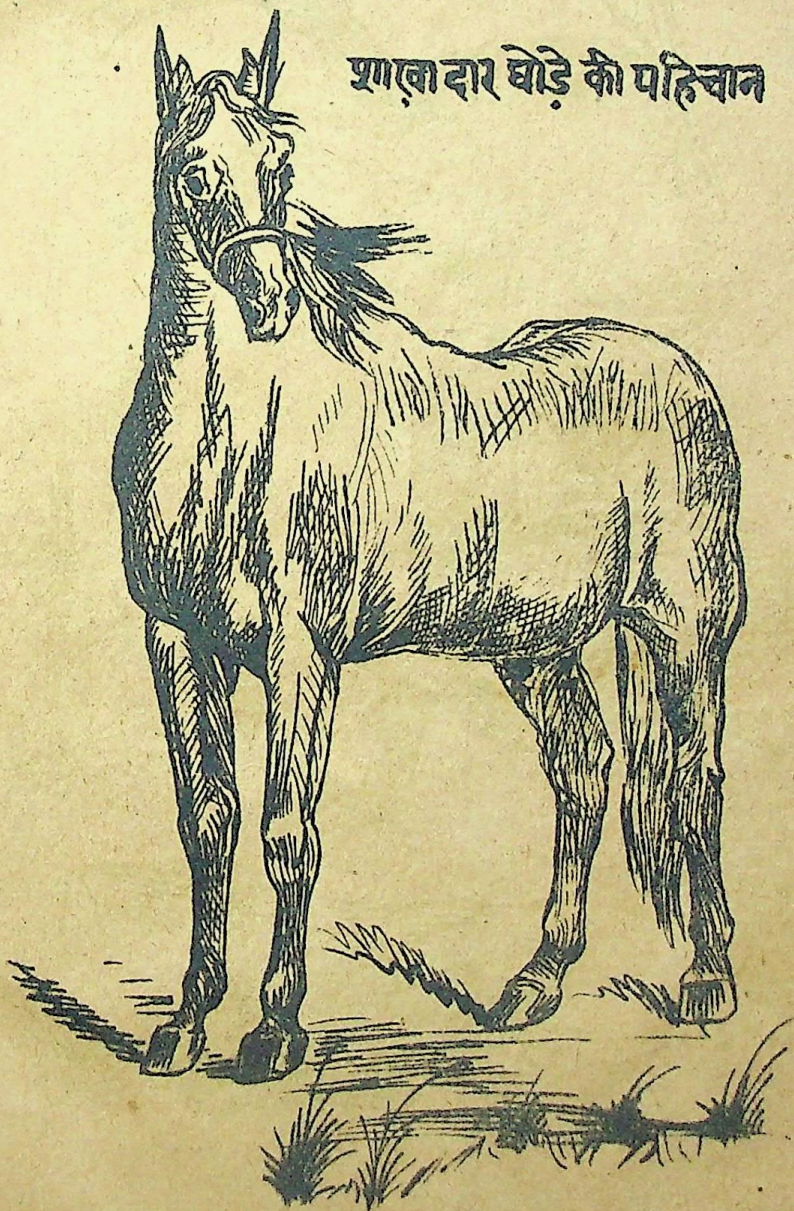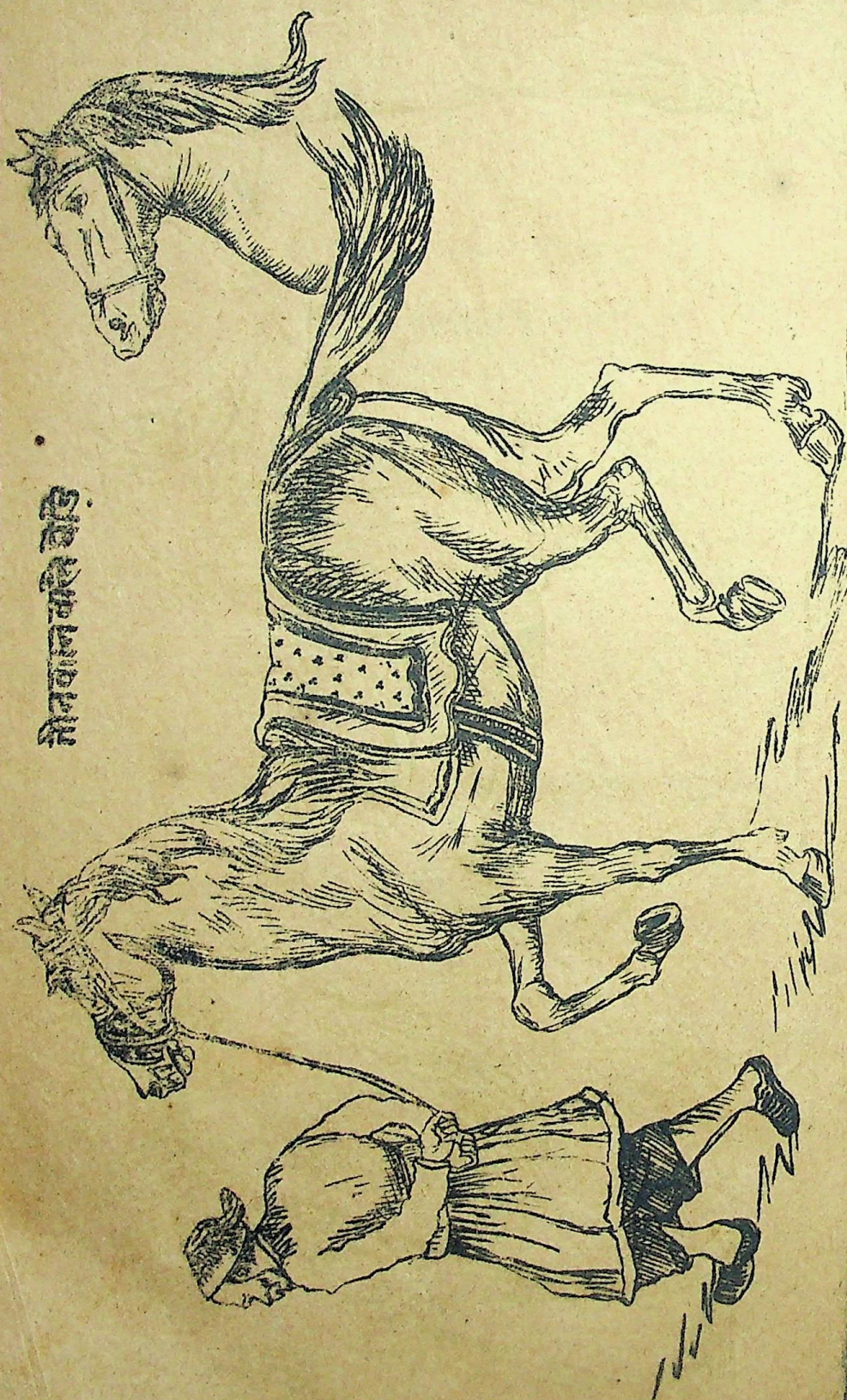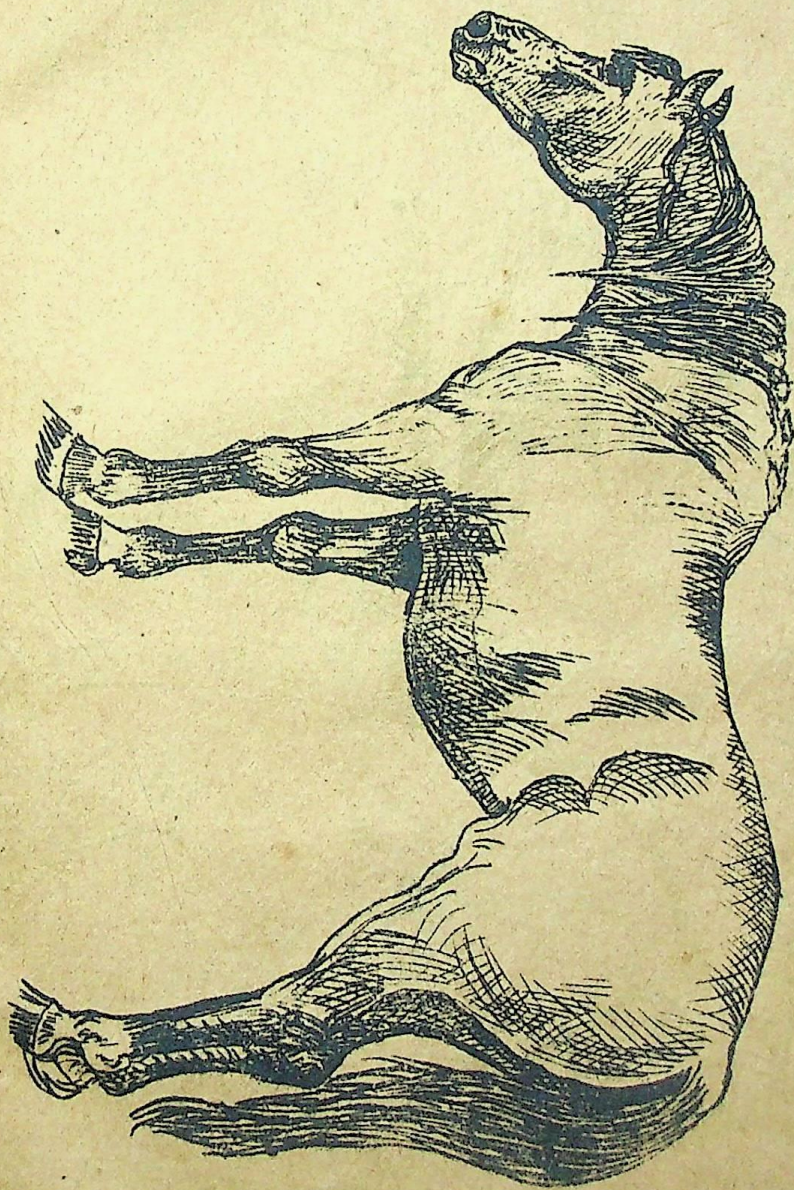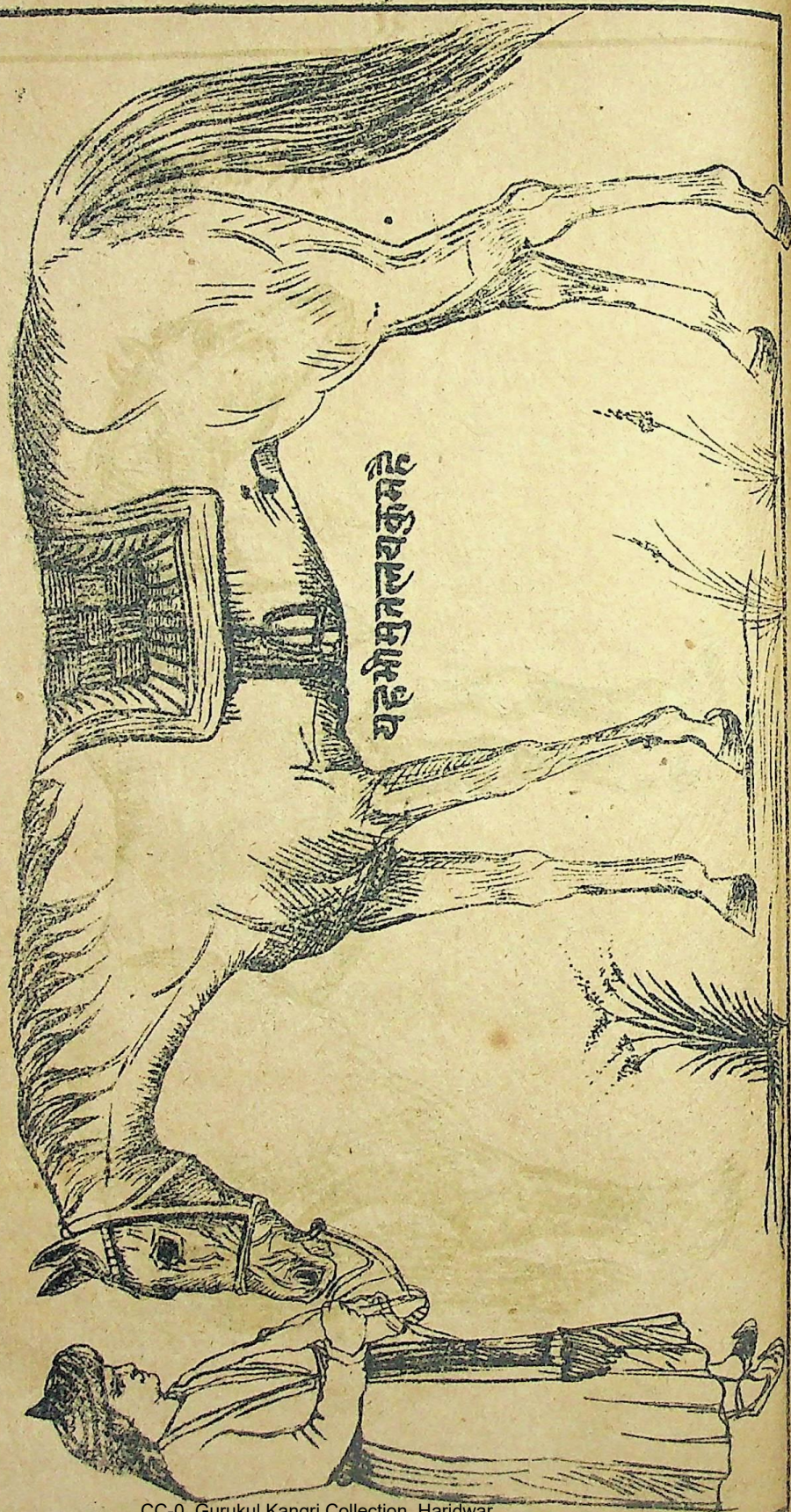
पदम घोड़े की सवा का स्वरूप उस को ईरानी मुग़ल बुरा कहते हैं

तीन कान वाला घोड़ा

जिस घोड़े का शाना निकल आताहै ख़राबहै औरऐब है

इस तसवीर में सिवाय एक मौरी देवमनि के वाक़ी सब नाक़िस हैं और बुरी है

गावदुमो घोड़ा

शुभल देकन घोड़े का स्वरूप

यह रंग असील है
मुश्की सूरत
अर्बी का निशान

जिस घोड़े के असत अर्थात लिंग के मुहर न हो उस को अरहा कहते है

जिस घोड़े के बाये पैर पर सफ़ेदी हो उसका सुनला कुलय मार कहते हैं

पेट फूलने की औषधि

उदर रोग घोड़ा को बंद । औषधि कीजे चेतन चंद ॥
राई मठा में सौंफ मिलाय । तुरत दीजिये ताहि खवाय
सोंठ मिर्च यह गोली बांध । मूल द्वार तह देउ खवाय
टहलावे फेरे बहु बार । लींद करे वाही उपचार

पेशाब बन्द की औषधि

मिर्च कचूरे साबन आनि । खरल करे पानी में सान ॥
वाती देइ नरा में कोइ ॥ बहु पेशाब करिहगो सोय

कब्ज बंद होजाने व जोभ सूख जाने का इलाज

संधो मिर्च दोउन को लाय ॥ करी द्वार सम खरल कराय
गोली करी मुख मेले तास । ता पीछे यह देउ खवाय ॥

लेप

पीपल पीपला मूल सोंठ कुलींजन बचै ले
सबको कीजे चूर कटुक तेल में खरल करी
मल्हम सा करि वाको लीजे । लेपन करि कपड़ा में दीजे
बांधे गले अश्व के कोय ॥ जो सेंके सो नीको होय ॥

वायु बन्द की औषधि

उदर अश्व के वायु जो बंद होय अधिकार
साल होत्र या विधि कहै याहू को उपचार
प्रथम सोंठि अजवायन लावै ॥ मैदा करि घृत में औटावै

मलैं उदर कोवा वकुवार । ता पीछे यह करहु विचार
सोंठ सुहागा सोचर भांग । सहजने के रस में गोली बांध
सकल व्याध चौरासी वाय शालहोत्र कहि सवही वाय
एक गोली आटे मे देउ ॥ सर्व रोग मारत हरि लेउ

अथ हड़वा जान अनासन विधि

उलहत हड़वा जवा जो यह जतन करै
शालहोत्र या विधि कहै दीरघ रोग हरै

चूना कली भटा में भरै । कपरौटी करि भूमें धरै ॥५
जव पी पक होय जरि जाय । तव वह भटा लेय पिसवाइ
नित उठि कै पायन में भरै । सो रस रोग छिनक में हरै

अथ रश चोका उपचार

हल्दी सोंठ सुहागा लीजे । अश्व थुंभ पर लेपन कीजे
कडुवा तेल मिलाय भरै । वह रस रोग को या विधि हरै

अथ घोडों की प्रकृति का विचार

शीतल गर्म स्वभाव ये अरु पुनि द्वंदज होय
शालहोत्र या विधि कहे जो पहिचानै कोय

कुमैत मुश्की और समन्द । गरम प्रकृति होवे सुनचंद
सुरखा सुरंग को हरो वोज । पड़ द्विज कहिये लखि के सोज
लीला और चीनी सव जार । शरद प्रकृति होवे वतार
वाकी रंग घोड़ा कहि जेते । अरुन है उत्पहैं तेते ॥
है मधान उन सव के पित्त । वात पित्त मिलि होय विचित्र

पहिचाने अंग अंग की रीति । करि औषधि याको परतीत
नाडी नैन वनाव हि देखि । प्रकृति स्वभाव सवहि कर रेख
औषधि करै रोग पहिचान । ताके हाथ न आवै हानि
घुरहा पाहे गोपी नाथ । कान कुञ्ज में होय सनाथ
तिन के सुत चारो दधि काई । इन्द्र जीत लक्ष्मण यदु राई
चौथे तारा चंद कहायो । जिह यह अश्व विनोद वनायो
हरिपद चित नाम की आसा । शाल होत्र वन्दे परकाशा
कुशल सिंह महा राज अनूपा चिरंजीव भूपन के भूपा ॥

सोरठा

यह ग्रंथ सुख सार चेतन चंद कह्यो तथा
लेउ सुधार विचार चेतन चंद कह्यो तथा

दोहा

संवत सोलह सौ अधिक वार चोगुने जान
ग्रंथ कह्यो कुशलेश हित रक्षक श्री भगवान
मास फाल्गुन शुक्ल पख द्वितिया शुभ तिथ नाम
चेतन चंद सुभाषियत गुरु को किया प्रनाम
तदस और आठ से इक्यावन पे सार ॥ ॥
फागुन शुक्ल त्रयोदशी लिषी वार बुध वार
अश्व विनोदी ग्रंथ यह साल होत्र सुर लाल
निश्चय करके लिख्यो है खोर नही में लाल

इति ॥

अथ घोड़े के ऐबों का बयान

चकावरी सुम की मूठा जान आधी कुमैत बेहड़ी न
र के सुम में यादि परै तो काफ़ गोरी जानिये पिछले पांव
की मोह पर होयहै तुम पुलक तो जानियो घोढ़ं कोन
स जवर पड़े तो मोहड़ा जानिये ऊपर जवर परै तो पोर
रो जानिये। बरसाती कमर वामनी पूंछ में होय तो स
वार गिर परै नामो अकरव में लालटीका होय कसेउ रं
य को होय सफ़ेदी माथे पर होय अंगूठा सो ढक जाय ता
सो सितार पेशानी कहते हैं तिलक टूटे तिसे तिलक तो
माथे पर एक भौंरी होय सिंगिनि और जो दो भौंरी हो
य तो मेढा सिंगिनि स्याह ताल दम्ब सरी आल में
एक भौंरी सो सांपिनि है भौंरी दोऊ लगसों बांधे म
टू पे भौंरी सो क्षत्र भंग चूतर की भौंरी खूंटा उपार
काब के बराबर होय सो रकाब पेट के नीचे भौंरी होय
सो गूंस अगले पाव में भौंरी होय सो खूंटा उपार छा
ती में भौंरी होय तो हदया वलि· जिस घोड़े की दुमटे
ढी टेढी रहे उसे कजदुमा जानो और इस के मस्तक
पर गाय का घी या रोगन कुंदज सफ़ेद न लगाया जाय
तो अंधा सा होजाता है और उस का एतनी तुरकी जाय
तो है कि बिलकुल अंधे की तरह राह चलता है इस लिये

एक दवा ऐसी लिखी जाती है जो घोड़ों को सुस्ती आदि के लिये बहुत मुफ़ीद है· दवा गोली ~ सुहागा विरियान गूगल हीरा हींग· अजवायन कूट सीरी ॥ नरकचूर काला विछुवा निर्विसी पीपलामूल सांचर नमक आध २ पाव असगंध अजवाइन खुरासानी असगंध गोरी सर सज्जी राई लोटन सज्जी अजमोद का मोला आध २ पाव वाय विडंग खाने का आध २ पाव इन सब को कूट छान कर सवा सेर उड़द का चून मिला कर सान कर पैसे पैसे भर की गोली बना के सुखा रक्खें बाद रातब के वक़्त गोली हर रोज़ खिलाया करै

दूसरी विधि

भिलावां और कुचला सवा सवा पाव रोग़न कुंजद स्याह डेढ़ पाव खूब भून कर निकाल लेवे आमा हल्दी पाव भर कुटकी पीपला मूल हींग गूगल भुना सुहागा आध २ पाव सब को मिलाय पीस लेवे और ढाई सेर आक के पत्ते बारीक कर के और सेर भर कुंजद स्याह इन तीनों को खूब भूनैं जिस्से कि पानी जल जावे उस सफ़ूफ़ को मिला रक्खे दो पैसे भर को आध पाव गुड़ में मिला कर खवाया करै इस के सेवन से घोड़े के मिज़ाज की सब तरह की बीमारियां रफै हो जाती हैं ॥ - ॥ ॥

दोद गल खन मूशल आध सेर वाहृद १ छटांक गुड़ तीन पांव इन सब को मिलाय कूट पीस कर मंज़िल पर खिलाया करै तो थकान नहीं मानै और हाथी का मउमर को हर महीने में पंद्रह रोज़ उस की इसलाह मिज़ाज के रखता है और हर तरह की ख़ूबियां नमूदार करता है॰ ॥

इति साल होत्र संपूर्णम्

अब मनुष्यों के अजीर्ण मिटाने वाले चंद नुसख़े लिखे जाते हैं ०॥

हड़ की छाल टंक २ को महीन पीस १० टंक जल के साथ हर रोज़ लेय तो आमा जीर्ण जाय भूख बढ़ै १ अथवा हड़ की छाल व सेंधा नोन का सेवन रोज़ करै अजीर्ण ज्वर जाय भूख बढ़ै २ अथवा चित्रक अजमोद सेंधा नोन सोंठ काली मिर्च बराबर २ ले महीन पीस टंक दो गाय की छाछ के साथ १५ दिन लेय तो भूख बहुत बढ़ै मंदाग्नि और पांडु रोग ववासीर जाय ॥३॥ आमा जीर्ण होय तो वच लवण के सेवन और वमन से जाय। विदग्ध अजीर्ण होय तो लंघन से जाय ॥४॥ सोंठ काली मिर्च पीपल अजमोद सेंधानोन दोनो जीरे॰ भुनी हींग ॥

येसब बराबर ले चूर्ण करै । इस चूर्ण को टंक १या २ भर खिचडी में गुड़ मिलाय प्रथम ग्रास के साथ रोजी ना खाय तो अजीर्ण कभी न होय और भूख बढे-गोला फिया दूर होय यह हिंगाष्टक चूर्ण है॥

अथरा- जवाखार सज्जी चित्रक पांचों नोन इलायची पत्रज भारंगी सुनी हींग पोहकरमूल कचूर निसोत मोथा इन्द्रजो डासल्या अमलवेत जीरा आमला हड़ की छाल अजवाइन पीपल तिलों का तेल सहजने की खार ख़ैरसार यह सब बराबर ले महीन पीस छानले पी छे बिजोर के रस की पुट दे सिद्ध करले इस चूर्ण मे से टं क २ हर रोज़ जल के साथ ले तो भूख बहुत लगे और अजीर्ण गोला उदर व्याध और अष्ट वृद्धि वात आदि स व रोगों को यह अग्निमुख चूरण दूर करै है॥

इति०

Sitaram Contractor
Jubbulpore

Ramprasad Contractor
Jubbulpore

BAREILAL